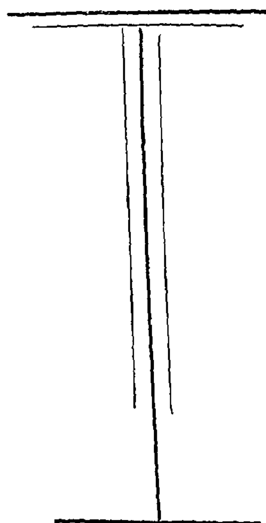
स्तवनावली



रचनाकार

स्वर्गीय महासती श्री जडावकंवरजी महाराज



प्रकाशक :

महिला मण्डल, जयपुर

मूल्य : सवा रुपया

प्रकाशक
महिला मण्डल
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ,
बारह गनगोर का रास्ता, जयपुर ।

रचनाकार
स्वर्गीय महासती श्री जडावकंवरजी महाराज

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक :
जिनवाणी प्रिंटर्स
कोटे वालों का रास्ता,
जयपुर

महासती जडावजी पर एक नजर

भूतपूर्व रत्नचन्द्र सम्प्रदाय में अनेकों प्रभाव शालिनी सतियां हुई हैं। जिन में सती रंभा जी प्रमुख हैं, उनकी कतिपय शिष्याओं में जड़ावजी का एक महत्व पूर्ण स्थान है। आप सेठों की रीयां में ब्याही गयी थीं, जहां बाल्य काल में ही पति के देहान्त हो जाने से, आपका संसार सम्बन्ध टूट गया। वि० सं० १९२२ में २४ वर्ष की अवस्था में आपने संयम ग्रहण किया। आपका जन्म १८९८ में हुआ था।

आपका शारीरिक कद लम्बा, वर्ण गौर और व्यक्तित्व प्रभावशाली एवं आकर्षक था। अध्ययन एवं चिन्तन मनन भी गहनतम था। आप में सहज कवित्व शक्ति थी जो नर जीवन में दुर्लभ कही गयी है। इस तरह एक विदुषी महासती के सभी गुण आप में मौजूद थे।

आपने विभिन्न राग रागिनियों एवं पदों की रचना की। ये रचनाएं उपदेशात्मक, स्तवनात्मक कथात्मक एवं आध्यात्मिक भागों में बांटी जा सकती हैं। "जैन समाचार" के सम्पादक श्री वाड़ीलाल मोतीलाल शाह की देख रेख में "जैन स्तवनावली" नाम से आपकी कुछ रचनाएं प्रकाशित हुई थीं जिसकी पृष्ठ संख्या २०० तथा पद संख्या १५४ है। इसमें १९३२ से १९६६ तक की रचनाएं संकलित हैं।

आपके विहार क्षेत्र मुख्यत: जोधपुर, बीकानेर, अजमेर और जयपुर रहे। भोपालगढ़ में अपनी गुरुणी के स्वर्गवास के पश्चात् सं० १९५० में आप जयपुर पधारीं और नेत्र की शक्ति क्षीण हो जाने से मोतीसिंह भोमिया के रास्ते पर सेठ सोभागमलजी ढ़ड्ढा के मकान में २२ वर्ष तक स्थिरवास के रूप में रहीं। वहां क्रमशः तपस्वी श्री बालचन्दजी म०, आचार्य श्री विनयचन्दजी म० शास्त्र विशारद मुनि श्री चंदनमलजी म० पं० मुनि श्री देवीलालजी म० पूज्य

श्री श्रीलालजी म० तथा श्री माधव मुनिजी म० बाबाजी पूर्णमलजी म० और पंजाब केशरी श्री मयारामजी म० आदि संतवृन्द की सेवा का लाभ आपको मिलता रहा।

आप प्रायः ग्रीष्मकाल में दाह ज्वर की प्रबल वेदना से पीड़ित हो जाती थी। वि० सं० १९७१ में आपकी वेदना प्रबलतम हो गई। वि० सं० १९७२ के ज्येष्ठ कृष्ण १४ में दिनके २ बजे आपने अपनी जीवन लीला समाप्त की। आपका संयमकाल ५० वर्षों का था तथा आपकी कुल आयु ७४ वर्ष की थी। आपकी रचनाओं के रसास्वादन के लिए प्रकाशित 'जैन स्तवनावली' द्रष्टव्य है। अप्रकाशित रचनाओं के बारे में तो अभी कुछ कहना कठिन है, जब तक कि वे प्रकाश-पथ पर नहीं आ जाती। फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि जड़ावजी जैन कवयियों में आदर्श एवं मूर्धन्य थीं। आपका जीवन साधन और भावना का संगम-स्थल था, जहां मनको सच्ची शान्ति और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

दीक्षा दिवस सं २०२०,
माह सुद २
लाल भवन, जयपुर।

मुनि लक्ष्मी चन्द्रजी महाराज



गुरुणी तथा शिष्या परम्परा

१ श्री रुक्माजी महाराज



२ श्री चन्दूजी म० स्वर्गवास वि० १९००



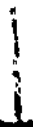
३ श्री रामकुंवरजी म० स्व० वि० १९२०



४ श्री रम्भाजी म० जन्म वि० १८७७, दीक्षा १८९९, स्व० १९४९



जड़ावजी म० | छोगाजी म० | पानेकुंवरजी म०



जतनकुंवरजी म० | तेजकुंवरजी म० (स्व० १९७५) | सिरेकंवरजी म० (स्व० १९७८) | सूरजकुंवरजी म०



केशरकंवरजी म० | राजकुंवरजी म० | सुगनकुंवरजी म० | हुलासकुंवरजी म० (दीक्षा १९६४, स्व० २०१९)



श्री सुवाजी महाराज (दीक्षा १९७६) | श्री मैनाजी महाराज (दीक्षा १९२१) | श्री फूलकुंवरजी महाराज (दीक्षा १९९४)

विषयानुक्रमणिका

सं २०२० का जयपुर का अभूत-पूर्व चातुर्मास

इस वर्ष महान् भाग्योदयसे श्रमण संघ के सरताज उपाध्याय १००८ हस्तीमलजी महाराजसा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या श्री बदनकंवरजी महाराज सा मधुर व्याख्यानी श्री लाड़कंवरजी म० परम विदुषी मधुर व्याख्यानी बाल ब्रह्मचारीणीजी श्री मैना सुन्दरीजी महाराजसा आदि ठाणा ६. का अभूत पूर्व चातुर्मास एवं निर्मला कुमारीजी की दीक्षा की खुशी के उपलक्ष में महिला मंडल ने जडावजी महाराजसा की प्राचीन संग्रहित ढाल चौपाई एवं भजनो को प्रकाशित कर स्तवनावली नामक पुस्तक के द्वारा आप के कर कमलों को स्नेह पूर्वक सुशोभित किया।

सुभाकांक्षी

मल्लि भगवती महिला मंडल

बारह गणगोर, जयपुर

ग्रंथ प्रारंभ

ॐ नमः॥ श्री वितरागायनमः ॥ श्रीपार्श्वनाथायनमः ॥ अथ श्री नवकार मंत्र लिख्यते ॥ णमोअरिहंताणं ॥ णमोसिद्धाणं ॥ णमोआयरियाणं ॥ णमोऊवज्झायाणं ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसोपंचणमोकारो- ॥ सव्व पावपणासणो॥ मंगलाणंच ॥ सव्वेसींग ॥ पढमंहवइमंगलं॥इति॥ श्री साधुजी महाराज श्री १००८ पूज्य रत्नचंद्रजी महाराज ॥ तस पाट पूज्य श्री हमीरमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री कजोड़ीमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री बीनेचंदजी महाराज ॥ ततप्रसादात् ॥ साध्वी श्री जड़ावकूंवरकृत । दुहा । कवित । छंद ॥ श्लोक कुंडलिया । सवैया । ढालां । चोढलियो । सप्तढालीयो । सलोको । लावणी । पद डोडीया ॥ उपदेसी ॥ श्रावक जगन्नाथ धारणा करी ।

श्री जैन धर्म उपदेशमाला

"जीवरै तू सील तणो कर संग, "यह राग,

जीवरै तूं जाप जपो नवकार॥ और मंत्र सब देखतांरै मंत्र बड़ो नवकार । भाव सहित भवीयण भजोरै चवदै पूरवरो सार ॥ जीवः १ ॥ और रंग पतंगनारै एह किर्मची रंग । गुण अनेक बखाणियारै । ग्यानी पांचमैं अंग ॥ जीव० २ ॥ सिवकवर समपत लैईरै ॥ सीलवंती सुरसाल ॥ सूधै मन समरण कीयोरै ॥ सर्प थइ फुल-माल ॥जी. ३॥ अगनी जल गज सींघनोरै ॥ भूत प्रेत भय जाए ॥ दुसमण से सज्जन हूवैरे । विष अमरत सम थाय॥४॥ रोग सोग भय आपदारै । दूर टलै ततकाल ॥ बिछड़िया वाला मिलेरै ॥ वंछत भोग रसाल ॥ जी.५ ॥ भणतां गुणतां सीखतारै । आतम उजल थाए । तूटै वसू कर्म बैगनारै । अजर अमर

सं २०२० का जयपुर का अभूत-पूर्व चातुर्मास

इस वर्ष महान् भाग्योदयसे श्रमण संघ के सरताज उपाध्याय १००८ हस्तीमलजी महाराजसा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या श्री बदनकंवरजी महाराज सा मधुर व्याख्यानी श्री लाड़कंवरजी म० परम विदुषी मधुर व्याख्यानी बाल ब्रह्मचारीणीजी श्री मैना सुन्दरीजी महाराजसा आदि ठाणा ६. का अभूत पूर्व चातुर्मास एवं निर्मला कुमारीजी की दीक्षा की खुशी के उपलक्ष में महिला मंडल ने जडावजी महाराजसा की प्राचीन संग्रहित ढाल चौपाई एवं भजनो को प्रकाशित कर स्तवनावली नामक पुस्तक के द्वारा आप के कर कमलों को स्नेह पूर्वक सुशोभित किया।

शुभाकांक्षी
मल्लि भगवती महिला मंडल
बारह गणगोर, जयपुर

ग्रंथ प्रारंभ

ॐ नमः॥ श्री वितरागायनमः ॥ श्रीपार्श्वनाथायनमः ॥ अथ श्री नवकार मंत्र लिख्यते ॥ णमोअरिहंताणं ॥ णमोसिद्धाणं ॥ णमोआयरियाणं ॥ णमोउवज्झायाणं ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ एसोपंचणमोकारो ॥ सव्व पावपणासणो॥ मंगलाणंच ॥ सव्वेसींग ॥ पढमंहवइमंगलं॥इति॥ श्री साधुजी महाराज श्री १००८ पूज्य रत्नचंद्रजी महाराज ॥ तस पाट पूज्य श्री हमीरमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री कजोड़ीमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री बीनेचंदजी महाराज ॥ .ततप्रसादात् ॥ साध्वी श्री जड़ावकूंवरकृत । दुहा । कवित । छंद ॥ श्लोक कुंडलिया । सवैया । ढालां । चोढलियो । सप्तढालीयो । सलोको । लावणी । पद डोडीया ॥ उपदेसी ॥ श्रावक जगन्नाथ धारणा करी ।

श्री जैन धर्म उपदेशमाला

"जीवरे तू सील तणो कर संग, "यह राग,

जीवरै तूं जाप जपो नवकार॥ और मंत्र सब देखतांरै मंत्र बड़ो नवकार। भाव सहित भवीयण भजोरै चवदै पूरवरो सार ॥ जीव॰ १ ॥ और रंग पतंगनारै एह किर्मची रंग। गुण अनेक बखाणियारै । ग्यानी पांचमें अंग ॥ जीव॰ २ ॥ सिवकंवर समपत लेईरै ॥ सीलवंती सुरसाल ॥ सूधै मन समरण कीयोरै ॥ सर्प थइ फुल-माल ॥जी. ३॥ अगनी जल गज सींघनोरै ॥ भूत प्रेत भय जाए ॥ दुसमण से सजन हूवैरे । विष अमरत सम थाय॥४॥ रोग सोग भय आपदारै । दूर टलै ततकाल ॥ बिछड़िया वाला मिलेरै ॥ वंछत भोग रसाल ॥ जी.५ ॥ भणतां गुणतां सीखतारै । आतम उजल थाए । तूटै वसूं कर्म भै गनारै । अजर अमर

पद पाए ।।जी. ६।। इण लोकै सुख संपदारै ।। परभव देव विमाण । उत्कृष्टी भगति करै तो । पावै पद निरवाण ।।जी.७।। इत्यादिक गुण छै गणारै । कया कठालग जाए । गावै निज मुख सरस्वतीरै ।। तोपिण पार न पाए ।। जी० ८ ।। १६ सै ६३ भलोरै ।। जैपर में वरसाल ।। जाप जपै जडावजीरै । कातिक दीपकसाल ।। जी. ६ ।। इति ।।

चोवीसी का २४ पद

दोहा ।। अरिहंत सिद्ध समरु सदा । आचारज उवज्झाय । गुण गाऊं जिनराजना । विघन हरो महाराज ।। १ ।। ढाल ।। रसीयाना गीतनीः ।। पद १ ।।अंतरजामी हो आद जिणंद तूं, तो सम अवर न कोय हो ।। सोभागी ।। तूं सिवदाता हो भिरातां जगतैमै दीज्यो दर्शण मोय हो । सो. । अं: २ ।। आकडीः मा मरुदेवा रो ओदर उपन्या । नाभि रायजीरा नंद हो । सो० । जुगल निवारण जननी तारैवा । प्रगट्या पूनम चंद हो । सो० । अं. २ ।। कंचनवरणी हो धनुष्य पांचसौ । दिप २ करती देह हो ।। सो. ।। लाखचौरासी रो पूरव आउखो । जांणै देखे तेह हो ।। सो० ।। अं. ३।। प्रथम परण्या हो पदमणि प्रेमसूं । प्रथम वैठा राज हो ।। सो. ।। एकसौ पुत्र दोए पुत्री भली । सार्यां आतम काज हो ।। सो. ।। अं. ४ ।। भोग तजीनै हो संजम आदर्यो । कीनो पर उपगार हो । सो. । आद करी जिन धर्म दीपावियो ।। तीरथ थाप्या चार हो० । सो. ।। अं. ।। ५ ।। वीस हजार हो मुनि मुगतै गया ।। समणी सैंस चालीस हो । सो.

केवल लेने हो कारज सीध कर्या । जग तारण जगदीस हो । सोभाः अंतरः ६ ॥ चोवीस अतिशय हो । वाणी ३५ से ॥ द्वादश गुण भरपूर हो । सो. । नित २ होज्यो हमारी दंणा । पोह उगंते सूर हो । सो. अंतरः ७ ॥ प्रथम राजा हो प्रथम मुनिवर । इणहीज भरत मोभार हो ॥सो.॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम केवली । खोल्या मुगत दवार हो ॥ सो. ॥ अंतरः ८ ॥ समत १९ सै हो । माहा सुध १३ नै । जैपुर सेपकाल हो ॥ सो. ॥ वे कर जोड़ी हो वंदै जडावजी । करज्यो हमारी सार हो ॥ सो. ॥ अंतर ९ ॥ इति ॥

॥ पद २ ॥

जंबूद्वीप रा भरतमें ॥ अजोध्या विख्यात॥ अजत नमो जित-सत्रु राय तुंमै पिता । विजियादे तुंम मात । अजः आंकडीः १ ॥ तीन ग्यान साथे लिया ॥ उदरवस्या नव मासै । जीत करी जननी तणी । नरपत दीस्या वासैः ॥ अजः २ ॥ जनम थयो जिनराजनो । अजतै दीयो तहुं नांमै ॥ अ. ॥ भोग तजी संजमै लियो । पोहोत्या अविचल ठांमै ॥ अजः ३ ॥ सुखदाइ साथे हुवा । लारै रया दुखदाए । अ. ॥ धर्मीनै धन सूंपियो । पापी दिया छिटकाय ॥ अजः ४ ॥ तुंम सरीखा मोए टालसी । तो कुंण तारणहार ॥ अ. ॥ विरद विचारी आपरो । मारी वेगीज्योसार ॥ ॥ अ. ५ ॥ कै म्हलायत सांपडी कै मुज करम कठोर । अ. हिवडा ज्यो अवसर नहीं । तो राखीज्यो थोडीसी ठोर ॥ अ. ६ ॥ भविएछूं अथवा नहीं । सो तुम देवो वताय ॥ अ. धीरज धर करणी करुं । मनको भ्रम मिटाय ॥ अ. ७ ॥ तीरथंकर हीवडा

नहीं । इण दुषमी आरा मांय ॥ अ. अतिसै नाणी छे नही । मैं किणनै पूछू जाय ॥ अ. ८ ॥ १९ सै बरसे ५३ नै ॥ वद पख फागण मास ॥ अ. ॥ जैपुर मांए जडावजी ॥ एम करै अरदास ॥ ॥ अज ॥ ९ ॥

पद ३ ॥ राग पिचकारी नी

रे जिन संभव सांचो ॥ वा प्रभूकूं अब जांचोरै ॥ जी. आ. १ ॥ लेवो सरण मरण नहीं आवै किम नट थइने नाचोरे ॥ जि. २ ॥ नरप जितारथ । सैंन्या राणी । तस सुत चरण चित राचोरै ॥ जि. ३ ॥ इंद्र जालरा ख्याल जगतमै ॥ ते किम जाणयो सांचोरै ॥जि. ४ ॥ अलप दिनाकी है जिनग्यांनी ॥ क्याने करमरस पाचोरै ॥ जि. ५ ॥ सब स्वारथ के न्याती गोती ॥ मोए ममत मत माचोरै ॥ जि० ६ ॥ असी जाण आंण मन समता छोड़ कूटंमको लांचोरै ॥ जि. ७ ॥ तज अग्यान नैत्रसूं ॥ करम कागद तुम वांचोरै ॥ जि. ८ ॥ अब ही चेत देत गरु हेला ॥ जांण जगत सुख काचोरै ॥ जि. ९ ॥ ५३ नै साल जडाव जैपुर में । प्रभूजी मुज कर वांचोरै ॥ जि. १० ॥ इति ॥

पद ४ ॥ लावणी

धन ४ जंबूकवरजी जोवन में समता । नगरी अजोध्या भली विराजै । कंचन कोटकी ओट सही । सुंदर मंदिर बाग बावड़ी । चौरासी बाजार कही ॥ सम्बर राजा इदकदीवाजा ॥ सिधारथ पटनार भइ । श्री अभिनंदण नाथ निरंजण । भव दुख भंजण आप सही ॥ आकडी. १ ॥ तप्तं कूंखै तुम आण

उपन्या तीन ग्यान ले लार सही ॥ चउदे सूपना रजनी अंतै देखी जननी हरष भई ॥ तेड़ाया पंडित परभाते ॥ सुपन अर्थ सब बात कही ॥ श्री. २ ॥ तुम कुल मंडण अरिकुल खंडण ॥ अष्ट कर्मकूं जीत सही ॥ राज काज कर संजम लेसी ॥ डेरा देसी मुगत मई ॥ सुण सुख पाया बोत बधाया ॥ दान मान दे साख दई ॥ श्री. ३ ॥ गरभ अवद पूरा कर जन्मा ॥ सुभ वेला शुभ वार सही ॥ चोपठ इंद्र छपन कुंवारी ॥ हिल मिल मंगल गाय रही ॥ पांच रुंपकर मेरु ऊपर ॥ जिगमिग जोती लाग रही ॥ श्री. ४ ॥ बाल प्याल कर जोबन वयमें, परण्या पदमण नार सही ॥ राज पाट विलसी जग लीला, भोग रोग सम जांण लई ॥ कर डिडताइ रीध छीटकाई ॥ एक वरस लग दान दई ॥ श्री.५॥ चोथै ग्यान लियो जब संजम ॥ प्रम नरम होए करम दई ॥ केवल ग्यान ने केवल दर्शण ॥ लोकालोक प्रकास भई ॥ तीरथ थाप्या कर्मने काप्या ॥ जन्म जरा कोई मरण नहीं ॥ श्री. ६ ॥ ३४ स अतिशय पेंतीस वाणी तुम सम नाणी अवर नहीं । संशय छेद कियो चित निरमल । समकित जोत प्रकास भई । केई अनारी पार उतारी कारज सारी मुगत्त लई ॥ श्री. ७ ॥ उपगार तार निज आतम ॥ साध साधवी लार लइ मुगत्त पधार्या कारज सार्या । अजर अमर पद थान सही । तीन लोक के मस्तक ऊपर । जोत में जोत प्रकास भई ॥ श्री. ८ ॥ समत १६ से बरस ५३ नै । । प्रभू महिमा गुण पार नहीं ॥ पिण लवलेस देस जैपुर में ॥ जोड लावणी जड़ाव कइ । फागण बद १२ स रविवारै । दर्शन दीजो आप सही ॥ श्री. ८ ॥

पद ॥ ५ ॥ देसी सहेल्यांए आंबो मोडीयो

श्री सुमत जिनेसर वंदीए। कर जोड़ी हो नीचो कर सीस कै- विघन टलै समपत मिलै। सुखसाता हो पामै सूं जगीस कै ॥ सु. १ ॥ आंकड़ी ॥ कुसलपुरी नगरी भली तिहां सोभै हो मेघ- रथ राजान कै। आंण अखंडत तेहनी। प्रजा पालै हो। निज पूत्र मान कै ॥ सू. २ ॥ तस राणी मंगलावती, जिन जायो हो त्रिलोकी नाथ कै। सुरनर नित पाए पड़ै। अंग मोड़ी हो जोड़ी दोए हाथ कै ॥ सू. ३ ॥ दिन उगै हरष वधावणा ज्यारै सायकहो। श्री सुमत जिणंदके। दूजा देव मनावेतां। किम भटको हो मूर्ख मतिमंद कै ॥ सू. ४ ॥ आगै कदे देख्या नहीं। जो देख्यां तो नहीं पायो मर्म कै ॥ सुगुरुसे डरतो रयो कुगुरु घाल्यो हो। मिथ्यात्वरो भ्रम कै ॥ सू. ५ ॥ काल अनंता भटकतां ॥ अबकै मिलिया हो। तूं साचो देव कै। चर्ण समीपे राखज्यो। कर जोड़ी हो सारुं नीतसेव कै ॥सू. ६॥ जगतना देव डरावणा। केइ बैठा हो स्त्री ले संग कै ॥ शस्त्र विविध प्रकारना। रुंठा टूंठा हो कर रंग विरंग कै ॥ सू. ७ ॥ जोग मुद्रा प्रभू आपरी। भवि पामै हो देख्या वैराग कै ॥ राग द्वेप जिणमें नहीं। सांचा जाणया हो। सोइ वीतराग कै ॥ सू. ८ । १९ सै वरसै ५३ नै। जैपुर मांइ हो। फागण वद बीजकै ॥ दीज्यो दर्शन जडावनै ॥ भरपाइ होए मोटीरीज कै ॥ सू. ९ ॥

पद ॥ ६ देशीं जवाइ मानै प्यारां लागौजी

कुसुमपुरी नगरी भली। प्रभूजी हो श्रीधर राए उदारोरै।

पद्मप्रभू प्राण अधारोरै । होजी मांनै जिम जाणो तिम तारोरै । आंकड़ी. १ ॥ सूसमादे पटराणी । प्र । तस कुले अवतारोरै ॥ प. २ ॥ जग सुख जाण्या कारमा । प्र. । लीनो संजम भारोरै ॥ पद ३ ॥ अजर अमर पदवी लइ । प्र. । सफल कियो अवतारोरै ॥ पद ४ ॥ सिवरमणीरा सायबा ॥ प्र ॥ अविचल प्रीत वधारोरै ॥ पद ५ ॥ तुम माता तुम ही पिता । प्र. । तुम ही भ्रात हमारोरै ॥ पद ६ ॥ खाना जात गुलामनै । प्र. । जिम जाणो तिम तारोरै । पद ७ । जैपुर मांए जड़ावैरी । प्र. । बिनतड़ी अवधारोरै ॥ पद ८ ॥

पद ७ ॥ देसी रीडमलरी

वाणारसी नगरी वखांण । जी प्रभूजी । प्रतिसैण राय सुजाण । हे राणी पोमावती माता तुमे तणीए । हाए । देव निरंजणोए । भव दुख भंजणोए । सुपारसनाथ आंकडी १ ॥ रूलियो मैं तो काल अनंत । जी० । अजैय न आयो भव अंत । हे म्हेर करीनै सनमुख राकज्योए । हाए ॥ २ ॥ तूं ही निरंजण दीनदयाल । जी । मेटो मारी भवदुख जाल । हे सेवक जांणीनै । सरणे राखज्योए । हाए ॥ ३ ॥ हूछूं अनादि अधम अनाथ जी । दुरवल जाणी राखो निज साथ । हे चर्ण लागीने करस्यूं चाकरीए । हाए चाकरीए । हाऐ ॥ ४ ॥ पाउं दर्शण अवर न चाए । जी० । पुदगल भरमै मिटाए । हे व्हैर उतारो मोह मद छाकरीए । हाऐ ॥ ५ ॥ आतम अनुभै चितै समाध । जी० । दर्शन चारित्र ग्यानै अराध । हे हुकम हुवै तो हाजर होवस्यूं ऐ । हाऐ । ६ । म्हा सरीखा

नहीं आवै थांकी दाए। जी०। तोपीण थांरीठोरै बताए। हे दूर रही ने सनमुख जोवस्यूं ए। हाऐं ॥ ७ ॥कुधातु कनक सम थाए।जी०। पथर पारस नाम धराए। हे हूतो साख्यापत। पार्स ध्यावस्यूं ए। हाऐ ॥ ८ ॥ १६ सै ५२ नै। सुखकार। जी०। माहा सुद जैपुर १२ स रविवार ॥ हे पार्सहू प्रसन्न थावो जडावसूं ए। हाऐ ॥ ६ ॥

पद ८, देसी डफकीं

चंदा प्रभू। चंदा प्रभू। सरण होज्यो तेरो। चं०। आंकड़ी। ॥ १ ॥ लोक एकमै तपत जोतकी। सकल प्रकास चंद केरो। चं०। ॥ २ ॥ म्हासीणराए लिखमा पटनारी। अंगजात तूं तिणकेरो। चं०। ॥ ३ ॥ नाम लियां नवनिधि घर आवै। भजन कियां मिटै भवफेरो। चं० ॥ ४ ॥ सरप सिंघ अगनी जल केरो। भूत-पिसाच टलै चैरो। चं० ॥ ५ ॥ सात बीसन अरु पाप अठारा। करकै भजन तीरै तेरो। चं० ॥ ६ ॥ संकटमांहे सरण तियारो। जो तुम नाम जपै गैरो। चं० ॥ ७ ॥ माए मनोरथ चंद पीवणरो। पग लंछण चंदा केरो ॥ चं ॥ ८ ॥ तिणथी नाम चंदजिण थाप्यो। जनक जात मिल सब तेरो। चं० ॥ ६ ॥ १६ स ५३ न तेरस नै। मसीवार सुद पक्ष केरो। चं० ॥ १० ॥ जैपरमांए जडाव कहत है। अब तो न्याव करो मेरो। चं० ॥ ११ ॥

पद ६, देशी भींलारीं

प्रभू जी नवमा सुरग थकी चव नरभव पायो हो। श्री सुवध जिणंद। तीन ग्यांन ले जननी कूंखे आयाहो। जिणंद। आंकडी० ॥ १ ॥ प्र० काकंदी सुगरीवधराधिप राया हो। श्री०।

चवदै सुपना देख रामा सुत जांया हो । जि० ॥ २ ॥ प्र० । चौसट इन्द्र मिल कर म्होछव आया हो । श्री० । छपन कुंवारी हस २ मंगल गायाहो । जि० ॥ ३ ॥ प्र० । धनुष्य एकसौ काया । उजल-वरणी हो । श्री० संजम लेलै कीनी उत्तम करणी हो । जि० ४ ॥ प्र० ॥ मनडो मारो मिलवानै । उमायोहो । श्री० । तन मन असै । पिण आयो नहीं जावैहो ॥ जि० ॥ प्र० ॥ दीज्यो दर्शण ओर कछु नहीं आउं हो । श्री० महल स्हल कर । फिर पाछी नहीं आउं हो । जि० ॥ ६॥ । प्र० । सुवध सुवध दाता जगजीवन भिरात हो ॥ श्री०॥ जे तुम ध्याता ते पावै सुखसाताहो । जि० ७ । प्र० । माहा सुद पुनम ५३ ने । जैपुर वासो हो । श्री । जिनगुण गाया । पाम्या परम हुलासोहो । जि० ८ । प्र० । वे कर जोड़ जड़ाव कहै । मोए तारो हो । श्री. भवसागरमें भटकत पार उतारो हो.॥ जि. ९ ॥

पद । १० । सीतलजिन २ सार करो मेरी

डीडसिरा राय नंदा पटराणी । हांजी प्रभू जन्म दीयो धन मा तेरी ॥ सी. १ ॥ तपत मिटाई जनक तन केरी । हां. । गर्भ थकां मा कर फेरी ॥ सी. २ ॥ तिणथी नाम सीतल जिन थाप्यो । हा. ॥ गुणने पैसो भै भारी ॥ सी. ३ ॥ जनम मरण की लाय बुझावो ॥ हा. ॥ वेग मिट मुज भव फेरी ॥ सी. ४ ॥ सात कर्म की सीन्यां सजीनै । हाजी : मोहमहिपत मोए लियो घेरी ॥ सी. ५ ॥ मैं वलहीन मोहमहिपत व्होत दुख पाऊं । हा. । तुम लग आंण न दै वैरी ॥ सी. ६ ॥ १९ सै ५३न तेरस नै

। हा. । अबीर गुलाल उडै घेरी ॥ सी. ७ ॥ चावत दर्शन जड़ाव जैप्रमैं । हा. नहींतो बतावो । मुक्तिकी सेरी ॥ सी० ८ ॥ इतनी अर्ज गरजमे कीनी । हा. कै राखो चरणारी चेरी ॥ सी० ९ ॥

पद ॥ ११ । देसी मोत्यांरो गजरो भूली

सिहपूरी सुखकारो । जिनराज । विनय दिनारों । सुभ वेला सुभ वारो । तहं कूंप लियो अवतारो । ह्रंणो भव प्राणी श्री हंस भजो वरनांणी । आंकड़ीः १ ॥ मात पिता सुख पाया । सुभ सुपन विलोकी जाया । इंद्र चोस्ट मिल आया । इंद राण्यां मंगल गाया । सु. २ ॥ आतम अनुभव चीनो । तज भोग जोग तुम लीनो । समग सुधारस पीनो । लियो केवल ग्यान नवीनो सुम ३ ॥ लोकालोक उजासो । कियो घाती कर्मनो नासो । जोतमें जोत प्रकासो । तिहां देखो जगत तमासो । सु. ४ ॥ तूं देवन को देवो । एक चीत करुं तुम सेवो । निज चरणामें लेवो । मुजै मुगतरीजमै देवो । सु. ५ ॥ कुगुरूको भरमायो । मन हिंसा धर्म बतायो । काल अनंत गमायो । अजू तुम दर्शन नहीं पायो । सु. ६ ॥ पुदगलको रस पाको । मैं तो जन्म मरण कर थाको । दर्शन होसी थांको । जद मिटसी रुलवो माको । सु. ७ ॥ थें छो पर उपगारी । अब राखो लाज हमारी । चाउं सेव तुमारी । मैं तो भर पाइरीजवारी । सु. ८ ॥ १९ से ५३ नै वद फागण १४ स दिनै । कवे जड़ाव ते धनै । तुम ध्यान धरै एक मनै । सु. ९ ॥

पद ॥ १२ । राग मोटी जगमे मौवणी

वासपुज्य जिन वंदीए । जीकांइ कर जोड़ी हो उठी प्रभात ।

दर्शन ज्यारा दिल बसै । अब दीज्योहो किरपा कर नाथ आकड़ी ॥ १ तुम मात तुम ही पिता । जीकां. तुम भ्राता हो । मुज प्राण आधार । तुम बिन देव न दूसरो । इण जगमें हो काइ तारण हार ॥ वासः २ ॥ कामधेन चिंतामणि ॥ जीकां, मनवंछीत हो पूरै पुनजोग ॥ तेतो सुख संसारना ॥ थां त्रूठां हो सुधरै परलोग ॥वा० ३॥ भवसागर में भटकता । दर्शन करहो देखीजो मोए । नाच किया मैं नवानवा ॥ नटवा जिम हो रीजावा तोए ॥ वा. ४ ॥ ज्यों सुप साह्यवा ॥ जीकां देपीनें हो मुंज नाटक नाच ॥ तो तुम राखो तुम कनै ॥ नित रहस्यूं हो चरणामै राच ॥ वा.६ ॥ कै दुख पाया देषनै ॥ जीकां.॥ तो कह दोहो तू अब मत नाच ॥ रीज खीज दोन्यू भली । नहीं नांचू हो मानू तुम वांच ॥ वा.६ ॥ पुन्यहीण करणी बिना ॥ मै गूंथी हो मनोरथ माल । पिण तुम बिरद वीच्यारनै । पूरीज्यो हो सही दीनदयाल ॥ वा. ७ ॥ तारै निश्चै आतमा ॥ जीकां. बिन करणी हो कुण तारण हार ॥ कीनी इतनी बिनती ॥ तुम आगै हो साज्यो विवहार ॥ वा. ८ ॥ १६ से ५२ न ॥ भलो ॥ जीकां. दिन दसमी हो वद फागण मास ॥ जैपुरमांए जड़ावनै ॥ राखीज्यो हो चरणारी दास ॥वा ६ ॥ इति.

॥ पद ॥ १३ ॥ देसी बडघर ताल लागीरै ॥

विमल मत दीजिएजी कर किरपा मुज साम ॥ घटै नही बुध आपरी ॥ जस लेतां न लागै दाम ॥ विमल जिन देवै हमारोरै लागै प्राणज्यू प्यारोरै ॥ आ. १ ॥ करमदवेमोभ-

णीजी। लग रहे तणोताण ॥ किण वीद साजू हाजरी ॥ मानै नहीं आवै अवसाण ॥ वी०२ ॥ चाकर मांगे चाकरीजी ॥ ठाकर मांगे काम विना रुजगारनी चाकरी ॥ तुम क्युनी कराओ स्याम ॥वी०३॥ गुणवंतानै तारस्योजी । तो कांइ आसान । पापी पलै पलै लागियो अब आपै वधाओ मान ॥ वी. ४ ॥ धनमै धन सब कूडताजी ॥ ए जगमैं वीवहार ॥ निरधनसूं नेह दाखवो ए उतम घर आचार ॥ वी. ५ ॥ दिया अछता ओलंभाजी ॥ खमज्यो वारमवार ॥ सेवट तारै आतमा । पिण आप छो साखीदार ॥ वी. ६ ॥ सुण सुख पाया सांमजी ॥ तो मुकत करोरीजवार ॥ खीज्या तो खिज मतै करो ॥ कैकाडो संसारसू वारै ॥वी.॥ कीनी इतनी विनतीजी । भावै जाणमजाण॥१८सै ५३ नै भलोजी ॥ जैपुर सेषै काल ॥ फागण वद १ मै दीनै । प्रभू नामै मंगल माल ॥ वी. ८ ॥

पद ॥ १४ ॥ देसीनगरी काकंदी हो मुनीसर आइए

जसवंती राणी हो ॥ जिनेसर ॥ माता तुमै पीता ॥ सिंहरथ नामै भूपाल ॥ सुण सुखदाता हो जगत विख्याता हो ॥ श्री० जिन ॥ अनंत जिणंद तु ॥ आ. १॥ तुस सम ग्याता हो ॥ श्री० नहीं इण भरतमें दुपमी पंचम काल ॥ सु० ॥ २ ॥ मनमें उमावो हो । श्री० नित पासै रहूँ । पिण मुज कर्म कठोर ॥ सु० ३ ॥ सलाहा करता हो श्री०थासूं मिलणेरी ॥ विच २ कर रैया जोड ॥ सु० ४ ॥ सगत अनंती हो ॥ श्री० ॥ तुम हम सारैपी ॥ अंतर मेरू समान ॥ ॥ सु० ५ ॥ इचरज मोटो हो ॥ श्री० टोटो भज

तैम ॥ रूस रया भगवान ॥ सु०६ ॥ मैं अपराधी हो ॥ श्री० ॥ नाथी दुवै सया। नहीं पड़ी समकित सूज ॥ सु० ७॥ माफ करीजे हो ॥ अविनय असातना ॥ जाण अग्यानी अवूज ॥ सु० ८ ॥ समत १९ से हो ॥ श्री ॥ वद अमावस्या ॥ ५३ नै। फागण मास ॥ सु० ९ ॥ जैपुर मांए हो श्री. जाण जड़ावनै ॥ निज चरणारी जी दास ॥ सु० १० ॥

पद ॥ १५ ॥ देसी आज सहरमे जीहंजामारू सीपः

धर्म जिनेसर मुंज हीवडै वसो ॥ भूलूं नहीं खीए मात। सूरीजिन उठत बैठत सूवत जागैतां ॥ याद करूं दिनरात ॥ श्री ॥ ध० आंकड़ी ॥ १ ॥ पुदगल वैरी ओ मुंज केडै पडयो ॥ मीठो ठग दुख-दाय ॥ सूं० सानीधकारी हो ॥ तुंम सरीखा हुवै। तो देउं दूरै हटाय ॥ सू ॥ ध० २ ॥ जिण तिण आगै हो। करीए कूलामदी। पेट भराइ काज। सूं। गरज न सारी हो निज गुण भूलियो ॥ ते दुख खटकै आज ॥ सूं ॥ ध० ३ ॥ राग ने धेक दोनु पोलिया। औकी चारै कषाय ॥ सूं ॥ आठ करमरो, ओ घेरो लागीयो ॥ मिलण न दै म्हाराय ॥ सूं० ॥ धर्मजी० ४ ॥ तन मन तरसैहो ॥ दर्शन देखवा ॥ बरस रया मुंज नैण ॥ सू ॥ लवदवीना तो हम पासै नहीं ॥ किण विध आउं सैण ॥ सूं ॥ ध० ५ ॥ चंद चकोरा ओ मोरा मोहयजूं ॥ पतिव्रता पति जेम ॥ सू ॥ इण विद चाउं ओ दर्शण आपरो ॥ पिण आइजे केम ॥ सूं ॥ ध० ६ ॥ कीना विलाप ओ विवध पेर तुम कनै ॥ कर करूणा कीरपाल ॥ सूं ॥ दीजे दर्शण परसन

होयनै ॥ सेवग सामो जांण ॥ सूं ॥ ध० ७ ॥ तुंम विरहै दिन दोरा नाथजी ॥ खीण जावै छै मास ॥ सूं ॥ पतलीचाछै ओ पाणी खमै नहीं निस दिन जाय उदास ॥ सूं ॥ ध० ८ ॥ समत १६ से ओ वरस ५३ न भलो । फागण सुध पख बीज ॥ सूं ॥ जैपुर माए ओ जोड़ी जड़ावजी ॥ सुंण लीज्यो धर रीज ॥ सूं ॥ ध० ९ ॥

॥ पद १६ ॥ राग पंथीडा बात कहूं धुर छेहनैरें ॥

सरणो हो सरणो संत जिणंदनोरे ॥ दीज्यों भव २ मांयरे॥ कीजे हो २ किरपानाथजीरे ॥ लीज्यो चरणा मांयरै ॥ सरणो. आंकड़ी. १ ॥ नगरी हो नागपुरी रलीयामणीरे ॥ वसुसैण भोपालरे ॥ अचलारे २ तसूं पटरागणीरे ॥ सुंदीर रूप रसालरे ॥ स. २ ॥ स्वारथरे २ सीध विमाणथीरे ॥ विलसी सुर सुखसारहे ॥ चवनैरे आया मानव लोकैमेरे ॥ तीन ग्यांन ले लाररे ॥ सूखभररे २ सूथी सेजमैरे ॥ जननी पाछली रातरे ॥ सुपनारे २ चवदै देखीयारे ॥ फल पूछयों प्रभातरै ॥ स. ४ ॥ भाखेरे २ वांणी अमी समीरे ॥ होसी पुत्र उदाररे ॥ उभयरे २ कुल उजवालैणोरे ॥ निज पर तारणहाररे ॥ स. ५ ॥ जनमतरे संत हुई निज देसमेरे ॥ मिरगीमार निवाररे ॥ सूंतकरे २ कारज सहूकियोरे ॥ मिल कर छपन-कुंवाररे ॥ स. ६ ॥ चोसटरे २ इंद्र पदारियारे ॥ ले गया मेरुं मजाररे उछवरे २ वहु विद साचव्योरे ॥ जनीता जनक अपाररे ॥ सर. ॥ पोषीरै २ निज प्रवारनैरे ॥ पूरी मन की खंतरे ॥ सउ

मिलरे २ कीधी विच्यारणारे ॥ नाम दियो श्री संतरे ॥ स ८ ॥ बालकरे बालपणै लीला करीरे ॥ वरस २५ स हजाररे ॥ सीखथारे २ कला बोहतरु रे ॥ परण्यां पदमण नाररे ॥ स. ९॥ थाप्यारे २ पाट पिता तणारे ॥ पदवी पाइ दोएरे ॥ च्यारजरे च्यार मिल्या छ हो वसीरे ॥ लीज्यों आगम जोयरे ॥ स. १० ॥ विलसीरे २ सुख संसारनारे ॥ मिलै लोकिंतक देवरै ॥ बोलेरे २ ये कर जोड़नेरे ॥ ल्यो संजम सै मेवरै ॥ स. ॥ ११ ॥ बरसीरे २ दांनज दे करीरै ॥ जोग लीयो जगनाथरे ॥ चौथोरे २ ग्यान लेइ करीरै वड़ो पुत्र निज साथरै ॥ स. १२ ॥ तपजप रे २ करी सलेखणारे ॥ धायो निरमल ध्यानरे ॥ घातीरे २ करम खपायनैरे ॥ पाया केवल ग्यानरे ॥ स. १३ ॥ केवलरे २ प्रज्या पालनैरे ॥ वरस २५ स हजाररे ॥ तीर्थरे २ सुध वरताविया रे ॥ पोत्या मुगत मजाररे ॥ स. १४ ॥ संवतरे १९ से ५३ भलोरे। जैपुर शहरे मझाररे ॥ संतज रे २ जपै जडावजीरे ॥ वसंत पंचम सनवाररे ॥ सर. १५ ॥

पद १७. राग बेगे पदारो मैलथी

कुंथ जिनेसर नित नमूं । ज्यांमें गुण अनंत । गावै निज मुख सरस्वती । तोइ न आवै अंत ॥ कुं. आंकड़ी १ ॥ सबद रूप रस गंध नहीं । नहीं फस नहीं भेद । देखण रचना आपरी । म्हो मन अधिक उमेद ॥ कुं. २ ॥ ग्यान दीपक घटमैं नहीं । नहीं इण खेत्र सभाव । तुम सरीखी करणी नहीं । किण विध देखूं आय ॥ कुं. ३ ॥ राग धेख दोनुं नहीं । मोए करम लियो जीत

। जावै सो आवै नहीं । असी लगावो प्रीत ॥ कुं. ४ ॥ ओपत आपरै सांवठी । खरच नही एक रंच । लोभी कहू कै लालची । लग रइ खंचाखंच ॥ कुं. ५ । लिख न सकै काइ तुंम दसा । अलख अरुपी जोत । जे देखै ते जाणसी । प्रगटो परम उद्योत ॥ कुं. ६ ॥ आवणरी आसा घणी ॥ जाणै श्री जगदीस ॥ दाय उपाए कई करुं । मिलणो बीसवा वीस ॥ कुं ७ ॥ एह मनोरथ मायरा । सेखसली जिम जोय । आंगण वावै आकडो । ते आंबा किम होय ॥ कुं ८ ॥ १६ से ५३ न भलो । जैपुर फागण मास । जिम तिम राखो जड़ावनै । निज चरणारी दास ॥ कुं ८ ॥

पद १८. राग काफीरी छै

अरी नाथ अनंत गुणधारी । ज्यांरो समरण साताकारी ।आ०। एरीए राय सुदर्शण तात तुमारा । श्रीदेवी म्हा थांरी । रतनकूंख धारक सा जननी । ज्यां आप लियो अवतारी कै । धन २ जननी तुमारी ॥ अ. १ ॥ एरीए अनंत ग्यान दर्शण चरित्र ले । पैंतीस वाणी उचारी । आप आपणी भाषा मांइ । समजत न्यारी न्यारी । कै वारै पूरषदा सारी ॥ अ. २ ॥ एरीए अतसै च्चार । ले संजम । फेर इग्यारै धारी । १६ सै संजम लेतां प्रगटी । ए चोतीसूंइ सांरी । कै सम्पूरण अतसै ज्यारी । अरीना. ३ ॥ एरीए सोवन कोट रतनकी सीखा । फिटक सिंघासण धारी । भामंडल भलकै पूठ पाछै । चउदीस वदन निहारी । कै पुरुषदा विगसत सारी ॥ अ. ४ ॥ एरीए वीरख अशोक छाजै सिर ऊपर । षट ऋतुना सुख भारी । रोग सोग व्यापे नहीं कवहूं । पाखंडी

मदगारी । क वाद कर जावत हारी ॥ अ० ५ ॥ एरीए ओपमा-रहित अनोपम देही । सुभ पुदगल वीसतारी । असा पुत्र जणै कोइ जननी ॥ सूर नर सूर तय्यारी । कै देखतां आनंदकारी ॥ अ० ६ ॥ एरीए आगम एम पिछाणै प्रभूगुण । अलप कियो वीसतारी । बुध ओछी तुम महिमा मोटी । ते किण विध आवै पारी । कै सरस्वती जावत हारी ॥ अ. ७ ॥ एरीए कर उपगार । तार निज आतम । पोता मुगत मोजारी । वे कर जोड जड़ाव कहत है । जैपुर सहर मोजारी । कै अब तो वारी हमारी ॥ अ० ८ ॥ एरीए १० से ५२ न । सुखकारी । फागण सुदी उजियारी । तीजनै रीज करी मुज पर । राखो दासै तुम्हारी । कै एही अरज हमारी ॥ अ० ९ ॥

पद १९. देसी जीलारी.

महिलापुरी नो महीपतिजी । कुंम नाम राजन । प्रभावती पटरागनीजी नरपने जीव समान, मलजिन माएरो । मन मोहनगा-रोरे । दर्सण जिनराजनो । मानै लागैछे प्यारोरे । आंकड़ी ॥१॥ अपराजित विमाणथीरे । च्यवीने दीनदीयाल । जननी कूंखे अन्तर्याजी । पुत्रीपणै सुखमाल ॥ मल० २ ॥ गरभ प्रभावै मातनै जी । मालती कुसमरी माल । वंछा मनमैं उपनी दियो मली नाम रसाल । मल० ३ ॥ जनम वधाइ सांगताजी । मूंनकरी मायतात । हूवो अछेरो भरतमैंजी । इचरज वाली वात ॥मल० ४॥षट मीत्री पूरव भवजी तप कर तोडया करम । न्यारा २ देसमै जी पालै निज २ धर्म । मल० ५ ॥ मली महिमा सांभलीजी । मोया छउ राजान । सम काले सजी आवीयाजी । कर २मोटी जान । मल० ६ ॥ कुंभराय

सुण कोपियोजी । किण तेडाया भूपाल । जावो निज २ थानकां जी । नहीं प्रणाउं मारी बाल । मल० ७ ॥ मानभंग नृप चींतवैजी । मणारा कर दिया सेर । महीला पुरी तिण अवसरेजी । घेर लीवी चौफेर । मल० ८ ॥आवण जावण रोकीयाजी । चिन्तातुर राजान । दी धीरज निज तातनै जी । उदै महाबलवान । मल० ९ ॥ निज अकारे पुतलीजी । कंचनमय रच लीन । भोजन सरस भरी हूतीजी । ऊपरसूं ढकदीन । मल० १० ॥ न्यारा २ तेडियाजी । चोज करी राजान । झाल सहित चित्रसालमेंजी । बैठाया दे सनमान । मल० ११ ॥ सिणगारी सा पूतलीजी । देखी विस्मय थाय । एवी नही कोइ असतरीजी । तीन लोकरे मांय । मल० १२ ॥ अति आसक्त जाणी करीजी । दूर कियो ते दाट । निकसी दूरगंध आकरीजी । तुरत गयो मन फाट ॥ मल० १३ ॥ प्रतिबोध्या श्री मुख थकीजी । अवसर देखी ताम । मत राचो इण रूपमेंजी नार नरकनो ठांम । मल० १४ ॥ वैरागी संजम लीयोजी । मुक्त गया जिन संग । जैपुर मांय जड़ावनैजी । थांरा दर्शणरो उछरंग । मल० १५ ॥ १९ स वरस ५३नजी । फागण सुदी पखमांय । गुण गाया जिन राजनाजी । सूणता सिवसूख थाय ॥ मल० १६ ॥

पद २०

राग अबकै पीयर जाउं थांरै कड़ाकड़ तीलाउंरे खटमल सुवादै । राजगिरी सुखकारी । गढसिंद्र पोलेमकारी । मनडा मेरारे हारे म . मुंसो व्रत जिन मेरा । मुनी । तुम टालो भव २ फेरा । मुनी० ॥ १ ॥ सुमित्ररायकुलटीको । पोमाकोनंनणनीको

॥ म० २ ॥ ग्यांन अनंत प्रकासो । तुम देखो जगत तमासो ॥ म० ३ ॥ तूं देवनको देवा । मै चाउ चरणकी सेवा । म० ४ ॥ म्हो मन मिलण उमावो । मे ध्यान धरुं सुध भावो ॥ म० ५ ॥ सार करो हिव मारी । मैपांनात तुंमारी ॥ म० ६ ॥ मै तुंमन नहीं ए पिछाएयो । मै पक्ष कुगुरुरो तांएयो ॥ म ॥ म० ७ ॥ १६ म सुपवासो । जैपुर में प्रम हुलासो ॥ म० ८ ॥ ५३न फागण मासो । जड़ाव करी अरदासो ॥ म० ६ ॥

पद २६. देशी कर हांरे नीरु नागरवेल.

वीजेरथ राजा तुमै पिताजी । कांइ विजियादे तुम मात । चवदै सुपना देखलैजी । कांइ । जाया तिरलोकी नाथ । जीसुखकारी मारा नमिए जीणंद जिथांन वाद्या होए आणंद । आकडी ॥ १ ॥ तूं तारक तिहू लोकमैंजी । कांइ तुंम सम अवर न कोए । अद्भुत रचना आपरीजी कांइ । सुणतां इचरजमोए । जी० २ ॥ मन असै मिलवा भखीजी कांइ । द्रसण देखण नैंण । किम असावो मोभणी । जी कांइ । मिलकर सांचासैंण । जी० ॥ ३ मोए मिथ्यात अग्यानताजी कांइ । मारा निजगुण दिवा छिपाय । परगुणमांये फसैरहि ॥ जि ॥ मोह आयो किण विद जाय ॥ जी० ४ ॥ अनंत ग्यान द्रसणकरी । जि कांइ । देख रया जग झाल । मकड़ी जिम मांए फसीजी ॥ मानै अब तो वेग निकाल ॥जी० ५॥ कइएक प्राक्रम हूं कर्या । जि कांइ । कइएक आपणे साज ॥ तोकुमणा नहीं म्हार । जी । सही सीजै बंछत काज ॥ ज० ६ ॥ एह मनोरथ म.द्दरा । जी कांइ । गीगन

कुसम सम होए । निरधन जे जे चिन्तवै । जी कांइ । ते ते निरफल होय ॥ जी० ७॥ ओछी पूंजी पायनै मैं तो बोत कियो बोपार ॥ सेठ मिल्या तुंम सारखा जी । मारी । करता रइज्यो सार ॥ जी० ८ ॥ १६ स वरस ५३न । जी कांइ जैपुर फागण मास ॥ कीसन पख तीथ ३ नै जी । अब पूरो जड़ावनी आस ॥ जी० ६ ॥

॥ पद ॥ २२ ॥ देसी नाथ कैसे गजको फंद छुडायो:

नेम प्रभू राषो सरण तुमारी ॥ एही अरजै हमारी ॥ ने ॥ आंकड़ी ॥ समद बीजे नरपै सोरीपुरको, सेवाको नंदन नीको । भवदुख भंजण नाथ निरंजन जादव कुल सिर टीको ॥ने० ॥१॥ तुम बिन देव अनेरा जगत में । ते मुज दाय न आवै ॥ छोड़ इमरत फल दाड़म दाखां । नीबोली कुंण खावै ॥ ने० ॥ २ ॥ फिरत अनाद बाद भव २ मैं ॥ दुखको छेय न पायो । दीन दयाल किरपाल मिल्या तूं । अबकै अवसर आयो ॥ ने० ॥ ३ ॥ हूं मतहीन दीन तूं समरथ ॥ जालो बांय हमारी ॥ भवदधि मांए । डूबत सारो । अपनो बिरद बिचारी ॥ ने० ॥ ४ ॥ तूंही तात मात अरू भिराता ॥ तूंही सैणसर्गनो । तूं सुखदायक सब बिद लायक । प्यारो नेम नगीनो ॥ ने० ॥ ५ ॥ घरकी नार तार जस लीनो । अपनो कारज कीनो ॥ हमकूं बिसार सार नहीं कीनी ॥ यो अपजस किम लीनो ॥ ने० ॥ ६ ॥ संण ओलंभा संभाल करीजे ॥ तूं सायक सोभागी ॥ अब ही तार सार कर मोरी भागदशा हम जागी ॥ ने० ॥ ७ ॥

१९स ५३न महा महीनै ॥ सूरज सातम सोमवारो ॥ जैपुर मांए जड़ाव जपत है ॥ नाम प्रभू एक थारो ॥ ने० ॥ ८ ॥

॥पद॥२३॥ देसी मैंदी तो वावण धन गई॥

सुगणीरा हो गाडा मारूजी राय रतनके वाग मेंदी राचणी । आस्वसैण कुल अवतर्या उपगारी हो जिनवरजी । कइ भोमादे-जीरा नन्द । श्रीजिनप्यारो छे । कइ प्रभू पासजिणंद । मोवनणारो छै ॥ आकडी ॥१॥ राजलीला सुख भोगवी ॥उप॥ कइ लीनो संजम भार ॥श्री. २॥ केवलग्यान प्रकासनै ॥उप॥ कइ पोंथा मुगत्त मोभार ॥श्री. ३॥ भवसागरमे भरमा ॥उ०॥ कइ कीनी अनन्ती वार ॥श्री. ४॥ छेदन भेदन तरजना ॥उ०॥ कइ कहता न आवै पार ॥श्री ५॥ कठण करममै संचीया ॥उ०॥ कइ देख रयाछो आप ॥श्री. ६॥ मायत विरद विच्यारनै ॥उ०॥ मारा काटो भवना पाप ॥श्री.७॥ कमट काट निरमत्त कियो ॥उ०॥ कइ नाग उवारणहार ॥ श्री.८ ॥ भगत वींछल भगवंत छो ॥उ०॥ मने दीज्यो मुगत मुकाम ॥श्री. ९॥ १९स ४२समै ॥उ०॥ सोवाग पचमीरा रात ॥श्री. १०॥ गुंरणीजीरा प्रसादसूं ॥उ०॥ मै जोड्यां दोन्यूं हाथ ॥श्री. ११॥ चौमासो नवासहरसैं ॥उ०॥ कइकह जड़ाव कर जोड़ ॥श्री. १२॥ गुंण गाया प्रभूजी तणा ॥उ०॥ कइ पूग्यां मनरा कोड़ ॥श्री. १३॥

॥पद २४॥ देसी हां कनैया कांन पियारो: ॥

महावीर सासणके स्वामी ॥ वार २ प्रणसूं सिर नामी । उंलालो । दीज्यो भव २ सेवदेव तूं अंतरजामीरे ॥वीर॥ आंकड़ी ॥१॥

क्षत्रिकुंड नगरी सुखकारी ॥ राय सिधारथ तिसला नारी ॥ पीतमसे प्यारी ॥उ०॥ रतन कूंख तस्र धारणी । जस जगत मोक्षकारीरे ॥वीर॥२॥ सुख सेजा सुभ पवनज कोलै ॥ पीतम साथे कर रंग रोलै ॥ चाकर दासी चवर ढोलै ॥उ०॥ कइ सूती कइ जागती निज खाट हींडोलैरे ॥वीर॥३॥ दसमा सुरग थकी चव आया ॥ सुपन चत्र दस जननी पाया ॥ सुंण सिधारथ हरष सवाया ॥उ०॥ पींडत मुख म्हारायजी ॥ सब अरथ करायारे ॥वीर॥४॥ सुभ वेला सुभ मोरथ जाया ॥ चौप्ट इन्द्र मिल कर आया ॥ छपन कुंवरी मंगल गाया ॥उ०॥ पंच रूप कर देवजी । मेरू पर लायारे ॥वीर॥५॥ भर २ कलस सरस बरसावै । इन्द्र मन अनुकंपा ल्यावै ॥ बालक मै प्रभूजी दुख पावै ॥उ०॥ अनथ ज्ञान जग भाण जांण निज सगत दीखावैरे: ॥वीर॥६॥ अनन्तवली अंगूठो चंपे ॥ थर २ थर मेरुगीर कंपे ॥ महावीर सुरपत सुख झंपै: जोडै दोन्यूं हाथ नाथ कर किरपा हमपैरे ॥वीर॥७॥ वरस २८स रया गिरचारी ॥ दोय वरस निरलेप विच्यारी ॥ भोग रोग से मनसा टारी । उ० । मात पिता सुरगत गया । लियो संजम भारीरे ॥वीर॥८॥ तीन ग्यान घरसे संग ल्याया ॥ मनप्रजे संजम ले पाया । म्हो राजासे जंग मचाया ॥उ०॥ तपस्या कर महावीरजी सब करम खपाया ॥वीर॥९॥ केवल ले तीरथ वरताया ॥ चवदै संस भये मुनिराया ॥ गौत्तम मनका भरम मिटाया ॥ मुगत्त गया वीरदमानजी ॥ सासण वरताया रे ॥वीर॥१०॥ १९स ५२न सुखदाइ ॥ प्रथम जेप्ट जैपुर कै मांइ ॥ बाल मुनि चौमासो ठाइ ॥उ०॥ जोड़ लावणी

वीरकी जड़ाव सुणाइरे ॥ वीर ॥ ११ ॥

कलस ॥ अवतार सार चोवीस साइ । सासण तेनो जाणीए ॥ परम्पराए सुंण सबंद भाख्यो ॥ अरथ पाठ परमाणए ॥१॥ श्री सिधनायक ग्यानदायक ॥ पूज वीने म्हाराजए ॥ कांन मुनी रिष मेघ पाटे ॥ वालचंद रीष रायए ॥२॥ पूज रतन समुदाय मांए ॥ रंभाजी हूवा दिनमणी ॥ तास सिसणी जडाव जंपे ॥ ढाल चोवीसे भणी २ ॥३॥ वुध ओछी नहीं सोची ॥ वालक ज्यूं कर ख्याल ए ॥ रस्व दीर्व विच्यार नहीं ॥ थइ जोड करण उजमालए ॥ ४ ॥ ढाल मिलती नहीं मिलती अधिक नून समाग्रए ॥ आवो होय तो काड दीज्यो ॥ मत कीज्यो उपहांसए ॥५॥ समत श्री १९स कइए॥ ऊपर ५३न जोयए॥ इधक ओछो कवि सोचो ॥ मिछ्यादुकड सोयए ॥ ६ ॥ हाथ जोड़ी मान मोड़ी ॥ नयन करूं निज सीसए ॥ चौइस जिनअरूं ॥ कवि विचारके ॥ गुंनो करो वगसीसए ॥ ७ ॥

॥ देसी गरणाइ हो हाली जा थारी आगडली ॥

रिषस अजित संभव अभिनंदण ॥ सुमत पदम प्रभू प्यारा हो ॥ जिणंद मारी विनतडी ॥ सूंण लीज्यो प्रभूजी मारी ॥वी.॥वी.॥ मारी नित २ जेलो ॥ दुरगत दूरी ठेलो हो ॥जि० वि०॥ म्हानै अव मती आगा मेलो हो ॥जि० वि० १॥सुपार्सचंद्र सुवध सीतल ॥ श्रीहंस वासपूज माराहो जि मारू ग्यान चोपड़ हँस खेलो हो ॥जि० वि० २॥ विमल अणंत श्रीधर्म संत जी ॥ संत करी सुख पाया हो जि०॥ मान निज चरणामें लेन्योहो ॥ जि.वि. ३॥ कुंथे अरी मल्ली मुनी सुव्रतजी ॥ भवजीवारै मन भाया हो ॥जि.वि.४॥

छत्रिकुंड नगरी सुखकारी ॥ राय सिधारथ तिसला नारी ॥ पीतमसे प्यारी ॥उ०॥ रतन कूंख तसु धारणी । जस जगत मोख्कारीरे ॥वीर॥२॥ सुख सेजा सुभ पवनज कोलै ॥ पीतम साथे कर रंग रोलै ॥ चाकर दासी चवर ढोलै ॥उ०॥ कइ सूती कइ जागती निज खाट हींडोलैरे ॥वीर॥३॥ दससा सूरग थकी चव आया ॥ सुपन चवदस जननी पाया ॥ सुंण सिधारथ हरष सवाया ॥उ०॥ पींडत मुख म्हारायजी ॥ सब अरथ करायारे ॥वीर॥४॥ सुभ वेला सुभ मोरथ जाया ॥ चौष्ट इन्द्र मिल कर आया ॥ छपन कुंवरी मंगल गाया ॥उ०॥ पंच रूप कर देवजी । मेरूं पर लायारे ॥वीर॥५॥ भर २ कलस सरस वरसावै । इन्द्र मन अनुकंपा ल्यावै ॥ वालक मैं प्रभूजी दुख पावै ॥उ०॥ अवध ज्ञान जग भाण जांण निज सगत दीखावैरे: ॥वीर॥६॥ अनन्तवली अंगूठो चंपे ॥ थर २ थर मेरूगीर कंपे ॥ महावीर सूरपत मुख झंपैः जोडै दोन्यूं हाथ नाथ कर किरपा हमपैरे ॥वीर॥७॥ वरस २८स रया गिरचारी ॥ दोय वरस निरलेप विच्यारी ॥ भोग रोग से मनसा टारी । उ० । मात पिता सुरगत गया । लियो संजम धारीरे ॥वीर॥८॥ तीन ग्यान वरसे संग ल्याया ॥ मनप्रजे संजम ले पाया । म्हो राजासे जंग मचाया ॥उ०॥ तपस्या कर महावीरजी सब करम खपाया ॥वीर॥९॥ केवल ले तीरथ वरताया ॥ चवदै संस भये मुनिराया ॥ गौत्तम मनका भरम मिटाया ॥ मुगत्त गया वीरदमानजी ॥ सासण वरताया रे ॥वीर॥१०॥ १९स ५३न सुखदाइ ॥ प्रथम जेष्ट जैपुर कै मांइ ॥ बाल मुनि चौमासो ठाइ ॥उ०॥ जोड़ लावणी

वीरकी जड़ाव सुणाइरे ॥ वीर ॥ ११ ॥

कलस ॥ अवतार सार चोवीस साइ । सासण तेनो जाणीए ॥ परम्पराए सुंण सवंद भाण्यो ॥ अरथ पाठ परमाणए ॥१॥ श्री सिधनायक ग्यानदायक ॥ पूज वीने म्हाराजए ॥ कांन मुनी रिप सेघ पाटे ॥ बालचंद रीप रायए ॥२॥ पूज रतन समुदाय मांए ॥ रंभाजी हूवा दिनमणी ॥ तास सिसणी जडाव जंपे ॥ ढाल चोवीसे भणी २ ॥३॥ बुध ओछी नहीं सोची ॥ बालक ज्यूं कर ख्याल ए ॥ रस्व दीर्घ विच्यार नहीं ॥ थइ जोड करण उजमालए ॥ ४ ॥ ढाल मिलती नहीं मिलती अधिक नून समाअए ॥ आयो होय तो काड दीज्यो ॥ मत कीज्यो उपहांसए ॥५॥ समत थी १९८स कइए॥ ऊपर ५३न जोयए॥ इधक ओछो कवि सोचो ॥ मिछ्यादुकड सोयए ॥ ६ ॥ हाथ जोड़ी मान मोड़ी ॥ नवन करूं निज सीसए ॥ चौइस जिनअरूं ॥ कवि विचारके ॥ गूंनो करो वगसीसए ॥ ७ ॥

॥ देसी गरणाइ हो हाली जा थारी मागडली ॥

रिषस अजित संभव अभिनंदण ॥ सुमत पदम प्रभू प्यारा हो ॥ जिणंद मारी विनतडी ॥ सुंण लीज्यो प्रभूजी मारी ॥वी.॥वी.॥ मारी नित २ जेलो ॥ दुरगत दूरी ठेलो हो ॥जि० वि०॥ म्हाने अव मती आगा मेलो हो ॥जि० वि० १॥सुपार्सचंद सुवध सीतल ॥ श्रीहंस वासपूज माराहो जि मासूं ग्यान चोपड़ हॅस खेलो हो ॥जि० वि० २॥ विमल अणंत श्रीधर्म संत जी ॥ संत करी सुख पाया हो जि०॥ मान निज चरणामें लेल्योहो ॥ जि.वि. ३॥ कुंथै अरी मल्ली मुनी सुव्रतजी ॥ भवजीवारै मन भाया हो ॥जि.वि.४॥

नमीए नेम पार्स महावीरजी । सासण सुध वरताया हो । जि० वि० ॥ ५ ॥ वहरमान गुण धरै गुणमाला । जपतां पाप पूलावैहो । जि. वी० ॥६॥ १६ से ६१ ट एकादसी । दूजै जेठ बदी गुण गाया हो ॥ जी. वी. ॥७॥ वे कर जोड़ जड़ाव जैपुरमै ॥ चरणा सीस नमाया हो जि. वी. ॥ ८ ॥

छंद छपनी लीखंतै। सवैया इगतीसा ॥

प्रथम श्री अरिहंत नमूं । गुण द्वादशधारी । सिध सकल भगवंत । अष्ट गुण सोवै भारी । आचारज उवझाय । दो दो पदवी पाई । साधू सरव महंत । विचारै दीप अढाई । विहरमान वंदू सदा । गुणधर गुणकी माल ॥ ग्यांन द्रसण चारीत्रनो सरणो! होज्यो त्रिकाल ॥ १ ॥ पहला जाणै वरण । दूसरै मात्रा लीजै । तीजै सुध उचार । चतुर्थे पद गण लीजे । पांचव भारी ह्रस्व । छटै चाल चलीजे । जैसो होय समास । तैसो आंण धरीजे । ए सांतू जाण्यां विना कविता करसी कोय । कहत जड़ाव जगतमें । लोक हसाइ होय ॥ २ ॥ दोहा । इतना तो जाणै नहीं । जोड करण उजमाल । किण विध थई जडाव तूं । कविता करो संभाल ॥ ३ ॥ छंद छन्य । नावा चालै ले चलै । अपनी सकति नाय । विनै वैल घोडा विनै । पाणी साज तिराय ॥ ४ ॥ ग्यानी छोडी गरव । गुरुनै सीस नमावै: विधसूं लेवै ग्यान ॥ गुरुसूं गुर वण जावै । देस प्रदेसा जाय जठैइ आदर पावै । भरी सभामै वैठ सवको मन रीजावै । ग्यांन भण्यां गुण छै घणा । साधुको सिणगार । जड़ाव कहै तिण कारणै । उद्यमरो अधिकार ॥ ५ ॥ देतां दूणो वधै । लेतां सोभा पावै । खरच्या खूटे नाय ।

धरतां काठ न आवै । लांखा लेवो लार भार भाड़ो नहीं लागे ॥ देस प्रदेसां जाय जठइ रेवे साथे । चोर ठगारा न लगे । गुपत खजानो सार । जड़ाव कहै । घटमैं दीयो । कर सतगुरु उपगार ॥ ६ ॥ सवैया तेइसा । रथ फेर चले । हमसै न मिले । पसु बदण देखत तोड़ टटा । रही जान खडी हलकार पडी । सब जादूके मन होत खटा । हरी लार फीरे तूं कांइ करै । अब नेल चढी तज जाय कटा । जड़ाव कहै सति राजल बोलत । होउं बैरागन खोल जटा ॥ ७ ॥ छंदत्रिभंगी । सखी कह सुण राज-मती । ऐसी बात करो कहां जाय पति । फिर आवत है जरा धीर धरो । नहीं आवंगे तो और वरो ॥ ८ ॥ सोच विच्यार सती इम बोलै । और पुरुष सब बंधव तोलै । झूठ कहूं नहीं केदूं साची । ऐसी बात कहै मत पाछी ॥ ९ ॥ एक छमछर दान ज दीनों । सैस पुरुष साथे व्रत लीनों । चढ गिरनारी । ध्यान ज कीनो । केवल दरसण ग्यान नवीनो ॥१०॥ राजल सुण समता रस पीनो । छोड़ गयो मुज नेम नगीनो । अफल जमारो । अब नहीं हारुं । दो अग्यां मुज कारज सारुं ॥ ११ ॥ संजम ले पालै सुध खंती । पीव पैलाइ सुगत पहूंती जड़ाव कहै धन २ सतवंती । अविछल नेह कीयो भगवंती ॥ १२ ॥ सवैया इतिसा । आलस आणी अंग संग । अहीलाके सोयो । जिनै रहित ले ग्यांन ॥ जनम प्रमादै खोयो । क्रोध तपतो नास । रोग तन औषध धोयो । अपजस जावै जस । मान मदिरा मैं सोयो । डरतो भागै दूरथी धर्म न आवै दाय । मन चंचल निद्रा गयी । ममतासै खूज जाय ॥१३॥ दोहा । एहीज तेरै काठीया । देत जबर झक जोर । जड़ाव देस मेवाड़सै ।

कह काठीया चोर ॥ १४ ॥ प्रथम खिम्या धरम । दूसरै लोभ न राखे । होवे सरल सभाव । मान मद दूरा नाखै । हलको द्रवै झूठ मुखसूं नहीं भ'खै । तप संजम सुध ग्यान । सील इमरत रस चाखै । ए दस धर्म अराधसी । ते गुरु लीज्यो धार । जड़ाव निस्ते जाणीए ॥ तिरै सो तारणहार ॥१५॥ जात तणो अंकार । गरव कुल वल को तोलै । लाभ हूवा चढै द्रप । पढीनै वांको वोलै । मोपै लेवो ग्यान । हारो मत जन्म अमोलै । ठकुराइमै जिल रयो । मद छकीयो मगरूर । जडाव कहै सुण जीवड़ा । सिवसुख होसी दूर ॥१६॥ एक करै अणखोड़ । दूसरी लड़ै लड़ाई । तीजी लेवै नींद । चउथी करै बड़ाई । अदविच उठै कोय । पूठ फेरीनै वैसे । सुणै तो सरध नाय । समभावै कैसे । घरको धंधो छोड़नै । मली हुई च्यार । जड़ाव कहै थे आयनै । कांइ काडयो सार ॥१७॥

छंद कुंडलियां । वखाणकी त्यारी हुइ । भेली मिल कर च्यार । भाया बांणी झेलसी अब बाताको तांर । अब करै केइ छानै छानै । केइ होय निसंक वरजै तोई न मानै । सतगुरु वाणी वागरै । गावै गलोज तांण । जड़ाव कहे समझाय नै भाया सुणो वखाण ॥१८॥ चेला चेली देखनै । कीज्यो चत्र पिछाण । जिस्या तिस्यानै मृडतां । रहसी खांचातांण ॥रह॥ पछै नहीं लागै कारी । उपजावै असमाध । आतमा होसी भारी । भेख लजासी लोक मै । होय गूंणारी हाण । जड़ाव कहै सुख पामसी करसी चत्र पिछाण ॥१६॥ पहली जोए विच्यारनै । ममत करसी कोय । आद अंत निपजावसी तो सुख साता होय ।

तोसूं दोयको मन मिल जावै। पूछे सुख दुख वात। खावै अरु खुलावै। नेह विनै मित्री कीस्यो। जैसो नीपण छार। जड़ाव कहै सौभे नहीं। विन पगड़ी सिणगार ॥२०॥ विरोध मत करो कोय। प्रथम फजीती होय। विगाडै दोन्यूइ लोय। घरमै उजाडरै। नेडो कोई आवै नांय। बैठ सब दूर जाय। छेडयां विस फांसी खाय। तोडै प्रहाडरै। लोक केइ करै हास। तप जप होय नास। नरकमै थाय वास। जम काटै नाडरै। जगमै जड़ाव आव। मिनख जनम पाय। वैठो अव गम खाय। मत करो राडरे ॥२१॥ मान करो मत मानवी। जीती गयो न कोय। रावण सरीखो राजवी। वैठो लंका खोय। वैठो। लोकमै भइ फजीती। मंदोद्रसी सती। सातमुख भाखी दूती। बड़ा २ भैया हुइ तो दूजा कुण मात। तीम खंडको अधिपति। मरयो पराये हाथ ॥२२॥ मान थकी माया बूरी। छानै लाय लगाय। गुण सगला भसमी हूवै। चोडै दीखै नाय। चो। वुझैया कैसे अगनी। बड़ा २ नैवस किया। ऐसी माया ठगणी। मुख मीठी हीरदै कठण। जिणतिणसूं मिल जाय। जड़ाव कह अंत्रजलै। चोडै दीखैनाय ॥

सवैया ३१ सा ॥ लोभथी लाज जाय। लोभथी मरजाद जाय। लोभथी कूजस थाय। झूठो खेली हारसी। धंधाइमै धाय। सारो दीन करै हाय हाय। मोडी २ रोटी खाय। रात्यू पढ पारसी। सजनसूं न्हे तोड़ै। हरामीसूं हाथ जोड़ै। फोजनक आग दौड़ै। मरसी कै मारसी। जगमाय धन जेह। माया प्रनाक खेह। कहत जड़ाव तेइ तिरसी कै तारसी ॥२४॥ समै

कहै काठीया चोर ॥ १४ ॥ प्रथम खिम्या धरम । दूसरै लोभ न राखे । होवे सरल सभाव । मान मद दूरा नाखै । हलको द्रवै भूठ मुखसूं नहीं भ'खै । तप संजम सुध ग्यान । सील इमरत रस चाखै । ए दस धर्म अराधसी । ते गुरु लीज्यो धार । जड़ाव निस्ते जाणीए ॥ तिरै सो तारणहार ॥१५॥ जात तणो अंकार । गरव कुल बल को तोलै । लाभ हूवा चढै द्रप । पढीनै वांको बोलै । मोपै लेवो ग्यान । हारो मत जन्म अमोलै । ठकुराइमै जिल रयो । मद छकीयो मगरूर । जडाव कहै सुण जीवड़ा । सिवसुख होसी दूर ॥१६॥ एक करै अणखोड़ । दूसरी लड़ै लड़ाई । तीजी लेवै नींद । चउथी करै बड़ाई । अदविच उठै कोय । पूठ फेरीनै वैसे । सुणै तो सरध नाय । समभावै कैसे । घरको धंधो छोड़नै । मली हुई च्यार । जड़ाव कहै थे आयनै । कांइ काडयो सार ॥१७॥

छंद कुंडलियां । वखाणकी त्यारी हुइ । भेली मिल कर च्यार । माया वांणी भेलसी अव वाताको तांर । अव करै केइ छाने छानै । केइ होय निसंक वरजै तोई न मानै । सतगुरु वाणी वागरै । गावै गलोज तांण । जड़ाव कहे समभाय नै वाया सुणो वखाण ॥१८॥ चेला चेली देखनै । कीज्यो चत्र पिछाण । जिस्या तिस्यानै मूडतां । रहसी खांचातांण ॥१९॥ पछै नहीं लागै कारी । उपजावै असमाध । आतमा होसी भारी । भेख लजासी लोक मै । होय गूंणारी हाण । जड़ाव कहै सुख पामसी करसी चत्र पिछाण ॥१९॥ पहली जोए विच्यारनै । ममत करसी कोय । आद अंत निपजावसी तो सुख साता होय ।

तोसूं दोयको मन मिल जावै। पूछे सुख दुख वात। खावै अरु खुलावै। नेह चिनै मिंत्री कीस्यो। जैसो नीपण छार। जड़ाव कहै सौभे नहीं। विन पगड़ी सिणगार ॥२०॥ विरोध मत करो कोय। प्रथम फजीती होय। विगाडै दोन्यूइ लोय। घरमै उजाडरै। नेडो कोई आवै नांय। वैठ सब दूर जाय। छेड़यां विस फांसी खाय। तोडै प्रहाडरै। लोक केइ करै हास। तप जप होय नास। नरकमै थाय वास। जम काटै नाडरै। जगमै जड़ाव आव। मिनख जनम पाय। वैठो अब गम खाय। मत करो राडरे ॥२१॥ मान करो मत मानवी। जीती गयो न कोय। रावण सरीखो राजवी। वैठो लंका खोय। वैठो। लोकमै भइ फजीती। मंदोद्रसी सती। सातमुख भाखी दूती। बड़ा २ मैया हुइ तो दूजा कुण मात। तीस खंडको अधिपति। मरयो पराये हाथ ॥२२॥ मान थकी माया बूरी। छानै लाय लगाय। गुण सगला भसमी हूयै। चोडै दीखै नाय। चो। वुभैया कैसे अगनी। बड़ा २ नैवस किया। ऐसी माया ठगणी। मुख मीठी हीरदै कठण। जिणतिणसूं मिल जाय। जड़ाव कह अंत्रजलै। चोडै दीखैनाय ॥

सवैया ३१ सा ॥ लोभथी लाज जाय। लोभथी मरजाद जाय। लोभथी कूजस थाय। झूठो खेली हारसी। धंधाइमै धाय। सारो दीन करै हाय हाय। मोडी २ रोटी खाय। रात्यू पढ पारसी। सजनसूं न्हे तोड़ै। हरामीसूं हाथ जोड़ै। फोजनक आग दौड़ै। मरसी कै मारसी। जगमाय धन जेह। माया प्रनाक खेह। कहत जड़ाव तेइ तिरसी कै तारसी ॥२४॥ समै

कर आतमा । भजो प्रमातमा । वंदो देवगरु वेइ । भवजल तारसी । अतिचार याद कर । पाप प्रदूर गरहर । प्रभवसेती डर लाग्यो दोष टारसी । कावगे आवसगे । पांचमेसु चित कर । छटै आवसगे । आगे पछखाण धारसी । आवसग कालो । काल कमाइ जाया लाल । कहत जड़ाव तेइ जनम सुधारसी ॥२५॥

॥छंद धनाश्री॥ छाने चोडे लागे पाप । पछे करे पश्चाताप । हाय २ सेतो जन्म बिगाडोरे । गुरुपे आलोवे दोष । इण भव जावे मोक्ष । सणगारा पावे थोक । संका न लीगारे । वैद गुरु एक सार । साचा बाल्या काडे वार । वैद रोग हारे । गुरु आतमा उधारेरे । द्रबसल एक भूम । साव साले रुम रुम । कहत जड़ाव हीइडा छुब सारे ॥२६॥

॥सवैया २३ सा । कहै लछमी रात । सुणो तुम नाथ । करो कहां बात । महा दुःखकारी । जगमे झोर मच्यो हे सोर । वज्यो तूं चोर तके पर नारी । कांहा गइ बुध, रही नहीं सुध । करेंगे जुध । लहेरी धसारी । कहत जड़ाव । भखसण वलत । नहीं मिटे जगमे होवण हारी ॥२७॥ रावणराय कहे समझाय । मत गबराय ए भील भिखारी । अपणो राज स्हाज सब आपणो । अपणो इलम कर ले कर लारी । आए खड़े रिण भूम धणी बण । लागत हैं ए झोड हमारी । देख करूं घमसाण ॥ अणी अराखु सीत करुं पटनारी । कहत जड़ाव भभीषण बोलत । कहां गइ बंधव अकल तारी ॥२८॥ कर आंख्यां लाल । फुलावत गाल । तिरसुंलो भाल चढ़ाकर बोले । रे कंगाल देउ क्या गाल । बके ज्यूं स्याल । वीर नहीं तूं शत्रु तोले । है क्या माल कछपे

माले । देखाउं ख्याल । जातू काल इतुनके ओले । कहत जड़ाव भभीषण बोलत । साच कथा मा भारत ढोले ॥२९॥ लंकपति कर जोड़ कहे । तुम राम सुणो अरज हमारी । ल्यो सबसाज । करो एह राज । बरो तुम आज ही बाल हमारी । ए मुज आण करो परमाण । खुले सुख खाण । मिले रिध भारी । सीतकी बार फिरो मतलार । ए बांतां मोए लागव खारी ॥३०॥ लिछमण राम कहे । सुण रावण । क्यूं कर बेठो खांचा ताणी । हुं नर क्रोड हजार करे ज्यों ॥ तोये न छोड़ूं सीत राणी । लंपट लाज नहीं बेअकल । बात कहे तूं निपट अयाणी । कहत जड़ाव सखी समजावे । मत खेंचो अब टूटत ताणी ॥३१॥ रणभोम पडयो पत देख मनोदर । बाप पंखी जीम चंरक डाला । सुध न रही तन भूखण की । टूट गई मोतनकी माला । खिण एक अंतर चेत भयो जब । नेणामें नीर बहे परनाला । धिरग पड़यो संसार समुदर । डूबत हे नर मोवत वाला ॥३२॥ रहे गये धाम निकल गये साम । पडे रहे काम अरु राज रसाला । सालवसाल उठे तन झाल । भया क्या ख्याल । झुरे सब बाला । हांहां गई सब बात । रही नही आथ । भया मुख काला । कहत जड़ाव सती इम बोले । लेउ बैराग तजुं जंजाला ॥३३॥ तनकी तिसना तनक । भोगसें निरपत थाये ॥ मनकी ममता बोत निकारो अंत न आवे ॥ लपटे पल २ भाव ग्यान बिन थाग न पावे । हे कोई जगमें जब रसवर से मन समजावे । पांख बिने उड जात है । पूछे कोडा कीस । फिर फिर फेरा खात है । ऐसा मन बेहोस ॥३५॥ बिना विचारया बचन । सजनक कदी मत

बोलो । देख नफारो डाव । गांठ हीरनकी खोलो । बेचो मुंगे मोल । ज्ञान तराजु तोलो । करल्यो धर्म दलाल । लाभको लावो लेलो । बिन मतलब झुकता रहे । सो कीणही न सुवाये । मीठा मधुर बोलतां सबहीके मन भाया ॥२५॥ ए काया किरतार । मिली किम दुख देवाने । उठ सवारे राड मरे खावाने । तप जपसूं नहीं प्यार । त्यार फेरे जावाने । खाली करने पेट फेर बैठे नावाने । चरचे तेल फुलेलसूं सबके लागी केड । जड़ाव कायाकुंजडी । बिन मतलब मत छेड़ ॥२६॥

॥छंद धनाश्री॥ महा ब्रत जती धर्म । संजम द्यावच विरचे । नाण तीननपे वारे । क्रोधादीक ४ है । चरण करण धार । सुमत गुपत लार । पडमा वारे भावना । इंद्री विखटा रहे । पचीस प्रति लेखणां । आरादीगवेखणा । कहत जड़ाव । त्यार अभिगर उदार है।

सवैयो सवायो कीयो । धनासरी नाम दीयो । साधूजीरा एकसो चालीस । गुण सारहे ॥२७॥ प्रथवी अपतेउ वाय । सात सात लाख काय । चौइस लाख हरी । वेर विकलंद्री विच्यारसी । नरक तिरजंच देव । चार चारलाख भेव । मनुस चत्रुदस । लाख इम चौरासी । ज्यांनै चापी चूरी होय । राग द्वेष कियो कोय । तीन करण तीन जोग । मित्री भाव कीजीए । अठारा लाख चौइस हजार । एकसोने वीस बार । कहत जड़ाव नित मिछया दुकडं दीजिए ॥ २८ ॥ नरमाइ दिल्लीकी । करडाइ किसनगढ । मरोड मेड़ताकी । ठकुराइ जोधपुर धारी है । रहण अजमेर । खाण बीकानेर सहर । कमाइ कीलकतै । मोज मंमाइकी न्यारी है । गंभीरी गुजरात । उमीरी आगरे । बसी लाज मरजाद । मारवाड़

देस प्यारी है। कहत जड़ाव। यामे कयो एक २ भाव । जैपुरकी जलूस देख। सुरग पूरी हारी है ॥३९॥ एक करे गुण गीराम। कहे ए मोटा नाणी। एक वैदे ए ठोठ। कहे छोरा जीम काणी। एक नमावे सीस। दान देवे हित आणी। एक करे उपहास। अठ नहीं धोवण पाणी। दो इस्मकः लेखवै। सोही साध महंत जड़ाव कहे। तिरसी सही। करसी भवनो अंत ॥४०॥ मैंहूं अधम अपार। साह्य करतार हमारी। जनम मरणकी जोड़। खोड़ मोए लागत खारी। जरा फिरि चोफेर। हेर बुध खोइ सारी। प्रबल चार पखाया। आतमा करेज भारी। एह अवसता हो रही। पर गुणके परभाव। जड़ाव कहे कैसे तिरे। पाणी अदबीच भाव ॥४१॥ दान मान दीनो न। प्रभु नाम न लीनो। धन धन कीनो दिन धंधाइमें जाता हे। पापमें प्रबीनो। देइ दम वापें दीनो। परख नगीनो। रोटी मोड़ी मोड़ी खात है। नरभव पायो। सब अफल गमायो। ऐसो माइ पूत जायो। फूल फूल जात है। पून को खजानो लायो। हरख हरख खायो। फेर ने कमायो। माय खाली होय जात है ॥४२॥ दानथी मान वदे। जग मित्र। सील थकी सीव संपत पावे। तप खापावत कर्म पुरातन भाव थकी सव। भरम पूलावे। दया धरे सबसे सम भावज। खिम्या सकल क्लेस मिटावे। एह खाटकी सुण होत जड़ाव। पिण सबहीमें भाव मिलावे ॥४३॥

॥ सवैया इकतीसा। प्रथम प्रणातीपात झूठ बोले सुख खात। चोरी करे आधी रात। कुसील झंभालरे धन धान नहीं थोभ। करोध मान माया लोभ। राग धेक कलह। परसिर देवे

बोलो । देख नफारो डाव । गांठ हीरनकी खोलो । बेचो मुंगे मोल । ज्ञान तराजु तोलो । करल्यो धर्म दलाल । लाभको लावो लेलो । बिन मतलब डुकता रहे । सो कीणही न सुवाये । मीठा मधुर बोलतां सबहीके मन भाया ॥३५॥ ए काया किरतार । मिली किम दुख देवाने । उठ सवारे राड मरे खावारने । तप जपसूं नहीं प्यार । त्यार फेरे जावाने । खाली करने पेट फेर बैठे नावाने । चरचे तेल फुलेलसूं सबके लागी केड । जड़ाव कायाकुंजडी । बिन मतलब मत छेड़ ॥२६॥

॥छंद धनाश्री॥ महा व्रत जती धर्म । संजम व्यावच विरचे । नाण तीननपे बारे । करोधादीक ४ है । चरण करण धार । सुमत गुपत लार । पडमा बारे भावना । इंदरी निखटा रहे । पचीस प्रति लेखणां । आरादीगवेखणा । कहत जड़ाव। च्यार अभिगर उदार है।

सबैयो सवायो कीयो । धनासरी नाम दीयो । साधूजीरा एकसो चालीस । गुण सांरहे ॥३७॥ प्रथवी अपतेउ बाय । सात सात लाख काय । चौइस लाख हरी । बैर विकलंद्री विच्यारसी । नरक तिरजंच देव । चार चारलाख भेव । मनुस चत्र दस । लाख इम चौरासी । ज्यांनै चापी चूरी होय । राग द्वेष कियो कोय । तीन करण तीन जोग । मिंत्री भाव कीजीए । अठारा लाख चौइस हजार । एकसोने बीस बार । कहत जड़ाव नित मिछया दुकडं दीजिए ॥ ३८ ॥ नरमाइ दिल्लीकी । करडाइ किसनगढ । मरोड मेड़ताकी । ठकुराइ जोधपुर धारी है । रहण अजमेर । खाण बीकानेर सहर । कमाइ कीलकतै । मोज मंमाइकी न्यारी हे । गंभीरी गुजरात । उमीरी आगरे । बसी लाज मरजाद । मारवाड़

देस प्यारी है। कहत जड़ाव। यामे कयो एक २ भाव। जैपुरकी जलूस देख। सुरग पूरी हारी है ॥३६॥ एक करे गुण गीराम। कहे ए मोटा नाणी। एक वैदै ए ठोठ। कहे छोरा जीम काणी। एक नमावे सीस। दान देवे हित आणी। एक करे उपहास। अठ नहीं धोवण पाणी। दो इस्मकर लेखवै। सोही साध महंत जड़ाव कहे। तिरसी सही। करसी भवनो अंत ॥४०॥ मैंहूं अधम अपार। साह्य करतार हमारी। जनम मरणकी जोड़। खोड़ मोए लागत खारी। जरा फिरि चोफेर। हेर वुध खोइ सारी। प्रबल चार पखाया। आत्मा करेज भारी। एह अवसता हो रही। पर गुणके परभाव। जड़ाव कहे कैसे तिरे। पाणी अदबीच भाव ॥४१॥ दान मान दीनो न। प्रभु नाम न लीनो। धन धन कीनो दिन धंधाइमें जाता हे। पापमें प्रवीनो। देइ दम वामें दीनो। परख नगीनो। रोटी मोड़ी मोड़ी खात है। नरभव पायो। सब अफल गमायो। ऐसो माइ पूत जायो। फूल फूल जात है। पून को खजानो लायो। हरख हरख खायो। फेर ने कमायो। माय खाली होय जात है ॥४२॥ दानथी मान वदे। जग मित्र। सील थकी सीव संपत पावे। तप खापात्रत कर्म पुरातन भाव थकी सव। भरम पूलावे। दया धरे सबसे सम भावज। खिम्या सकल क्लेस मिटावे। एह खटही सुण होत जड़ाव। पिण समहीमें भाव मिलावे ॥४३॥

॥ सवैया इकतीसा। प्रथम प्रणातीपात झूठ बोले मुख खात। चोरी करे आधी रात। कुसील झंझालरे धन धान नहीं थोभ। करोध मान माया लोभ। राग धेक कलह। परनिंद देव

आलरे। पिसुन पराइ नाद। बोले परपरावाद। रीत अरित वदै। होय सुखमालरे। माया मोसो मिथ्या जेल। प्रै वचन देवे ठेल। कहत जड़ाव। पाप दूरी देवो टालरे॥ ४४॥ धर्म धर्म कीनो। मर्म तो नही चीनो। फोगट जनम लीनो। खारे जिम पानरे। कुगुरुका लाग्या कान। छोटो जाणे आसमान। ज्यां न देवे दान मान। चावे वीडां पानरे। हिंस्या करी धर्म जाण। खोटो मत लियो ताण आगीयाने केवे भाण। लागी एक धुनरे। नरभव पाया सो तो। गिणती न आया भाया। कहत जड़ाव जिम अंक बिन सुनरे॥ ४५॥ सारामें सिरदार सार। दोत तब कहीए। जीव अजीव पिछाण पूनथी सुरगत जइए। पाप अठारा छोड़। आश्रवथी भारी थैए। संम्बर पद निरवाण। निरजरा दोविद् होइए। बंध थकी ले ताण। मोखसूं सब सुख लइए। ए नव तत्व ओलखे। सोइ जंवरी भाण। जड़ावजीकानग जडों। खोटाथी नुकसाण॥४६॥ करोधे खिम्या जाय। मान नरमांइ नासे। माया तोडे प्रीत। लोभ सब काज विणासे। ए चारुं चंडाल। जाण मत राखो पासे। मीठा ठग दुख दाए। पून पूंजी ले जासे। चारुं मिलकर चोगया। नव फिर जासी लार जड़ाव कहे तूं एकलो। कुंण चढ़ला व्हार॥ ४७॥ सचत द्रव बीगै। पनी तंबोल वणी जे। कुसम वाण सेण। वध मरजादा कीजे। वले पण बहू भेद। अभमरो ढालो दीजे। खट दीस नावण दोए। भात पाणी तो लीजे। ए चवदा पछखाणने। जाण के करसी कोई। निरते जाण जड़ाव। परमपद लेसी सोई॥ ४८॥ प्रथम साजे सून। दूसरे जावे उठी। और चलावे वात। कोटने करे अफूटी। नेणा न

मेले मीट। द्रस्टी नीची कर रूके। परहूं मांडे पीत। आपहूं रीत न राखे। सजन जैसा जाणने। मत जाचो वारंवार। जड़ाव कहे जग जाणीए। ए पांचूनाकार ॥४६॥ देखी सामो जाय। आया आसणथी उठे। नैणां बरसे नेह। आद्र दे सनमुख बेठै। खोल हीयारी गांठ। बोले मुख मीठी वाणी। पूछे सुख दुख वात। धाये भोजन अरू पाणी। सजन जैसा जाणनै। रहिए उनका दास जड़ाव कहे जन जाचती। पूरे मनकी आस ॥५०॥ तिररे२तिररे। कैसे तिररे। नर देह धरी करणी न करी। ममता न मरी। खाया खररे। गरू संग भइ। हित सीख दई। अब मान कइ। आया मररे। जैपुर मांय जड़ाव कहे। तिररे२यांसे तिररे ॥५१॥ धिगरे २ किणकूं धिगरे। नहीं दान दिया। अभिमान किया। मधुपान पीआ। खाया डीगरे। परपिराण लिया। राखी न दया। अभ जाण भया। भूटा जगरे। जैपुरमांय जड़ाव कहे। धिगरे २ तिणकूं धिगरे ॥५२॥ धनरे२किणकूं धनरे। जिन दान दिया। नहीं मान किया। प्रभू नाम लिया। तायां तनरे। उपगार किया। जग जस लिया। सम रस पीया। मार्यो मनरे। जैपुरमांए जड़ाव कहे। धनरे २ उणकूं धनरे ॥५३॥ लडरे२किणसूं लड़रे। करमनका घेर लिया। घौ फेर लिया। समसेर सज्या सररे। वणो अवसेर। करो मत देर। लेवो सब हेर। चला कररे। जैपुरमांए जड़ाव कहे। लड़रे २ इणसै लड़रै ॥५४॥ सांजकूं अघाय भाय। रात दूध पेड़ा खाय। सुंतो सुख सेजमांय। परभाते लागी भूखड़ी। विवद भोजन आण। पीरस्या वहु पकवान। गंगा-जल पीओ छाण। दो फेरा आवे सुखड़ी। खाय कीयो मीठो

थूंक। पान बीडां चावे मुख अजुये न भागी भूख जरा आइ ढूकड़ी। मनुप जनम पाय। खोय दियो खाय खाय। कइत जड़ाव तोइ। भूखे काया कूकड़ी॥ ५५॥

॥ छंद कुंडलिया। व्याव मत कर बावला खोड़े पड़सी पाव। खीली देसी खांचने। न्हास कडीने जाय। ना आय कर दोल्या। फीरसी लेसी लाटो लूंट। जाय दुख कीणने कैसी। पहेला कह्यो न मानियो। अब बैठो पिछताय। जड़ाव कहे प्रणो मती। खोड़े पड़सी पाय॥ ५६॥ पांचू वैरण जीवकी। पुन खजानो खावै। नवो न संचे नीच। कीचमें रतन गमावे। ठाली होय नहीं ठोट होठ बैठो। लपकावे। देख प्राया लाड। मूढ मनमें पिसतावे। रोयां गरज सरे नहीं। चेत सके तो चेत। जड़ाव कहे स्रतो किस्यूं। चिड़िया चुग गई खेत॥ ५७॥

॥ दोहा॥ छंद छपनीएहमें। प्रसतावीक उपदेश। नून इदक अणसोभतो। कवि जिन कीज्यो खेस॥ ५८॥ पूज वीनेचंद पाटवी। रतन मुनी समदाय। रंभाजी हुवा गुण मणि। मरुधर मंडलमांय॥५९॥ तासदास जड़ावजी। बोले वे कर जोड। विना समज कविता करुं। ए मुज मोटी खोड़॥ ६०॥ अढ़ारसें अठावने। जैपुरमें चौमास। नथमलजीरा बागमें। एह कियो अभ्यास॥ ६१॥

प्राणी पाप न किजीए। डरतो रइए दूर। हंस्यारा फल पाडवा। लागे हाथ हजूर। ला०। भूरसी परभोमांइ। सहसी घणो संताप। कदे नहीं मिलसी सांइ। जड़ाव कहे करुणा करे। सोई सांचा सूर। प्रा० प्राणी पाप करो मती। मनुप जमारो

पाय। विन भुगत्यां छूटे नहीं। पछे घणो पिसताय। होयगी घोत खराबी। रूइ लपेटी आग। तिका किम रह ला दाबी। दाबी दूबी न रहे। निसते प्रगट थाय। प्राणी पाप करो मती मनुष जमारे आंय ॥ २ ॥ इति छंद छपनी समपूर्णः।

॥ श्रावकारो चौढल्यो लीख्यते

। दोहा। अरिहंत सिध समरु सदा। आचारज उवभाय। श्री गुरुपद पंकज भणी। वंदू सीस नमाय ॥१॥ साधुने श्रावक तणा। सब गुण कइयानजाय। पिण किंचित वरणन करुं। कहेस्युं ढाल बनाय ॥२॥

ढाल पहेली। देसी वेग पदारोरे महेलथी। तुंग्या नगर सुहावणो। इंद्रपुरी सम भाख। लोक सहु सुखिया वसे। सूत्र भगवतीरी साख ॥ १ ॥ श्रावक करणीरा घणी। आंकड़ी। वसै तिहां महा भाग। हाड–मीजी धर्मसुंरगी। देव गुरांसू राग। श्रा० ॥२॥ भवनादिक रीध सोभती ॥ रथ घोड़ा सुखपाल। धन्य धान धीणो घणों भोगवे भोग रसाल ॥श्रा० ॥३॥ नव ततव निरणों कियो आगम अर्थ पिछाण। स्वमत परमत धारणा। स्हाणां चत्र सुजाण ॥ श्रा० ४ ॥ गिण माधण मामेजमा। इत्यादिक वोपार। निंदनीक जो लोकमें। तेह तणो परिहार ॥श्रा० ५ ॥ वारे वरते विवेकसूं। पाले निर अतिचार ॥छ पोसे करे मासमें। चवदा नेम चीतार। श्रा० ६ ॥ साधु साधर्मी तणी। ले नित सार संभाल। मातपिता सम दाखिया। चौथे ठाणे दयाल। श्रा० ॥ ७॥ समकितमें सेठां गया। दीरग द्रष्टी वहु जाण। डिगाया डीगे नहीं। देव चलावे आण। श्रा० ८ ॥ भात पाणी वहु निपजे। कमीय न दीसे कांय।

वचे सो नाखे वारणे । काग कुत्ता पशु खाय । श्रा० ८ ॥ अभंग दुवार रहे सदा । प्रतिलाभे निरदोष । वैमुख जाय सके नहीं । पामें सर्व संतोक । श्रा० १०॥ गुण एकवीसे सोभता । बाराई विरदावमें । उपगारे धन वावरो । चूके नहीं जसदाव । श्रा० ११॥ गरू छे श्री विरधमानजी ।। ज्यारी आग्या प्रमाण । चाले सुध व्यवहारमें । छ अवसररा जाण । श्रा० १२ ।

ढाल दूजी। देसीजीलारीछे। तिण अवसर श्रीपासतणा रिखरायाहो सुखकारी मुनिराज । विचरत२तिणहीज नगरी आयाहो । मुनी ।१। पंच सया प्रचार मुनि । गुण दरियाहो । सुं । फुफबइ उद्याने आय उत्तरिया हो । मू० २ । पंच महाव्रतधारी । सुध आहारी हो । सुं । सूरत प्यारी ज्यांरी । हूं बलिहारी हो । मू० ३॥ क्रोध मान माया सव ममता मारी हो । सु । अभिग्रहधारी तपसी महा ब्रह्मचारी हो ॥ मू० ४ ॥ ग्यान दरसण चारित्र विविध । गुण भरिया हो । सुं । त्यागी बैरागी पाले । निरमल क्रिरीया हो ॥ मू० ५ ॥ जातवंत कुलवंत । महा बलवंत हो । सुं । इत्यादिके गुण कहेतां न आवे अंत हो ॥ मू० ६ ॥ ससि जिम सीतल । रविजिम तेज सवायो हो । सुं । दरसण देखी भवी जिन । आणंद पायो हो ॥ मूं० ७ ॥

ढाल तीजी । दोहा । हुइ वधाई सहेरमांहे हरख्यां बहु नरनारे । सवको थया उतावला । देखण गुरु दीदार ॥ १ ॥ रतनमुनी मारे मन वस्यां तथा जीदवारी । श्रावक मिलिया एकठा वोले वचन रसाल धन दीयाडो आजरो । फलीय मनोरथ माल । चालोरे श्रीगुरु वंदवा । आंकड़ी ॥ १ ॥ गुरु

घंदा पातक झरे। होवे परम किल्याण। जीवादिक नव बोलरी। थावे सर्व पिछाण ॥ चा० २ ॥ कामभोग संसारमें। दुरगतना दातार। संगत करतां साधरी निस्ते खेवो पार ॥ चा० ३। टोले टोले नीसर्या। जाणेती जति वार। पंच अभिगम साचवी। वंद्यां वारंवार ॥४ निरखेरे गुरु दीपारने। जाणे पूनमचंद। भवक चकोर निहालने। पाया परम आणंद ॥नी० ५॥ आगार नै अणागारना। धर्म तणा दोय भेद। भिन भिन भाव वखाणिया। सुणयां चित उमेद ॥नी० ६॥ हाथ जोड़ करे बिनती। नीचो सीस नमाया। शूं फल तप संजम तणो ॥ भाखो श्री मुनिराय ॥नी० ७॥ संजम रोके कर्म आवता। तप करपूर वहाण तो सरग जावे किम साधजी। भाखो एह निनाण ॥नी० ८॥ तप संजम सैरागथी ॥ पूरव कर्म बली संग। चितधर चार मुनीसरु। उत्तर दियो निसंक ॥नी० ९॥ भलो फुरमायो किरपा करी। समज गया मनमांय। दीनी तीन प्रदिक्षणा। आया जिण दीस जाय ॥नी० १०॥

डाल चौथी ॥ देसी करहा चाले उतावलो। पगड़े आई गणघोर। ग्राम नगर पूर विचरतांजी। आया वीर जिणंद गोतम गणधर आद देजी। साथे मुनिवर वीरंद। वीर पधारीयाजी। राजगरी उद्यान ॥आ० १॥ वेलारो छै पारणो। जी गौतमरे तिण दीन। अवसर उठां गोचरीजी। लोक कहे धन धन ॥वी० २॥ ऊंच नीच मिझम कूलेजी। फिरता घर घर वार। गली गली वैजारमें। जीइम बोले नरनार ॥वी० ३॥ तूंग्यां नगरीरा वागमें। जी पास तणा अणगार। श्रावक प्रसण पूछिया। जी भाख्यो सउ विसतार

॥वी० ४॥ सुण गौतम एह वारता जी वीसम थयो हे अपार। पूरण जाण पाछा फिर्या। जी पूछ करू निरधार ॥वी० ५॥ आहार दिखायो वीरने। जी जोडया दोनूं हाथ। समरथ पास संतानीया। जी भाखो श्री जगनाथ ॥वी० ६॥ कर्म वंदसे राग थी। जी थावे देव विमाण। तप संजम आतम भावथी। जी निस्ते पद निर्वाण ॥वी० ७॥ श्रावक अति निपुण छै। जी चरचामें सरदार। जीती सके नहीं देवता। जी मनुष तणो सूं भार ॥वी० ८॥ वीर कहे हां गोयमा। जी साधू चत्रु सुंजाण। क्रग्या जारी निरमली। जी बोले निरवद वाण ॥वी० ९॥ हूं पिण इम परुपणा। जी करुं कराउ सोय। राग द्वेष दोए वंधने। जी तोडयां सिव सुख होय ॥वी० १०॥ कर जोड़ी गौतम कहे। जी भलो निकाल्यो तार ॥ चत्रु ढाल संपूरण थई। जी प्रसणारो अधिकार ॥वी० ११॥ नून इदक सूत्र थकी। जी ह्रस्व दीर्घको विरुद्ध। मिछया दुकडं तेहनो। जी कवि जिन कीज्यो सुध। वी० १२॥ पूज रतन समुदायमें ॥ जी रंभाजी गुणधार। तास प्रसाद जड़ावजी। भाख्यो एह अधिकार ॥वी० १३॥ १९सें एकताल्लीसमें। जी जैपुर सेखे काल। फागणवद तिथ तीजने। जी करी संपूरण ढाल ॥वी० १४॥

अनाथीजीरी ७ ढाल लीखीए छीए

॥दोहा॥ रिखभादिक महावीरजी। वंदु वे कर जोड़। विहरमान गुणधर सभी। केवली प्रत्येक कोड़ ॥१॥ सिध रिध नौनिध करो। आपो वुध रसाल। धर्म आचारज आद दे। वंदू मुनि तिरकाल॥२॥ उतराधेने वीसमें॥ अनाथी अधिकार। श्री श्रेणिक

समकित लइ । वीर कियो विसतार ॥३॥ तिण अनुसारे हूं करूं । उतमरा गुण ग्राम । सरसत मात मया करी । अकसर आयो ठाम ॥४॥ विना पूछ उद्यम करूं । ए मुज मोटी भूल । पिण सतगुरु संनिध करी । होवे काम कबूल ॥५॥

ढाल पहेली ॥ देसी जंबुजीरा तावनरी । तुम प्रवारी । मगददेस राजगरी नगरी । भूमांम्रण सोर टीकी । सेणकराजा राज करे छे । प्रजा पाले नीकी ॥१॥ मुनि वड़भागी ज्यारी सूरत मुगत से लागी वड़ा वेरागी । आंकडी ॥ २ ॥ नहीं दूरो नजीक नगरसूं । मंडी कुछ उद्याने । खट ऋतुनां फलफूल तरु तले । धरियो अनाथीजी ध्याने ॥ मु० ३ ॥ सैणकराजा सहल करणने । कर असवारी त्यांरी । हाथी घोड़ा रथ पाएकसूं । आया वन मोझारी ॥ मु ४ ॥ ऐस करतां फिरतां फिरतां देख्यां मुनीवर तेह । आयो मोदन भूला विनोदे । जाग्यो अधिक सनेह । मू० ५ ॥ अहो २ इचरज वरण तुमारो । हो २ रूप मुनिको । अहो २ खंती सोम ससि जिम । दरसण पायो नीको ॥ मू० ६ ॥ अहो २ मुनि लोभ कियो दूरो । वेरागी भरपूरो । विध्याधर कोई राजपुत्र हे । छाती धर नेर सुरो ॥ मू० ७ ॥ सुभ लत्तण सरीर विराजे । तपस्या कर तन तायो । प्रदत्तणा हाथ जोड़ने । सैणक सीस नमायो ॥ मू० ८ ॥ दोहा । वीनो करी मुनीसूं कहे । सांभल कीरपानाथ । इण अवसर घर किम तज्यो । कहो तुमारी वात ॥ १ ॥ तरुण अवस्ता आपकी । भोग जोग सरीर । ध्यान वीचे पूछा करुं । माफ करो तकसीर ॥ २ ॥

ढाल दूजी । देसी दसमी काणकी दूसरी । दीत्ता दोयली

आदरीजी । काम भोग फल छंड । इणने मिलती छे । ध्यान खोल मुनीवर कहेजी । सांभल प्रथवीनाथ । रक्षा करणवालो नहीं रे । कोई मारे माथे नाथ हो राजींद्र सांभल पूरव बात ॥ आकडी । १ । तिण कारण संजम लियोरे । अब में हूवो सनाथ । सेणक सुंण विसम थयोरे । अहो २ इचरज बात हो ॥ रा० २ ॥ रुप संपदा कारमीरे । जननी मारी भार । इस्या पुरस दुखिया थयारे । भूल गयो किरतार हो ॥ रा० ३ ॥ दुख मेटू हीव एहनोरे । तो मारो सेणक नाम । नाथ होस्यूं में आपरोजी । पुरु सगली हांमसो मुनिवर चालो हमारी साथ ॥ ४ ॥ मात पिता सुत भारे ज्यारे दास दासी परिवार । खाणो खरची पूरस्युंरे कमीय न राखूं लीगार हो ॥ मूं० ५॥ दुलभ नर भव पामियोजी । सफल करो मुनीराय । सुख भिलसो संसारनांजी । मारा छत्रनी छांय हो ॥ मूं० ६ ॥ वलता मुनीवर इम कहेरे । सांभल राजंन बात । नाथ होसी तुं केहनोरे । पोतइ आप अनाथ हो . राजींद बोलोनी बचन विचार ॥ ७ '। बचन अपूरब सांभल्योरे । दुख पायो महीपाल । रुप रुड़ो गुण बायरोरे । अलीक बदै पंपाल मू० ८ ॥ अथवा ए रीध माहरी रे । जाणे नही महा भाग । तो हीव एहने बतावसूंरे । तब बोल्या धर राग हो ॥ मू० ९॥ अहो मुनी मुज नवी ओलख्योरे । सेणक मारो नाम । देस मगधनो अधिपतिजी । एक कोड इकीतेर लाख गरामहो ॥ मू० १० ॥ तेंतीस २ से सैनीजी । हयवर गयवर जोड़ । संगरामीके रथ एटलाजी । पायक तेंतीस कोड़ हो ॥ मूं० ११ ॥ अंतेवर प्रवारसुंजी । भाई बेटा जाण । मोटा मोटा महीपतिजी । आण

करे प्रमाण हो ॥ मूं० १२ ॥ गढमढ मंदिर सोभताजी । भरिया द्रवै भंडार । बाग बगीची बावड़ीजी नाटकना धूंकार हो ॥ मूं० १३ ॥ इण अनुमाने जाणजोजी । रीधतणो विसतार । मुजने अनाथ किम जाणियोजी । हुं तो प्रत्यक्ष देव अवतार हो ॥ मूं० १४ ॥ आपणां गुण निज मुख थकीजी । करतां आवेलाज । पिण रीध दिखाई आपनेजी । रखे जूठ लागे मुंनिराज हो ॥ मूं० १५ ॥

॥ दोहा ॥ हंस कर बोल्या मुनिवरु । सांभल नर नाथ । अनाथपणो जाणे नहीं । किण विध होय-सनाथ ॥ १ ॥ तो भाखो कीरपा करी । जोडया दोनूं हाथ सुंणसुं चित लगायने । इचरज वाली बात ॥ २ ॥

ढाल २ जी । देसी चोपन चौमासारी । रतन मुनीसर मोटका । तब बलता मुनीवर कहे । जी कांइ तब. । तुं सांभल हो राय चतुर सुंजाण । रीध संपदा कारमी । कोइ राचे हो नर मूढ अयाण सुण सुण पूरब बारता ।आंकडी ॥१॥ कोसंबी नगरी भली । जी कांइ कोसंबी० । पुर पाटण रीया भेदण हार । होड करे सुरलोकनी । तिहां कमला हो लीनो अवतार ॥सं० २॥ अन धन करने दीपतो । जी कांइ अन०। जस कीरत हो फैली अभिराम पिता बसे तिहां माहरो धन संचे हो गुणने पै नाम ॥ सुं० ३॥ भवनादिक रीध सोभतीजी कांइ भव० । रथ घोड़ा हो । बहु दासी दास । गज सके नहीं तेहने । सुख संपन हो कर भोग विलास ॥ सं० ४ ॥ थइ वेदना आंखमें । जी कांइ थइ० । अति करकस हो मासूं सहीए न जाय । रोम रोम अंग पीडती । कर्मनकी

हो गत कही न जाय ॥ सं० ५ ॥ वैरी बाप भाई तणो । जी कांइ वैरी ० । कोई घाले हो मस्तकमें घाव । इंद्र वजर सम व्यापती । अति दारुण हो ग्यानी गम भाव ॥सं०६॥ मात पिता चिंता करे॥ जी कांइ मात० ॥ बिल बिलतां हो दुखमें दिन जाय । वेन भाई छोटा वड़ा कोई वेदन हो नहीं लीनी वटाय ॥ सं० ७ ॥ तिण कारण अनाथ छूं आंकड़ी फीरी छे। नारी प्यारी जीवसूं । जी कांइ नारी० ॥ नहीं न्यारी हो सदा रहेती हजूर । खानपान भूक्तण तज्या । छिण मात्र हो नहीं रहेती दूर ॥ ति० ८ ॥ नेण भरे आंसू भरे । जी कांइ नेण० उर सींचे हो जिम सुको बाग । अंजन मंजन सव तज्यां । मुज ऊपर हो पूरो अनुराग ॥ ति० ६ ॥ तो पण मारी वेदना । जी कांइ तो० । छिण मात्र हो नहीं लीनी तेह । तिण कारण अनाथ छुं । जगमां ए हो जूठो सनेह ॥ ति० १०॥ वैद विचित्तण आविया । जी कांइ वै० ॥ धन खरचे हो वहु किया उपाय । तिल भर गरज सरी नही । कर्मसूं हो कोई जोर न थाय ॥ ति० ११ ॥ मन फाटो संसारसूं । जी कांइ मन० दुखमां ए हो धर्मनो आधार । जो मुज वेदना उपसमे । रिध त्यागु हो पूछी परवार ॥ ति० १२ ॥ इम कहेतां वेदना गई । जी कांइ इम० । हुइ साता हो मुज आइ नींद । घरका देव मनावतां । हूं वणियो हो वैरागी वींद ॥ ति० १३ ॥ हाथ जोड़ कहेतां तने । जी कांइ हाथ० । दो अग्या हो सुणी थया उदास । कुटम सहु समझायने । व्रत लीनो हो तोड़ी मोहपास ॥ ति० १४ ॥ निज आतम निसतारवा । जी कांइ निज०। में हुवो हो छ कायारो नाथ । अनाथपणो दूरो कियो । भावारथ हो समझो नर नाथ ॥ ति० १५॥

॥ दोहा ॥ समझ गयो हो म्हा मुनि । थें छो मारा नाथ । करी अवग्या आपरी । मैं मूर्ख साक्षात ॥१॥ कर कीरपा मुज ऊपरे । मेटो मारो भरम । षट दरसणमें कुणसो । तारक साचो धर्म ॥२॥

। ढाल चौथी । देसी घोड़ी आइ थारा देसमें मारुजी । निज आतम निजवस करो । महाराजा । पर आतमकूं पिछाण हो । समता प्रमाद मत सेवणा । माहां धर्म दयामें जाण हो बुधवंता । धर्म सुध ओलखो माहाराजा । आंकणी ॥१॥ देव निरागी जगत सुं । मा । नहीं मछर नहीं सेव हो । माहा । दोष अठारा ज्यामे नई ॥ माहा ॥ सोइ देव तूं सेव हो ॥ माहा ॥ धर्म० २ ॥ सिध सिवपुरमें सासता ॥ माहा ॥ जनम मरण दिया छेद हो माहा । जोतमे जोत विराजिया ॥ माहा ॥ देखे जीवारी खेद हो ॥ माहा ॥ मिथ्या मत छोड्यो ॥ माहा ॥धर्म० ३॥ ओलख जीव छ कायना ॥ आणो मन वैराग हो ॥ माहा ॥ न्यारा रहो प्रपंचसूं ॥ माहा ॥ देव गुरुसूं राग हो ॥ माहा धर्म० ४ ॥ ममता न कीजे राजनी ॥माहा॥ समता रस भर झुल हो । माहा । अणकंपा पर जीवनी ॥ माहा ॥ ए ही धर्मरो मूल हो ॥ माहा ॥ धर्म० ५ ॥ निस्ते देव गुरु आतमा । माहा भुगते निज कृत कर्म हो ॥ धर्म० ५ ॥ तारे डुबोवे आतमा ॥ माहा ॥ छोडी मिथ्यामत भर्म हो ॥ माहा ॥ ॥धर्म०६ ॥ नंनण वन कुड सांवली । माहा । वेतरणी कामधेण हो । मै० । सुख दुख करता आतमा । महा । आप दुसमण आप सेण हो । मै । धर्म० ७ ॥ भेख देख मत भूलज्यो। माहा । भेखना भेद अनेक हो । गाहा । दूध गाय ने आकनो । माहा । अंतर होए विशेष हो । माहा ॥ धर्म० ८ ॥ नावा पथर काठनी

। माहा । सुगुरु कुगुरु तिम जाण हो । माहा । डूबे डबोवे औरने । माहा । दोयांरी करज्यो पिछाण हो । माहा । धर्म० ६ ॥

। दोहा । गुण बिन गुरु कहाविया । गरज सरै छीगार । कीरीयामें कायर हुवा । वे तिरन तारणहार ॥ १ ॥ सुमत गुपतरी खप नहीं । नहीं संजमरी ठीक । तप जप ऊपर चित नहीं । फिर फिर मांगे भीख ॥ २ ॥ कहूँ जरासी बानगो । कुगुरु काला सांप । मत छेड़ो हो मही पति । अलगा रहिए आप ॥ ३ ॥ पिण ओलखाण कीजिए । सुगुरु कुगुरु की जोय । राजहंस बिन कुण करे । खीर नीरकूं दोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५मी ॥

। देसी आछेलालनी छे । नहीं छोड़े आधाकरमी आहार । वस्त्र पात्र सज्या संथार । आछेलाल । अगनी तणी दीनी ओपमाए ॥ १ ॥ कष्ट सहे चिरकाल । मूंडे मस्तक माल । आ । शीत ताप तिरखा सहीजी ॥ २ ॥ पोली मुठी असार । नहीं संजमरो सार । आ० । भेख पूजावे लोकमें ए ॥ ३ ॥ काच पात्र सम होय । पारे पूलेवे जोए । आ० । मोल न पावे सारखोए ॥ ४ ॥ शस्त्र बीख ताल । मारे ते ततकाल । आ० । तो पिण एक भवमें वे हणेए ॥ ५ ॥ कुगुरुनो उपदेस । घाले मिथ्यातनी रेस । आ० । नरक निगोद भमावसीए ॥ ६ ॥ कंठनो छेदक थाय । थोड़ोसो अहित कराय । आ० । तिणसूं इधक बेरण आतमा ए ॥ ७ ॥ जोतक निमित उचार । भाखे सुपन बिचार । आ० । जंत्र मंत्र ओषध जड़ीए ॥ ८ ॥ महिमा पूजा काज । नहीं लोकारी लाज । आ० । पेट भराई सुखे करे ए । ॥ ९ ॥ नहीं मरजादा काण ।

अपछंदा अयाण । आ० । देव गुरांसूं वेगलाए ॥ १० ॥ लागी भगवंतनी छाप । बण बैठा वेटारा बाप । आ० । जाणे बकरा मंडी तणा ए ॥ १२ ॥ इण एनाणे जाण । परख करो महिराण । आ० । कुगुरु कदे नहीं तारसीए ॥ १३ ॥ सुणजो सुगुरुनो भेद । राखो मुगत उमेद । आ० । थोडामें भाखूं घणोए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ६ ठ्ठी ॥

॥ देसी श्री गुरु चर्णारे नमीए । मुनी गुण सुणीएरे भाइ । सेवा भव भवमें सुख दाइ । वंध्या सिव सुखरे पावे । जन्म जरा मरणो नहीं आवे ॥ मू० १ ॥ मद आठुइरे गाले । निरमल पंच महाव्रत पाले । पांचे सुमतिरे सुमता । काया मायासुं नहीं ममता ॥ मू० २ ॥ संजम सतरे २ धारी । फिर फिर करता पर उपगारी । वाणी मीठीरे मेवा । चोस्ट इंद्र करे ज्यांरी सेवा ॥ मू० ३ ॥ दोष बयालीसरे टाले । मन वचन काया बस कर चाले । जाव जीवन केरे प्यारा । निज पर आतम तारणहारा ॥ मू० ४ ॥ धरती जैसारे धीरा । सायर जैसा होय गंभीरा । मेरु जेसारे मोटा । कर्मा सामा झाल्या सोटा ॥ मू० ५ ॥ गुण अंनतारे ज्यामें ॥ कवि जन पार किसी विध पामे ॥ सुगुरु पोतेरे गावे ॥ गुणारो छेह कदे नहीं आवे ॥ मू० ६ ॥ सीतल चंदणरे चंदा । दिनकर दीपे जेम मुणंदा । काटे । काटे निज परे फंदा । सेणक पायो परम आनंदा ॥ मू० ७ ॥ दोहा । भलो फरमायो माहा मुनि । सुगुरु कुगुरुको भेद । मैं जाण्यां सव सारखा । बुगला हंस सफेद ॥ १ ॥ सेणक समकित तिहां लइ । मुनि अनाथी संग । धोयाही पलटे नहीं । चोल मजीठी रंग

॥ २ ॥ देव रागी गुरु लालची । जीव हिंसामें धर्म । तीन कर्ण तीन जोगसूं । छोडूं मिथ्या भर्म ॥ ३ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

देसी सेवग संभूनाथ कीरत कागद । धन मोटा मुनिराज । बुध थारी भारी हो । भलो दियो उपदेस । बड़े बिसतारी हो ॥१ ॥ धन धन तुंमचा तात । मात थाने जाया हो । धन तुम छो अवतार । सफल करी काया हो ॥ २ ॥ छोडया छता भोग । जोग तुंम लीनो हो । दी संसारचाने पूठ । दया रस पीनो हो ॥ ३ ॥ तुंम हो दीनदयाल ॥ आसरो थारो हो । सतपुरुषांरी महेर भलो होय मारो हो ॥ ४ ॥ फसियो जग जंजाल । भोग नहीं छूटे हो । रहूं आपसे दूर । हियो मारो फुटे हो ॥ ५ ॥ षट कायारा नाथ । तात मोए तारो हो । होज्यो भव भव मांए । सरण तुमारो हो ॥ ६ ॥ फिर फिर सेव्या देव । गुरु पिण पेख्या हो । आप सरीखा माहाराज । कठे नहीं देख्या हो ॥ ७ ॥ दीज्यो दरसन आप किरपाकर मांने हो । राखूं हीयारे बीच । भूलूं नहीं थाने हो ॥ ८ ॥ धारया धर्म अनेक । मर्म नहीं जाण्यो हो । सांचो धर्म महाराज । आजे पिछाण्यो हो ॥ ६ ॥ रोम रोम विगसाय ।हरख नहीं मावे हो । दे प्रदक्षणा तीन । अंग नमावे हो ॥ १० ॥ तूं मोटो जोगिंद । ध्यान रस लीनो हो । मैं मूर्ख मति हीण विघन थारे कीनो हो ॥ ११ ॥ निमत्या काम ने भोग । असातना कीनी हो । नाथपणारी वात । रती नहीं चीनी हो ॥ १२ ॥ खमो खमो अपराध । खिम्या धर्म थारो हो । पर उपगारी आप । विरद विचारो हो ॥ १३ ॥ तुम गुण अनंत अपार । पार नहीं पाउ हो ।

सो मुख रसना एक । किसी विध गांऊ हो ॥ १४ ॥ सहु परवार समेथ अंजलिधर मांये हो । आया जीणा दीस जाय । अंतेवर सांथे हो ॥ १५ ॥

॥कलस॥ महा मुनिसर माहा देसना । चांदी नीकर विसतारये । सेणक समकितधार हुवा । राजामें सिरदारए ॥ रा० १ ॥ सेणक वहु उपगार कीना । उतकुस्टी भक्ति करी । बीजो पिण सूनी केवली । होय कैसिव बंदूवरी । हो ॥ २ ॥ सात ढाल सवंध मुनिको । कीनो सुत्र जोयए । विरुद्ध तिणथी अधिक ओछो । मिछयादुकड सोयए । मिछया ॥ ३ ॥ बुध ओछी सुध नहीं । हस्व दीर्घ विचार ए । महेर कीज्यो मूरख ऊपर । कविजन लीजो सुधारए । कवि ॥ ४ ॥ समतश्री १६ से कहीए । ऊपर बावन साल ए । असाढ वद् एकादसीने । करी जैपुर में सत ढाल ए ॥ ५ ॥ पूज्य रतन समुदायमांए । रंभाजी हुवा गुणमणी । तास सिस्यणी जड़ाव गूंथी । सूंनी गुणमाला भणी ॥ मु० ६॥ प्रसाद श्री गुरुदेवजीको । गुणवतांरी दास ए । अक्कसर ढाल सवंध देखी । मत कीज्यो उपहास ए । म० ॥ ७ ॥ इति अनाथी मुनीराजरो सत ढाल्यो समाप्त ।

॥ नव बाडकी लावणी लीखंते ॥

चालः—धन धन धन धन जंबुकवरजी । जोवनमें समता लीनी । परणी धरणी तजी प्रभाथे । ए देसी । सीलव्रत सुध पालो प्राणी । निर दोषण थानक निरखो । पसुपंडक महीलाको वासो । ब्रह्मचारी राखे धडको । सूस मंस्कारी जम विचारी । नास करेला ब्रह्मव्रतको । सीलव्रत सुध पालो प्राणी । वेग मिले सुख

सिवपुरको । आंकणी ॥ १ ॥ बीजी वाड इणीपर कीजे । रस पीजे जिन वाणीको । एकली नारी पुरुष संघाथे । वात विगत चटको मटको । काम जगावे कंद्रप वढ़ावे । दृष्टांत जाणो नींबूको ॥ सी० २ ॥ एकण आसण पुरुष अस्त्री । नहीं वैठे कोई ब्रह्मचारी वैठे सोवे वाड बीगोवै । गरभ दोष पावे नारी । कांजी दूध विगाड़े देखो । वचन उथापे जिन–वरको ॥ सी० ३ ॥ चौथी वाड चतुर नर राखो । रस चाखो सिवरमणीको । भर२नेणसें मत निरखो । ब्रह्मचारी अंग नारीको । काची कारी जे नरनारी । निरखे तेज जिम दिनकरको ॥ सी० ॥ ॥४॥ टाढी भींत प्रेचक अंतर । ज्यां सोवे भोगी प्राणी । सीलवंत रहे तिन थानक । घाज मोर दृष्टांत जाणी । विषय वचन जो पड़े कान में । मन विगाड़े मुनीजनको । सी० ५ ॥ काम भोग विलस्या जे पूरव । वार वार ज्यो चितारे । चार वटाउ बुडीया दस्टंत । सील वटाउने मारे । छठी वाड़ करो मन डीडता । विषे जहर दूरो फेंको ॥ सी० ६॥ सरस आहार वरज्यो झरझरतो । नितको नित केवल नाणी । वाड भंग करे सीलव्रतकी । त्यागे ते उत्तम प्राणी । सनीपातमें पावे पय मिश्री अरु सरबत नारंगीको ॥ सी० ७ ॥ पुरुष केवल वतीस प्रमाणो ॥ अठाइस नारी जाणो । कुलंग कवल चोवीस प्रमाणे । ढूंढ ढूंढने नहीं खाणो । ओछो भाजन इदको उरे । फुट जाय मुख हंडाको ॥ सी० ८ ॥ वस्त्र भूषण अंजन मंजन । केसर ने चंदन चरचे । तेल फुलेल अरगजा लेपन । ब्रह्म-चारी करतोलरजे । विनै कारण जो करे सुश्रुषा । सीलव्रत थावे झांखो ॥ सी० ९॥ शब्द रुप रस गंध । फरस प्रमत विचरो ।

उतम प्राणीए अनाथी देव जीवकी। छोडयां वैपद निरवाणी। राग रंग अरु नाटक चेटक। ए भी भरम है पुद्गलको ॥ सी० १० ॥ इंद्र चंद्र निरंद्र सुरासुर। सीलवंतके पाए पड़े। सरप होय फुलनकी माला। भूत मित्र नहीं दखल करे। हरी अरी कुंजर दूर रहे सब। तेज बड़ो ब्रह्मचारीको ॥ सी० ११ ॥ गजसुखमाल अवंतो जंबु। नेमकवर राजुल नारी। बीजेकवर अरु बीजीयाकंवरी। बालपणे थया ब्रह्मचारी। सेठ सुदर्शण सील प्रभावे। सिंघासण थयो सूलीको ॥ सी० १२ ॥ उतराधेन सोलमें भाखी। वाड नउइ तिण साखी। जैपुरमांए जड़ाव जोड़ने। निज आतम निज बस राखी ॥ १९ सें बावनके बरसे। जेठ सुदी दिन नोमीको। ॥ सी० १३ ॥

२२ परिसा.

॥ दोहा ॥ पांच पद प्रणमू सदा। सरसती लागूं पाय। बाइस परिसा सूत्रथी। कहीस ढाल बणाय ॥ १ ॥ चाल तेहीज। क्षुधा जगमें सबसे बूरी हे। बडे बडेका मान गले। आदनाथके चार संस शिष्य। भूख लगी जब भाग चले। धन धन साधु सह परीसा। सुरबीर होए नाय डरे। तप तरवार भावका भाला। करम अरीसूं भंग करे। आंकडी ॥१॥ क्षुधा तिरखा अति तीखी। बिन पाणी मुनि प्राण तजे। आधा कर्मी काचो पाणी मरजावे। पिण नाय भजे ॥ धन० २ ॥ सीतकालमें ठंड सहे। अत बीरपत लै ठाडे नंगे। जीरणवस्त्र अलप उपधी। ध्यान धरे चडते रंगे ॥ धन० ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतुमें घाम सहै। अत पवन चले अरु लू बाजे। बलती वेलू लेवे अतापना। शीस तपे अरु पग दाजे।

॥धन०४॥ विरखा रितुमें डांस मसादिक । जुं गाकड देवे चटका । तिलभर धेक धरे नहीं तिण पर । समतारा पीवे गटका ॥ धन० ५॥ एक सफेदी वसरत राखे । एक अंग कीसत जाणी । थोडा मिलिया नहीं सटावे । इथकासूं ममता ताणी ॥ धन० ६॥ काग भोगमें रीत नहीं पामे । हित राखे संजम सेती । पुद्गल फंद रच्यो इण जगमें । मुगतीसूं घाले छेती ॥ धन० ७ ॥ आवभाव सिणगार स्त्रीके । सराग दृष्टिसे नहीं झांके ॥ सील रतनको करे जापतो । मन में गल ताणी राखे ॥धन०८॥ ग्राम नगर पुर पाटण फिरतां । कक्कर अरुकांटा खुचे । पाय उवराणा चढे थाकलो । गाडी बेल नहीं वंछे ॥ धन० ९॥ लेवे विसरामो वन मसाण । अथवा विरख तले बेसे । मन वचन काया वस राखे । स्वापद जीव नही त्रासे ॥ धन० १० ॥ सेज्या उंची नीची अवखी । दुखदाई असमाध करे । एक रातको जाणे परिसो । दिनमासी चौमास भरे ॥धन० ११ ॥ कुवचन कान पडे कांटासा । आक्रोश केइ द्वेष करे । दूध पतासा सम कर पीवे । जाणे अनारज धीर धीरे ॥ धन० १२ ॥ केइ अनारजी अवधी साथी । ले लकड़ीने लारफिरे । छूरी कटारी माला बुरछी । वधे बंधन परिहार करे ॥ धन० १३ ॥ करे जाचना केई पुद्गलकी । देवे पिण अपमान करे । आयो बापड़ो दीयो उदारो । पिण साधु नहीं मान धरे ॥ धन० १४ ॥ उद्यम करतां नहीं मीले तो । छती वस्त पीण नट जावे । द्वेष धरे नहीं गृहस्थ ऊपर । अंतराय आड़ी आवे ॥ धन० १५ ॥ आयो रोग सोग नहीं करणो । बांध्या ते भुगते प्राणी । सहूकार सो करज चुकावे । कायर ते भागा जाणी ॥ धन० १६ ॥ तृण घास के सुवे संथारे ।

चटक चटक देवे चटका । थोड़ा वस्त्र नींद न आवे । समतारा पीवे गटका ॥ धन० १७ ॥ पीठी मरदन नहीं नावो धावो । जावजीव लगे नहीं करणो । होय पसीनो मेल गले जब । समतारो लेवे सरणो ॥ धन० १८ ॥ कोई चरणमें देवे मस्तक । वंदन अरु असतूती करे । कोई अग्यानी देवे ठोकर । दोयां परम भाव धरे ॥ धन० १९ ॥ प्रग्यां मोटी ग्यान अपूरव ॥ भणीयारो कांइ पार नहीं । अख्वरदाता गुरु कर जाणे ॥ ग्यान ध्यान बोपार सइ ॥ धन० २० ॥ धोंकाधोंक करै बहु उदम । तोपीण ग्यान नहीं आवे । सम प्रणामै सह परीसो । खेक करे नहीं सीदावे ॥ धन० २१ ॥ खरी आसता जिन वचनांकी मिथ्या मतने खण्डन करे । अन्य मार्गनी महिमा पूजा । देखी वंछा नाए धरे ॥ धन० २२ ॥ अनूकूल इणमें मन गमता । सोभी सहना कठण भय । प्रतिकूल प्रतक दुखरासी । वडे वडे सो भाग गये ॥ धन० २३ ॥ परीसा पचबीसी जोड़ी । जड़ाव जेपुरके मांइ । असाढ सुद १९ सें बावन । हरख लावणी मैं गाइ ॥ धन० २४ ॥ इति संपूर्णः

चाल तेहीज । धिग धिग जगमें कायर पूरसा । संजम ले चाले निबला । धन संसारमें उतम प्राणी । जो टाले दोषण सगला । धि० आकाडी ॥ १ ॥ हस्त करम बली मइथुन सेवे । रात्रि भोजन प्राण हरे । आदाकरमी राजपींडते । इंद्रांने उदमाद करे ॥ धि० २ किरतगंडपमीचेअछीजै ॥ अणीसिट सामो आणयो । पंच प्रकारे आहार भोगवे । सबलो ए छटो जाणयो ॥ धि० ३ ॥ बार बार पचखाण भांगे तो । गुरुआदीकसुं नहीं लाजे । छ महीना में मूल सींघाडो । छोडी बीजामें भाजे ॥ धि० ४ ॥ उदक लेप अरु माया

थानक । तीन तीन एक मास मधे । सेव्या सबलो दोषण लागे । जीवघात संसार बधे ॥ धि० ५ ॥ जाणी हिंस्या जाणी मिरषा । अदत पराइ जाण गीरे । सचीत प्रथवी सनगंध जागा । सूवे बेठे पाव धरे ॥ धि० ६ ॥ जीव सहत बाजोट पाटीया । कंदादी दस सचीत भखे । उदक लेप दस माया थानक । त्रस मधे नहीं सेव सखे ॥ धि० ७ ॥ सचीत हाथ आहारादिक बेरे । इकीसइ सेवे सबला । कर्म प्रकृति डीडकर बांधे । संजम गुण थावे निबला । ॥ धि० ८ ॥ टाले सबला पाले संजम । सो पावे पद निरबाणी । जेपुरमांए जडाव कहत हे । असाढ सुद नोमी जाणी ॥ धि० ९ ॥

चाल लावणीरी छे । मत सेवो कोइ बीसैअस असादया थानक साधजी । आंकडी । दब दब करतो चाले साधु । नीचो नहीं निहाले ॥ चउदीस कपड़ा उड़े धजा जिम । बिन पूंज्यां पग ढाले । कठे पूजे कठे पग देवे । इरज्यांमें टोटो घालेजी ॥ मत० १ ॥ मरजादा उपरंत भोगवे । पाट पाटीया कोय । वडा गुरांसुं सामो बोले । संजम मांदो होय । थेवर इकंद्री घात चिन्तवे । खिणखिणमें करोधी होयजी ॥ मत० २ ॥ निस्ते भाषा कलह-कारणी । गरुना ओगण वाद । बोलंतो नहीं संके मूरख । बेठो करे उपाद । जूनो कलो उदेडै पाछो । ए बारे असमादजी ॥मत० ३ ॥ अकाले सभाय करे । सट काले बीगता बाद । । सचीत खरडया बिन पूंज्या पग । सुवे बैठे साध । पोर रात गया पछे गावे । घाढे घाढे सादजी ॥ मत० ४ ॥ गछमें भेद पड़ावे पापी । अठी उठी मिलजाय । कलह करंतों मूल न लाजे । लोग हसाइ थाए । आप बले परने संतावे । दोनूं भव दुःखदायजी

॥ मत० ५ ॥ दीन उग्याथी आथण सुधी । आछो आछो लाय । । व्रत नहीं पछखाण न जांके । मन भावे ज्युं खाय । असुजतो अन जोवे सतो । जडामूलसु जायजी ॥ मत० ६ ॥ ए वीसुं टालज्यो सरे । संजम रुडो थाय ॥ १६ सें वरस बावनेसरे । जेपुरमांए जडाव । बोल थोकड़ो देखने म्हरे ॥ दीनी ढाल बणायजी ॥ मत० ७ ॥

॥ ३३ असातना लीखीए छिए. ॥

देसी । बीस जणासुं बाद न कीजे । आगे चाले आगे उवै । आगे बेठे आयजी । बराबर चाले बराबर उवै । बराबर आसण ठायजी ॥ १ ॥ मूर्ख करे असातना । केइ अवछंदा अबनीतजी । जमाली गोसालो देखो । हूवा गणा फजेतजी । आंकडी ॥ २ ॥ अवछंदाने ग्यान न आवे । ग्यांन बिने अंधारजी । सीख दिया सामा चड जावे । गरु काडे गछके बारजी ॥ मूर्ख० ३ ॥ तीन उबणारी । तीन बेठणारी जोयजी । अडतो चाले अडतो उबै बेठे । ए पूरी नव होएजी ॥ मूर्ख० ४ ॥ गुरु चेला दोय ठंडील जावे । पहेला सुच करायजी । इरीयावइ पडीकम पहीला । कारन राखे कायजी ॥ मूर्ख० ५ ॥ गुरुआदिकसुं प्रसण पूछे । कोई भाइ बाइ आयजी । पहेला उतर देवेः तिणने । आप वडेरो थायजी ॥ मूर्ख० ६ ॥ कुण सुता कुण जागो भाइ । कीज्यो कारज आयजी । जागे पिण नहीं बोले उठे । जाणी नींद गुलायजी ॥ मूर्ख० ७ ॥ ल्याय गोचरी छोटा आगे । आलोवे देखायजी । थामे देवे मन गमताने । ज्यासूं मुतलब थाएजी ॥ मूर्ख० ८ ॥ गुरु चेला दोय भेला बैठे । गुरु गरडा दांत न

फायजी । आछो आछो वेगो वेगो । आप जाण दटकायजी ॥ मूर्ख० ९ ॥ गुरु वतलायां जवाब न देवे । बातामें लग जायजी आसण वैठो उतर देवे । सूं कहो कहो थायजी ॥ मूर्ख० १० ॥ रेकारा तुंकारा देवे । बोले खारो जहरजी । ग्यान न आवे अवछंदाने गुरुसुं राखे वेरजी ॥ मूर्ख० ११ ॥ गुरु सीखावण देवे आछी । सीखो भणो सुजाणजी ॥ थेइ सीखो थेइ वांचो । पाछो कहे अयाणजी ॥ मूर्ख० १२ ॥ गुरु कहे भाइ खोटू न बोलो । तुम ही खोट सीखायजी । साचो अरथ न आवे तुंमने । में कहूं जीम थायजी । ॥ मूर्ख० १३ ॥ गुरु गीतारथ देवे देसना । सुण राजी नहीं थायजी । भैसा डोलो घाले बीचमें । रस कथारो थायजी मूर्ख० १४ ॥ हीवडा सुण कई हुवा राजी । फिर आज्यो भेला होयजी । अर्थ अपूर्व कहेस्यूं तुमने । कंठ कला मुज जोयजी ॥ मूर्ख० १५ ॥ तेइ देसना तेही वेला । तेइ पूरखदा मांयजी । घोट मठारी पाछो वांचे । मानभंग गुरु थायजी ॥ मूर्ख०१६ ॥ दिन माथे आयो नहीं सुजे । लांबी कथा वणायजी । थेतो बेठा हुकम चलावो । माने खाणो लायजी ॥ मूर्ख० १७ ॥ गुरु संथारे सुवे बेठे । नहीं लाज मरजादी । ठोकर लाग्यां नहीं खमावे । उपजावे असमाधजी ॥ मूर्ख० १८ ॥ गुरुसूं उंचो आसण बेठे । मद छकीयो मानीसजी । गुरु चेलारो नहीं कायदो । ये पूरी तैंतीसजी ॥ मूर्ख० १८ ॥ उत्तम प्राणी हित कर लेसी । नहीं आणे मन रीसजी । जैपुर मांए जड़ाव कहत है ।सीखो बीसवा बीसजी ॥ मूर्ख० २० ॥ सूत्र साखे ढाल वणाई । आगीपाछी कोयजी । ओछी इदकी आगम सेती । मिछयादुकडंमोयजी ॥ मूर्ख० २१ ॥ १९ से बावन

कटलामें । आसाढ सुद अस्टमी जाणजी । असातना इकवीसी सूंणने मत कोई लीज्यो ताणजी ॥ मूर्ख० २२ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ तीर्थंकर गोतरी ढाल लीख्यते ॥

निरमल जिन । सुध समगत पाई । ज्यांके कुमी रही नहीं कांई । ए देसी । अरिहंत सिध आचारज उपाध्या । ज्यारा लीजे सरणा । पंच पदारा गुण गावंता । मेटे जामण मरणा ॥ १ ॥ बांधे गोत तीर्थंकर प्राणी । सेवे बीस बोल हित आणी । आंकडी । प्रवचन माता गुरु गुण गातां । थेवरना गुणग्रामे । बहुश्रुत तपसी गुण गातां । अविचल पदवी पामे ॥ बां० २ ॥ भणीयो गुणीयो याद करंतो । समकित सुध पालंतो । सात प्रकारे विनय आराधे । पडीकमणो नित करतो ॥ बां० ३ ॥ सील आचार अरु व्रत पालंतो । तीजो चौथो ध्यांने । बारे भेदे तपस्या करतो । अभेदान सुपात्र दाले ॥ बां० ४ ॥ दस प्रकारे व्यावच करतो । सरव जीव समादे । ग्यान अपूरव भणतो गणतो । सूत्रनी भक्ति आराधे ॥ बां० ५ ॥ मिथ्यासतने दूर करंतो । जिन मारग दीपावे । ग्राम नगर पूर पाटण विचरे । तीर्थंकर पद पावे ॥ बां० ६ ॥ देख थोकड़ो ढाल बणाई । १९ सेले बावने । जैपुरमांए जड़ाव कहत है । ते प्राणी धन धने ॥ बां० ७ ॥ इति संपूर्णः ॥

॥ पोसारा १८ रा दोषरी ढाल लिख्यते ॥

वाणी श्री जिनराज तणी कांने पड़ी रे प्राणी ए देसी । दोष अठारा टाल पोषद कीजे सही । रे प्राणी द्रव क्षेत्र काल भाव देख चूके नहीं ॥ १ ॥ पहेले दिन सरस आरे । कुसील न सेवणो ।

रे प्राणी । नावो धोवो नाथ । नख केस सवारणो ॥ २ ॥ पोसामें हाथ पावे । चंपावे जोपस्न् । रे प्राणी । होय बैठा निसंके । डरे नही दोपस्न् ॥ ३ ॥ माला मोती हार । विलेपन चरचव्हो । रे प्राणी । लेवै दिनकी नींद । शस्त्रादिक वरजव्हो ॥ ४॥ बिन पूंज्या खीणे खाज । उतारे सेलने । रे प्राणी । निद्या विगता विग्राद । नजर त्रिपे रागमें ॥ ५ ॥ घरका सुधारे काम । भोलावे कुलांभणी । रे प्राणी । नहीं देणो सनमान । उभगरण छूटा भणी ॥ ६ ॥ नहीं वंछे मनमांए । बुरो पेला तणो । रे प्राणी । जेपुरमांय जड़ाव । कयो मानो हमतणो ॥ ७ ॥ १६ से बावन । श्रावण वद बीजने । रे प्राणी । दीनी ढाल बणाय । भवि उपगारने ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ बार भावनांरी ढाल लीख्यते ॥

देसी देवदानव तीर्थंकर । अनित्य पहेली असरण दूजी । तीजी संसारस्वरुपे । एकंते चौथी भिन । पांचमी देही असुचनो कूपे । रे प्राणी । भावना सुध मन भावो ॥ आकड़ी ॥ १ ॥ अस्त्रर भावे समवर कीजे । निरजरा करमनी पावे । लोक सरुपे वीचार करंता । धर्म ध्यान वध जावे ॥ रे प्राणी भा० २ ॥ बोध भावना बारमी भावे । समगत निरमल थावे । समगतथी संजम सुध होवे । संजमथी सिव पावे । रे प्राणी ॥ भा० ३ ॥ १६ से बावन जैपुर में । असाढ सुद तेरसे । कहत जड़ाव शुद्ध भावना भावो । अजर अमर पद पावो । रे प्राणी ॥भा० ४ ॥ इति संपूर्णः ।

॥ समकितरी ढाल लीख्यते ॥

देसी प्रीत मारी जिनवर से लागीरे प्रीत तथा कर्म रेख नहीं

ले । ओलख जीव छकायना सरे । अणुकंपा आणोरे । जीवकीअ । देवगुरु नव तत्व पिछाणो । दया धर्म जाणो । जैनको मारग हे वांकोरे । जैन । कठण खडगरी धार । विषम हे सुईको नाको । आंकडी ॥१॥ सबहीसै समभाव । चाव एक मुक्तिको राखोरे । चा० । जिन वचनारी प्रतीत । भोगरी वंछा मत राखो ॥ जै० २ ॥ प्रथम हिंसा त्याग । झूठ कोइ मुखसे मति भाखोरे । झूठ । चोरी परस्त्री द्रव्यकी ममता मति राखो ॥ जै० ३ । पंच महाव्रत मूल । अनुव्रत श्रावकरा जाणोरे । अ० । तिनासु गुण होय । शिक्षा व्रत चारु पीछाणो ॥ जै० ॥ ४ ॥ ए समद्रष्टी जाण । आण मन समता ढढ राखोरे ॥ ॥आ० ॥ कुटुंब कबिलो छोड ॥ विषय सुख फिर फिर मत झांको ॥ जै० ५ ॥ दान सील तप भाव । चारकी चोकी कर राखोरे ॥ आ० ॥ मन मांने सो माल ले जावो । शंका मत राखो ॥ जै० ६ ॥ एहइ जैन मत मर्म । धर्म एक खिम्या के मांइरे ।धर्म। ज्यो पाले भव उसीके । सिव–पुरकी साई ॥ जै० ७ ॥ १९ सें बावन । जेठमें जेपुरके मांइरे । समगत उपर जोड लावणी । जडावजी गाई ॥ जै० ८ ॥

॥ बालचंदजी माहाराजना गुण लिख्यते ॥

देसी रतन मुलनी लोकूनीलारी । बालमुनि दरसण क्युं नहीं दिराया । माने त्रस त्रस त्रसाया । चनणमुनि दर्शण क्यूं नहीं दिराया ॥ आंकडी ॥ १ ॥ रसना नाम रटयो मुनी थारो । मनडो गणोइ उमायो । नैणे दोए त्रसत है दर्सकुं । पावन छेह दिखायो ॥ बा० २ ॥ काहा करुं में प्रन्ही पाइ । प्रवीने उडोह न जाइ ।

जंगाचारेण विद्या न मोपे । सेवा सारुं सदाइ ॥ च० ३ ॥ धन वा धरती ज्यां पाव धरत है । मीथ्या अनड नमा हो । दीन दयाल कीरपाल कहीज्यो । तो माने किम त्रसाहो ॥ वा० ४ ॥ ग्राम नगर पूर पाटण वीचरो । करते ग्यान उजीयारो । धन वा जननी जनम दीयो हे । धन थांरो अवतारो ॥ च० ५ ॥ धन वे श्रावक वाणी सुणत हे । प्रतलासे सुध आहारो । सेवा सारे अष्ट पोहोरकी । दरसन करत तुमारो ॥ वा० ६ ॥ दो दो वार नागोर जोध्याणे । वडलू फीर फीर जावो । पाली पीपाड पे कीरपा तुमारी । जेपुरमें चूक बताओ ॥ च० ७ ॥ सब श्रावक त्रसत है द्रसकू । याद करे नर नारो । कब मुनि पाव धरे जेपुरमें । जीवन प्राण आधारो ॥ वा० ८ ॥ करता संभाल छे मास वरस में ॥ पूरण कीरपा तुंमारी । दोय वरस वीत गये तथापि । आ अंतराय हमारी ॥ च० ९ ॥ सुण ओलंभा खीज करो तो । कैद मुक्तके माइ । रीज करो तो सीव सुख दीज्यो । दोन्यूंइ मन भाइ ॥ वा० १० ॥ सब संतनसे एही अरज हे । मो पर महर करावो । करुणा सागर सेप कालमें ।वीचरत जेपुर आवो ॥ च० ११ ॥ चुक हमारी कीरपा तुमारी । दोन्यूंइ एक सारो । जेपुरमांए जडाव जपत है । नाम मूनी एक थांरो ॥ वा० १२ ॥

॥ श्री सीमंधरजी ढाल लीख्यते ॥

॥ देसी ॥ गोरांदे वाइ आजे वसो न जी मारा देसमें । प्रभुजी खेत्र वीदेह वीराजीया । जठै वर्ते छे चोथो आरो । श्री मंवीर स्वामी । श्री हंस पीता तुम तणा । थांने संतकीमातमेलारो । श्री

मंधीरस्वामी माने आधार वो प्रभुजी आपरो ॥ आंकडी ॥ १ ॥
प्रभुजी लाखे चोरासी पूरव आउखो ॥ उंची पांच सो धनक थारी
कायो ॥ श्री० ॥ कंचन वरण सुहावणा । मारो दरसणने मनड़ो
उमायो ॥ श्री २ ॥ प्र० कवरपरे ैया लाडमें । पछे पिता गया
परलोके ॥ श्री० ॥ बीस लाख पूरव पछे । पायो राज लीला सुख
भोगे ॥ श्री० ३ ॥ प्र० लाख त्रेपठ पूरव लगे । थेतो शुभ वर्ताई
नीते ॥ श्री० ॥ तीन ग्यान घरमें थका । थारी लागी मुगत सुं
प्रीते ॥ श्री० ४ ॥ प्र० कामभोग जाणया कारमा । थेतो बोहत
कीयो उपगारे ॥ श्री० ५ ॥ प्र० कर करणी केवल लीयो । थांरा
नाम थकी नीसतारे ॥ श्री० ॥ लाख पूरव चारित पालने । थेंतो
जास्यो मुकत दवारे ॥ श्री० मी० ६ ॥ प्रभूजी मासे सावण । चोथे
चानैणी । समत १६ सें बावन बरसे । श्री मंधीरस्वामी । जेपुरमांए
जडावजी । थारा दरसणने जीव घणी त्रसे ॥ श्री० ७ ॥

॥ पंचेंद्रीनी ढाल लीख्यते ॥

। देशी गेरो फुल्यो हो हजारी मेदा बागमेंरे । प्राणी पंच इंद्री
वस कीजीएजी। अखे अजर अमरपद लीजीएजी । उल्लालो । तिणसुं
सुख अनंता पावे । फिर फिर गरभा वास न आवे । जिनसुं जनम
मरण मीट जावे ॥ १ ॥ प्राः आंकडी ॥ श्रोत्र इंद्री वस दुख भो-
गवेजी । मूर्ख मीरवा मरण लेहावे । पूंगी उपर सर्प बधावे । वरवस
होइने बहु दुख पावे ॥ प्र० २ ॥ नेत्रां बस होय पतंगीयोजी ।
दीप सीखामें भसमी होवे ॥ प्र० ३ घाण इंद्री वस मधूकर मरे जी ।
लोभी फुसपनमें फस जावे । रस मकरंत लेइ सुख पावे । कुंजर
फुतनमें गिट जावे ॥ प्रा० ४ ॥ रस इंद्री वसमांरे माछलोजी ।

रस कस लेवाने उमावे । तुरत गले कांटो पस जावे । साधू संजम मूल गमावे । प्रा ० ५ ।। फर्स इंद्री वस होय मानवीजी । केइ प्राणी प्राण गमावे । लंपट लोकांमांय कहावे । कुंजर वूरे हवाल मरावे ।। प्रा० ६ । इंद्री अकेकी वस दुख सहजी । पांचाके वस केइए वीगूंतां । सुरनर इंद्र होय फजेतां । धन मुनीवर थे पांचूइ जीतां ।। प्रा० ७ ।। रुडा शब्द रुप रस गंधसे भलाजी । आछा पुरस थकी सुख पावे । सेज्या फुलनकी मन भावे । नकसी सर्प तुरत डस जावे ।। प्र० ८ ।। समत १६ सें तेपन भलोजी फागण सुद पख सातम जाणी । जेपुरमांए जडाव बखाणी । निज पर आतमने हीत आणी ।। प्रा० ६ ।।

।। करम रेखरी ढाल लीख्यते ।।

।। राग ।। कर्म रेख नहीं टले । करो कोइ लाखा चतुराइ । आंकड़ी ।। १ ।। धर कर धीरज ध्यान । ग्यान कर मनकुं समजाणारे ।। ग्यान.।। वीन भूगत्या नहीं होय छूटको । अवी चूका देणा । करज एक कर्मनका भाइरे ।। करज ।। क० २ ।। फेर कहु कर्मनकी वतकारे ।। फेर ।। वड़े वड़े सब चूक गक गये । रहे इतकाने उतका । मनुष्य भव बार बार नहीरे ।। मनु० ।। क० ३ ।। कर्मसें को न जबर भाइरे ।। कर ।। सतीया साध तिर्थकर गुणधर । सरव हार खाइ । संजम लीयो मुक्तीके ताइरे ।। सं. ।। क० ४ ।। करमसें सीत भरीं वनमेंरे ।। क. ।। राजा रावण पकड मंगाइ । देव जोग छीनमें । धीरज कर जगमें जस पाइरे ।। धी ।। क० ५ ।। वीरने कर्म दीया झोलारे ।। वी० ।। काननमें खीली खटकाइ । स्वान कीया दोला ध्यानसें नहीं चूका काइरे ।। ध्या. ।। क०६ ।। द्रोपदी सतीय नमे

मोटीरे ॥ द्रो. ॥ भीम हाथसें कीचक मूवो ॥ नीजर धरी खोटी । हारदी जू।। के मांइरे ॥ हा० ॥ क० ७ ॥ मरमसें मेतारज मारयोरे ॥ म. ॥ खंदक रीखनी खाल उतारी । जरासींध हार्यो । हरीने मार लीयो माइरे ॥ ह० ॥ क० ८ ॥ करमसें सुरपत घम-रायारे ॥ क० ॥ बडे बडेकी भइ फजेती । कवी जीन मुख गाया । जाणकर मत बांधो माइरे ॥ भा० ॥ क० ६ ॥ ध्यान मन नव पक्का धरणारे ॥ ध्यान० ॥ तप जप संजम खरची ले ले । सत-गुरुका सरणा । सरणा भव भवमें सुखदाईरे ॥ म. ॥ क० १० ॥ गरब नहीं करणा तन धनकारे ॥ ग० ॥ पलक एकमें पलट जाय । या नारी है गणिका । दानसुं संग ले ले भाइरे ॥ दा. ॥ क. ११॥ समत १६ से ५३ । जेठ वद जेपुर के मांइरे । जे. । करम कथारी जोड लावणी । जडावजी गाइ । करमकु मत बांधो भाइरे ॥ क० १२ ॥

॥ राग होरी काफीरी ॥

मतलूंटोरे । हारे मत लूंटोरे । प्राण पराया प्राणी ॥ मत० ॥ आंकडी । प्राण पराया आप सरीखा । हारे जीव । भाख गया केवल नाणी ॥ मत० १ ॥ चारे थावरमें जीव असंख्या । हा० । वनासपती में अनंते जाणी ॥ मत० २ ॥ त्रस थावर केइ सूक्षम प्राणी । हा० । उनारे जतना करो करुणा आणी ॥ म० ३ ॥ पुन वीहुंणानागा थावर । हा० । जासुं वैर कीयां पडे दुख खाणी ॥ म० ४ ॥ अनर्थ वैर करे बेकामे । हा० । ए तो प ड पराई न पीछाणे ॥ म० ५ ॥ हस हस पाप करे केइ मूर्ख । हा० । कांइ दूख सहेता काया कुंमलाणी

॥ म० ६ ॥ धरम काज करे बहुहिंसा । हा० । यातो नरक जावणरी नीसाणी ॥म० ७॥ कहत जडाव जेपुर के मांइ । हा० । ज्यारी रक्षा करो उत्तम प्राणी ॥ म० ८ ॥ १६ से फागण सुद तेरस । हा० । थे तो सुखे २ जावो निरवाणी ॥ म० ६ ॥

देसी ॥ पूछे पीया क्यूं नै पाणीरे पंडीत

रोस कीसीसै म आणोरे भवीयो । रोस० । दोस करमको पीछाणो रे भवीयो । रो० । आकड़ी ॥ १ ॥ रोस करीने निज गुण वाले । परगुण दाय न आवे । काच ने साटे हीरा हारेतो । वीरथा जनम गमावेरे । भवीयो । रो० २ क्रोध-मान चंडाल सरीखो । भाख्यो केवल नाणी । आगो पाछो कोइय न सोचतो । तोड़े प्रीत पुराणीरे । भ० ॥ रो० ३ ॥ नेह गटावे वेर बधावे । अपजस पैडो बजावे । तप जप संजम मूल गमावे तो ॥ नरगती-गोदे भमावेरे । भ । रो० ४ ॥ तिरजंच जोग लहे करोधी । सांप वीछूं गो थावे । आगला कर्म उदे में आया तो । फिर पाछो वैर बधावेरे । भ० । रो० ५ ॥ क्रोध मान ए दोए मोरचा । माया मान पडावे । पुरस थकी नारी होय जावे तो । नारीही ज कहावेरे । । भ० । रो ६ ॥ लोभी नर ए चारुइ सेवे । कयो दसमी कालरे मांयो । सागर सागर में पड मूवो तो । नंदराय धन खोयोरे ।भ० । रो० ७॥ इत्यादिक केइ जीव अनंता । ज्यांने चार कषाय रुलाया । चारु गतमें चोपड खेली तो । छोटा ते सीव सुख पायारे । भ० । रो० ८ ॥ पर नींद्या पर अवगुण करकर । मेल पारायो धोवे । पग बलती नहीं देखे मुरख । डुंगर बलती जोवेरे । भ० । रो०

८ ॥ १६ से जड़ाव जेपुर में । तेपन होली चोमासी । निज आतम समझावण कारण । जुगतेसुं जोड प्रकासीरे ।भ०। रो० १०॥

देसी ॥ भांगरा गीतरी० ॥

कइ ल्यायोनै काइरे ले जासी । सुग्यानी जीवा । कुणसीरे गत जासी । अब तुं तिरजा । पापशुं डर जा । जगत जस लेजारे जीवडला । जनम लेखे कर जारे जीवडला । आकड़ी ॥ १ ॥ नर भव पायो तुं एल गमायो ।सु० आगेरे गणो प सतासी ।।अ० २॥ पूरब पुंजी तुं खाइ खुटाइ । मूर्ख प्राणी । रीतोरे होय जासी ।अ०। ३ ॥ पुदगल फंदमें पडयोरे अनादको । सु० अब तोरे कांटो फांसी । अ० ४ ॥ पाप बधायो ने पुन घटायो । मु० भव भवरे गणो दुख पासी ॥ अ० ५ ॥ प्राण पराया तुं हस हस लूंटे । मू० लेखोरे आगे होय जासी ॥ अ० ६ ॥ सुध पख पूनम । भरयोरे भादवो । संवत बावन रे जैपुर बासो ।।अ० ७।। जोड जडाव सुणाइ । जगतसुं । सु०। चेतोरे घणो सुख पासी ॥ अ० ८ ॥

॥ जरा टुक जोवो तो सही ए देसी

श्री गुरु देव उपदेस । चतुर सुण धारो तो सही । सुग्यानी समझो तो सही । होजी तजो क्रोध मान अरु लोभ । ममतंकु मारो तो सही ॥ म० ॥ सु० १ ॥ होजी मारे पड़े भजन में भंग । संग ले चालो तो सही । होजी मारी अधबीच अटकी नाव । पार लगाओ तो सही । होजी मांने प्रभू बीन कुण आधार । तारले चालो तो सही । सु० । आंकड़ी ॥ २ ॥ भवसागर बीच नाव चावकर बेठा छो सही । होजी अब खेवणवालो कुण । समदमें पेठा छो सही ।

होजी मा० ॥ सु० ३ ॥ पड़े मीथ्यायतनी रात भ्रांतनुं मटोवो तो सही । सु. होजी अब गुरु वीन घोर अंधार । ग्यान गुल जोवो तो सही ॥ सु. ४ ॥ धर्म धजा लो बादबाए । सुध भावना सही । सु. होजी मारा सत गुरु खेवणहार । पार उतारेला सही । होजी मा. ॥ सु. ५ ॥ रोको आश्रव छेद । भेद नहीं तिरवामें सही ॥ सु. ॥ होजी भरो दान सील तप भाव । माल ले बेठा छो सही । सु. ६॥ पहुंचो सिवपुर ठाम । काम सीध होवेला सही । सु. होजी तिहां बेठा जगजंजाल । तमासो जोवेला सही । होजी माने गुरु ॥ सु. ७ ॥ १६ से तेपन महा वद जेपुरमें सही । होजी तीथ सातम ने ससिवार । जुगतसुं जडावजी कही ॥ सु. ८ ॥

हा हुकम लीख दीया सदगसे । हा कनइयो कान पीयारो । महा वीर सामण के सामी। आया त्रिसामणी कूख मोजार । नहीं मीटे जगमें होवणहार । ए निस्ते कर लीज्यो धार । कहांकू सोच करो नरनार । मीटे न जगमें होवण हार । आंकडी ॥ १ ॥ रावण तीन खंडको राजा । ले गयो रामचंद्रकी नार । पडयो नरकमें खावे मार ॥ मी. २॥ सोकां आल दीयो सीर उपर । सीताने काडी वन मोझार । परघर जाण दोय कुंवार ॥नहीं. ३॥ सेणकराजा समकीत धारी । घणा जिवसुं कियो उपगार । बैठे नावा बंद मोझार ॥ मी. ४॥ कुंडरीक साधु वीरत भांजि । पहुंच्यो सातमी नरक मोझार । ग्यातामें तेनो अधीकार ॥नहीं. ५॥ पंडव पंच जुवके सागर । जुवे खेल हारी नलनार । महा भारतमें छे वीसतार ॥ मी. ६॥ कृष्ण महाराजा करी दलाली । साज देइ तार्यो परवार । माठी गतमें लीयो अवतार ॥ मी. ७ ॥ छाने जाय वध्या मूजरवए । मरया

कसुंबी वन मोझार । नही मन्यो पाणी पावणहार ॥ नहीं. ८॥ दीपायणतपसी संतायो । दुवारकां बाली छीन मोझार । छतांनेमजी इ तरैधार ॥ मी. ९॥ जंमालीरीख महावीरनो । सरधा भृस्ट हुवो मतहार । पोत्यो कीलमोष देव मोझार ॥ नहीं. १०॥ घोसाले बाल्या दो साधू । बैठा समोसरण मोझार । तिर्थंकर दुख सया अपार ॥ मी. ११ ॥ मीरग लीख्या मीरगावती सेती । मेणरयान अंजणा नार । पतिवीरह दूख सह्याअपार ॥ मी. १२ ॥ होणहार टले कुण जगमें । तिर्थंकर स्त्री अवतार । तेल चढी रइ राजुल नार ॥ नहीं. १३ नीश्चय ग्यानी गम वाता । छदमस्तेसा जे वीवहार । कहत जडाव जपो नवकार । मी. सीख सुगुरुकी लीजे धार ॥ नहीं. १४ ॥ पंचभरतोनी नारी द्रोपदा । नारदा । नारद द्वेष धरयो अणुपार । मेल दीवी जिण समुद्रपार ॥ १५ ॥

॥ लावणी लीख्यते ॥

तजिएरे आलस दूर थइ एकमना भजिए कुकरकार मुनी सरधंना ए देसी । तारो टुटे दीसरातीतज दूजे पेडे धूंहर जगात के धरती धूजे । दीसमै चमकै वीज अकाले गाजे । अ० होय कडक सबद । आकास कदी सबे दाजे ॥ १॥करो सजाय चित लाय । असजाय टाली ॥ अ० या बाणी छे सुखदाय कटे कर्म जाली । आंकडी ॥ २ ॥ हाड मांस ने लोइराध टालीजे । मीरती पंच थमानक ईंभालीजे । बालचंद्र जख चंन द्र । गिरण आकासे । गिर बीरतूंग गिरेह राज । मीनख वलेपासे । करो० ३ ॥ अषाढ सुद भाद्रवो आसोज काती । ए पांचू पडवा जाण । । पूनम केती । सरव लील द सांज सवार नहीं भणीये । अद्धी रात

दोफार चोतीसे गीणए ॥ क० ४ ॥ १८ सें बावन । फागण चोमासी ॥ फा० ॥ जेपुरमांए जड़ाव जोड़ प्रकासी । ए चोत्रीस सुंइ टाल सुत्र भणसी । बीघन सहु टल जाय । सीव सुख वरसी ॥ करो० ५ ॥

॥ ढाल ॥

क्या परमान करुंदा बंदा । ए देशी । वार वारसें क्या तुज बोलूं । मान कह्या मेरा । सब स्वारथके मीले मुसाफर । नहीं कोइ तेरा । नही० । रे चतुरनर । नही० । ए तन तेरा तनक तमासा पाणी पतासा । आंकडी ॥ १ ॥ झूटा तन धन जूठा जोवन । झूटा आवासा । पाव पलकमें छूट जायगा । जंगल होए वासा । जं० । रेच० । जं० । ए० २॥ हाडकी टटी चामका पडदा । बंध रइ नासा । लोइ मांस अंगमें जलके । शौच नहीं मासा । सु० रेच० सु ॥ ए० ३॥ नावे धोवे बेस । बणावे अंत्रकी वासा । इदेही पर धोब उगेगी । गउ चरे घासा । गउ० रेच० गउ० ॥ ए० ४ । कहत जडाव लगी जेपुरमें । मुक्तिकी आसा । १८ सें तेपन सुखदाई । जुठ नही मासा । जु० । रे चतुरनर जुठ नही मासा । ए तन तेरा तन० ५ ॥

धरजा टोपी ए देसी । मातपिता सुत बंध वास रे । मुतलब केरा यार रे । गरज मीटी पूछे नहीं । ए तोडे जूनो प्यार रे । चेतो क्युं नी गीवार थारी । पाप न छोडे लार रे । आंकडी ॥१॥ नात जात लाइने बंधव । खांड गले ज्यां जायरे । रोग आपदा आय पड़े । जद दूरथकी भग जायरे । चे० २॥ पुन पाप संजोग मील्यो । सब भेला हुवा आयरे । हटवाडा मेला जस्यो । सब

थित पाकी उठ जायरे । चे० ३ ।। सुतो सुतो क्या करे थांने सुतां आवे नींदरे । काल सीराणे आय खडयो । जिम तोरण आयो गींदरे । चे० ४ ।। जे न क जोवनमें आयु छीजे । जिम अंजली को नीररे । काल हीरे तिहूं लोकमें । पोतक पोतक सारे जीवरे ।। चे. ५।। तन धन जोबन कारमो सरे । जतन करंता जायरे । दान सीयल तप खरची लेजै । आगे नहीं पिसतायरे । चे. ६।। काया चंगी रंग पतंगी । देख देख मत फुलरे । चार दीनाकी चांनणी । पिण छेअट होती धूलरे ।। चे. ७।। मदमातो रातो वीषय नमें । मन भावे जोम खायरे । जीव पंचेंद्री हणे हणावे । मरने दुग्गत जायरे । चे. ८ मान सीख सतगुरुकी साची । मत कर फेल फीतुरके । जेपुरमांए जडाव कहत है । चेते तेइ सुररे ।। चे० ९।।

।। बालचंदजी महाराजना गुण लिख्यते ।।

। गैरो फुल गुलावरो । ए देसी । सामीजी पधारया हे सखी । मारे हीवडे हरख अपारो । मारी सजनी । दरसण देखी मुनीराजना । आपां सफल करां अवतारो । मा. चालो सुगुरुजीने वंदवा । आकडी ।।१।। धन दोयाडो आजनो । सतगुरु जीरी आइ वधाइ मा० । रोम रोम सुख पामीयो मारी प्रगटी वडीए पून्याइ । मा. ।। चा. २।। आज कृतारथ हु थैइ । मारी फलीए मनोरथ माजो ।। मा० ।। सफल घडो दीने आजनो । दरसण दीना दीनदीयालो । मा. । चा. । नीत उठ सेवा सारस्यां । आपज सुणस्यां श्रीसुख वाणी । मा. । मन सुध भास्या भावना । देस्या दान उलट मन आणी । मा. ।। चा. ४ ।। जोग मील्यो दस बोलरो । करो दान सीयल तप भावो ।। मारी० ।। ए

दोफार चोतीसे गीणए ॥ क० ४ ॥ १९ सें बावन । फागण चोमासी ॥ फा० ॥ जेपुरमांए जड़ाव जोड़ प्रकासी । ए चोत्रीस सुंइ टाल सुत्र भणसी । वीघन सहु टल जाय । सीव सुख वरसी ॥ करो० ५ ॥

॥ ढाल ॥

क्या परमान करुंदा चंदा । ए देसी । वार वारमें क्या तुज वोलूं । मान कह्या मेरा । सव स्वारथके मीले मुसाफर । नहीं कोइ तेरा । नही० । रे चतुरनर । नही० । ए तन तेरा तनक तमासा पाणी पतासा । आंकडी ॥ १ ॥ झूटा तन धन जूठा जोवन । झूटा आवासा । पाव पलकमें छूट जायगा । जंगल होए वासा । जं० । रेच० । जं० । ए० २॥ हाडकी टटी चामका पडदा । वंध रइ नासा । लोइ मांस अंगमें जलके । शौच नहीं मासा । सु० रेच० सु ॥ ए० ३॥ नावे धोवे वेस । वणावे अंत्रकी वासा । इदेही पर धोव उगेगी । गड चरे घासा । गउ० रेच० गउ० ॥ ए० ४ । कहत जडाव लगी जेपुरमें । मुक्तिकी आसा । १९ सें तेपन सुखदाई । जुठ नही मासा । जु० । रे चतुरनर जुठ नही मासा । ए तन तेरा तन० ५ ॥

धरजा टोपी ए देसी । मातपिता सुत वंध वास रे । मुतलव केरा यार रे । गरज मीटी पूछे नहीं । ए तोडे जूनो प्यार रे । चेतो क्युं नी गीवार थारी । पाप न छोडे लार रे । आंकडी ॥१॥ नात जात लाइने वंधव । खांड गले ज्यां जायरे । रोग आपदा आय पडे । जद दूरथकी भग जायरे । चे० २॥ पुन पाप संजोग मील्यो । सव भेला हुवा आयरे । हटवाडा मेला जस्यो । सव

थित पाकी उठ जायरे। चे० ३॥ सुतो सुतो क्या करे थांने सुतां आवे नींदरे। काल सीराणे आय खडयो। जिम तोरण आयो बींदरे। चे० ४॥ [illegible] जिम [illegible] नीररे। काल कीरे तिहूं लोकमें। योतक योतक मारे जीवरे॥ चे. ५॥ तन धन जोवन कारमो सरे। जतन करंतां जायरे। दान सीयल तप खरची लेजै। आगे नहीं पिसतायरे। चे. ६॥ काया चंगी रंग पतंगी। देख देख मत फुलरे। चार दीनाकी चांनणी। पिण छेवट होती धूलरे॥ चे. ७॥ मदमातो रातो वीषय नमें। मन भावे जीम खायरे। जीव पंचेंद्री हणे हणावे। मरने दुग्गत जायरे। चे. ८ मान सीख सतगुरुकी साची। मत कर फेल फीतुरके। जेपुरमांए जवान कहत हे। चेते तेइ सुररे॥ चे० ९॥

॥ बालचंदजी महाराजना गुण लिख्यते॥

। गैरो फुल गुलावरो। ए देसी। सामीजी पधारया हे सेखी। मारे हीवडे हरख अपारो। मारी सजनी। दरसण देखी मुनीराजना। आपां सफल करां अवतारो। मा. चालो सुगुरुजीने वंदवा। आंकडी॥१॥ धन दीवाडो आजनो। सदगुरु जीरी आइ वधाइ मा०। रोम रोम तुव [illegible] मारी प्रगटी वडीए पून्याइ। मा.॥ चा. २॥ आज [illegible] हु थैइ। मारी फलीए मनोरथ माजो॥ मा०॥ सफल घडी दीने आजनो। दरसण दीना दीनदीयालो। मा.। चा.। नीत उठ सेवा सारस्यां। आपन सुणस्यां श्रीगुरु वाणी। मा.। मन सुध भावस्या भावना। देस्या दान उलट मन आणी। मा.॥ चा. ४॥ जोग मील्यो दस बोलरो। करो दान सीयल तप भावो॥ मारी०॥ ए

अवसर चूको मती । कोइ उत्तम खेत्रो दाखो ॥ मा० ॥ चा० ५ ॥ घर धंधो छे कारमो । सव मुतलव केरा यारो । मा० । साचो सरणो धर मेरो । माने भव भवनें आधारो ॥ मा० ॥चा० ६ ॥ चैत सुकल छ तेपने । जडावजो जोड वणाई ॥ मा० ॥जेपुरमां ए जुगतेसु । सव वादांरे मन भाइ ॥ मा० ॥ चा० ७ ॥

॥ नेमजीरो वारा मास्यो लीख्यते ॥

। न्यालदेरा गीतनी देसी । असाढमें आसा हुतीजी कइ । आसी जान वणाय । आया तो फिर क्युं गयाजी । होजी कोइ पसुवा दोस चढाय । अव फोर आसो नेम नेमा करीजो । आंकडी ॥ १ ॥ सावणमें संजय लीयोजी कइ । संग लेइ परिवार । जाय जाय चढया गिरनारपेजी । होजी । कोइ हमारी न लीनी तार ॥ अ० २ ॥ भाद्रवे वरखा घणीजी कइ नदीयां चल्यां नोर । चारु दीस पवन जे कोलतोजी । होजी मारे लागे तीखो तीर ॥ अ० ३ ॥ आसोज आसा वडीजी । अव आसी दीनदीयाल । मनरा मनोरथ पूरसीजी । होजी माने करसी वगेज नीहाल ॥ अ० ४ ॥ कातीक कंथ नहीं आवीयाजी कइ । यो मन सांसो थाय । पर्व दीवाली किम करूंजी । होजी मारो तन धन एलो जाय ॥ अ० ५ ॥ मीगसर महीने पद भरेजि । कइ मंगल माता जोय । सार न पूछी साहीवजी । होजि मैंतो झुर २ पींजर होय ॥ अ० ६ ॥ पोस महीने सी पडेजि कइ । जमै नदीनां नीर । नेम खडा गीरेनारपेजि । होजि ज्यारो कंपे नगन सरीर ॥ अ० ७ ॥ मह वसत वीराजियोजी कइ । फुली सव वनेराय । हुं कुमलानी केल ज्युं जि । होजि मारे पूरवली अंतराय ॥ अ० ८ ॥ फागण फाग खीलावज्योजी

कइ । अरज करुं कर जोड । अवर पुरुषनी आखडीजी । होजी मारे थेंइ माथारा मोड ॥ अ० ९ ॥ आंबो महुडो चैतमेंजी कइ । नेम न बहुभयो लीगार । कंठ खूल्यो कोयलतणोजी । होजी माने तुं तुं दे तुंकार ॥ अ० १० ॥ फल पाका वैसाखमेंजी कइ । पाकी दाडम द्राख । काची कत्रर थांरो प्रीतडीजी । होजी माने छोड़ो ओगण भाख ॥ अ० ११ ॥ जेठ तपे अंते आकरोजी कइ । वाजे लूंदो जाल । नेम तपे गिरे नारेजी । होजी देही अतिसुख-माल ॥ अ० १२ ॥ वरस एक पूरो कीयोजी कइ । झूरतां राज-लनार । इक रंगी करी प्रीतडीजी । होजी कइ धन ज्यारो अवतार ॥ अ० १३ ॥ ले संजम लारे गइजी कइ । सफल कीयो अवतार । मुगत कीलो कायम कीयोजी । होजी पीव पहेला राजल नार ॥ अ० १४ ॥ १९ सें बावनजी कइ । जेपुरमांए जडाव । सावण बद तिथि पंचमीजी होजी यातो मांगे मुगत पडाव ॥ अ० १५ ॥

॥ दूजो बारा मास्यो लीख्यते ॥

राग बड़े घर ताल लागीरे । ए देशी । चैत कहे तुं चेत प्राणी । वीत्यो जाए वैसाख । बे साखां धरम पापरी । थांरे पाकी समकीत दाख । मत कर मारो मारोरे । धर्म वीने धूले जमारोरे । आंकणी ॥ १ ॥ जेष्ट श्रेष्ट तुम जाणजोरे । मानवरो अवतार । पुन संजोगे पामीयोरे । सो एलो मती हार ॥ म० २ ॥ असाढा आसा फलीरे । मोरया करतमलार । सतगुरु इंद्र धडुकीयो । वाणी वरसे सगन घने धार ॥ म० ३ ॥ सावण स्रवण रस पीजिएरे । जिन वाणी भरपूर । मीथ्यां रोग मीटा वसी । ज्यांर सीव सुख नहीं छे दूरे ॥ म० ४ ॥ भाद्रवे वीरखा गणीरे । दादूर करत पूकार । जनम

मरण नदीयां चली। मत डूबे कालीधार ॥ म० ५ ॥ आसोजा आसा करे । गुरु वचनाकी प्रतीत । स्वात बूंद जिम झेलज्यारे । नहींत्र होला फजित ॥ म. ६ ॥ काती किरतव आपणारे । देखो मत पर दोष । निज पर आतम ओलखोरे । आणो मन संतोष ॥ म. ७॥ मीगसर ममता मारनेरे । समता करो घरनार । सहल करो सिव पुर तणी । राखो केवल चोकीदार । म. ८ ॥ पोस महीने सी पड़ेरे । सह परीसा सुर । कायम भागा वापडा । ज्यारा भूंडा दीसे नूर ॥ म. ९ ॥ महा बसंत भली रितु आइ । हुलस्या भवी सुखकार । फुली पुरखदा देखनेरे । दरसण गुरु दीदार ॥ म. १० ॥ फागण फाग खेलो भव प्राणी । समकीत स्त्रीके संग। पीचकारी पच्चकाणरी । भर डारो सील सुरंग ॥ म. ११ ॥ बारा मास वीत्या केइ रीता । पडी आउखामें हाण । गइ गइ सो जाणंदो । अब चेतो चतुर सुजाण ॥ म. १२ ॥ अढारसें वरस बावनेरे । जेपुर सेके काल । जेठ महीने जडावजी । जोडी बारे मासरी ढाल ॥ म. १३ ॥

कहोरे उदा सामजी कद आसी । ए राग। साधुजीरी वंदगी मैं तो करस्यांरे । माहाराजारी वंदगी में तो करस्यां । हारे सें तो करस्यां ने भव तिरस्यां । सा । आंकडी ॥ १ ॥ मूनी पंच माहा वरत पालेरे । मूनी इरिया पंथ नीहालेरे । मूनी आतम गुण उजवाले ॥ म्हा. २ ॥ मूनी गुण सताइसधारीरे । तपस्या कर कठण करारीरे । खट कायाना हीतकारी ॥ सा. ३॥ मूनीग्यानदानरा दातारे । अनाथा जीवारा नाथारे । दरसण देख्या मीले सुख साता । म्हा. ४॥ मुनी दोष बेतालीस टालेरे । सत्रे भेदे संजम पालेरे ।

जीन आग्या प्रमाणे चाले । सा. ५॥मुनि गांव नगर पुर फीरतारे । मुनि पर उपगार ज करतारे । एक ध्यान सुकल मन धरता ॥ माहा. ६॥ अठारेसंससीलंगरथ धारारे । मुनि उपसम रसना क्यारारे । माने लागे खाड ज्यूं खारा ॥सा.७॥ संसार दुखासुं न्यारारे । भव जीवांने लागे प्यारारे । राग द्वेषने जीतणाहारा ॥ महा. ८॥ ज्यारी वाणी इमरत मेवारे । चोसठ इंद्र करे ज्यारी सेवारे । वारे वारे वंदू मुनि एवा ॥ सा. ९॥ नव वाड सहत व्रत धारीरे । केइ बालपणे ब्रीमचारीरे । करणी करे आतमा तारी ॥ महा. १० ॥ केइ तपसी त्यागी बेरागीरे । केइ ग्यानी ध्यानी वडभागीरे । सीव रमणीसुं लीव लागी ॥ महा. ११॥ ज्यामें गुण अनंता पावेरे । मांसु पूरा किया किम जावेरे । जडावजी सीस नमावे ॥महा. १२॥ समत १९ सें चालीसेरे । नैगीन रंभाजी हुलासेरे । कीयो चोमासो सुवीलासे ॥ सा. १३॥

॥ डोडीया पद लीखंते ॥

॥ राग काफीरी देसी छे ॥ मन चंचल केसे मुडेरी । पापी वीन पांखे उडेरी ॥ मन चंचल केसे मुडेरी ४॥ म. ॥ आंकडी ॥१॥ एरीए छीनसें लीन होय पुदगलमें । छीनमें जोगे जुडेरी । करएकलास । दास होय वोलोतो । छीनमे जाय लडेरी ४ ॥ म. २॥ एरीए मनकी मोज करे मनसुवा । भांगे केइ गडेरी । सेखसली जिम कर्म कमावे तो । दुरगत जाय पडेरी ४॥ म. ३ ॥ एरिए ग्यान लगाम थाम मन घोडा । उपर जाए चढेरी । मन वस राख जडाव जेपुरमें तो ॥ कर्म कवीसें डरेरी ४ ॥ म. ४॥

॥ राग तेहीज ॥

॥ मनकी गत कैसे लखेरी २॥ कवी जीन कह नहीं सकेरी। म. ॥१॥ आंकडी। एरीए नाटक चक्र वक्र गत एहनी। जावत को नै दीखेरी। चउ दीसमांए भमे भवरा जीम। फिरतो कोनै थकेरी ४ ॥ म. २ ॥ एरीए नीरलज लाजे नही मन मूर्ख। ठाम कुठाम तकेरी। मनकी ल्हर सुणे कोइ सैंणो तो। जाणे झूठो ज करी ४ ॥ म० ३ ॥ एरीए मन मावत तन चंचल हस्ती। ज्ञान अंकुसनकैरी। मन वस राख जडाव जेपुरमें तो। ज्यौं सुख चावे अखेरी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। मनडा मेरा बोहोत हरामी। जाणे एक अंतरजामी ॥ म० ॥ १ ॥ आंकडी। एरीए निज गुण छोड रमें पर गुणमें। एही जीवकी खामी। सतगुरु सीख भीख नहीं भरतो। होत जगत वदनामी ४ ॥ म० २ ॥ एरीए इमरत छोड। बीसन विष पीवत। होए कुमतको स्वामी। इणकी संग बहोत दुख पायो तो। अब तो छोड गुलामी ॥ म० ३ ॥ एरीए मनकी फोज चोज कर जीते। सोइ मुगतके गामी। जैपुरमांए जडावजी सीषूं। नमत सदा सीर नामी ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज॥

। मन चंचल हाथ न आवे। दोडयो वायर जावे। म० ॥आंकडी ॥ १ ॥ एरीए घेर घेर लाउ नीज गुण में। तो पिण फंदे लगावे। फाल भरे वंदर की नाइतो। कूद कीनारे जावे ४ । म० २ ॥ एरीए राग रंग अरु ख्याल तमासे। बीगर बुलायो जावे। ग्यान

ध्यानमें आलस आवत । अरड उआसी आवे । म० ३ ॥ एरीए भूत पीसाच कुंजर एहीकेहर । भूपत पीण वस थावे । जैपुरमांए जडाव कहे । मन पांख वीने उड़ जावे ४ ॥ म० ४ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। पूजजी तो बडा उपगारी ॥ आंकड़ी ॥ एरीए पंच महाव्रत निरमल पाले । गुण पट तीसे नीहारी । सुमत गुपत मन डीड कर राखे तो । ममता कुमत बीड़ारी । पूजजीसूं रहूं नीत न्यारी ॥ पू० १ एरीए सतर भेदी संजम पाले । तपस्या वीविध प्रकारी । दोप बयालीस टाले भली पर । ले नीरदोषण अहारी ॥ पू० २ ॥ एरीए वाणी वरसे । इमरत धारा । सुण समजे नर नारी । मीथ्या पारे धुपे आतम को तो । सम अंकुर उगारी । के फल लागां सुख भारी ॥ पू० ३ ॥ एरीए समतारा सागर । ग्यान उजागर । प्रतबोधे नर नारी आप तीरे अवरनकुं तारे तो । कर कर पर उपगारी के । अब तो बारी हमारी ॥ पू० ४ ॥ एरीए बीचरे ग्राम नगर पुर पाटण । बहोत करो उपगारी । सहर सुबटपूर वेग पदारो तो । वाट जोवे नर नारी। के इच्छा पूरो हमारी ॥ पू० ५ ॥ एरीए पाट बीराज्या पूज रतनरे । आचारज पद भारी । सांवली सूरत म्होनी मूरत । देख देख जाउ बारी ,के नीत नीत वनणा हमारी ॥ पू० ६ ॥ एरीए एक जीभसु कहुरे कठा लग । महीमा इ‿क तिहारी । वे कर जोड़ जड़ाव कहतहे । सहर जोध्याणा मजारी । वेसाख सुक्ल गरुवारी ॥ पू० ७ ॥

॥ राग तेहीज ॥

। सांवरा मती जावो गीरनारी । लाड बरजत राजल नारी । ।सा०

वाला मैंतो कै कै हारी ॥ ला० ॥ आकड़ी ॥ एरी ए मती जाणा मथुरा में आणा । करके जान तियारी । परण्यां पाछे जोगारम लीज्यो तो । मैं भी साथ तुमारी के । लेउंगी संजम भारी ॥ सां ० १ । एरीए पसुकी पुकार सुण चाले । मेरी पुकार न वारी । झुर झुर में पंजर भइ अतीम । विरह दावानल भारी के । दाजत देह हमारी ॥ ला. २ ॥ ऐरीऐ पूरषोतुमको त्रिद ने । जीव दया दील धारी । मेरी दया न करी अलवेसर । छोड़ गये गीरधारी के ।वीलखत हे महतारी ॥ सा. ३ ॥ ऐरीऐ वोत जलुस करीने आए । हरी हलधर संग थारी । उनकी जराभर काण न राखी तो । मुरजरए हे मूरारी । लाजी सब जान तुमारी ॥ला. ४॥ एरीए प्हेला वैराग हुतो ज्यो थांरे तो । क्या न कीयो वीसतारी । विन परण्या मारे खोड लगाइ तो । किण आगे करु ए पुकारी । जाणे कुण पीड हमारी ॥ सां. ५॥ एरीए यरण सांवला । सोमांएगाठीला । लख न सके नर नारी । कपट करी मेरो कीयो सगारथ । राखी अकन कवारी । करी न्हा चोरी तुमारी ॥ लां. ६॥ एरीए वारा मास विलाप किया केइ । दीया ओलंभा भारी । वरसी दान देइ व्रत लीनो तो । अव न्हां लागत कारी । जगतमें होए गइ जहारी ॥ सां. ७॥ एरीए अव जाउं काहा पाउं सावरीयो । ढूंढत ढूंढत हारी । सातसें सखीयां संग लेइ राजुल । चड गइ गढ गीरनारी । मीले ज्यां प्रीतम प्यारी । लां. ८॥ एरीए एसा कठोर भए तुम कबके । पूरव प्रीत वीसारी । तुंम तोडी सो मैं अव जोडु तो । लेउंगी संजम भारी । रहूंगी संगे तुमारी । सां. ९ ॥ एरीए कर एक तार । लार लेइ प्रीतम ।

पहुंती मुगत मझार । एसो नेह करे कोइ उतम । प्रतीअरता आचारी के । अवीचल प्रीत वधारी । सां. १० ॥ एरीए १६ स पंचावन वरसे । पोसमें ठंड अरारी ।जैपुरमांए जडाव कहत हे । धन धन राजुल नारी कु । नीत नीत वंदणा हमारी ॥ सां. ११ ॥

॥ लावणी लीख्यते ॥

॥ रथ चढी रागु रथ चढी जादू ननण आवत है ॥ रथ. ॥ चालो सखी छवि देखणकुं । भला देखणकुं ॥ रथ. ॥ आंकडी ॥१॥ छपन कोड जादू ब्यावने आए ॥ आगे अपछरा गावत हे ॥ भ. ॥ तोरण आय बोहत वधाय । देख देख सुख पावत है ॥ भ० ॥ रथ. २ ॥ पसुकी पूकार सुणी फिर चाले । सबही मील समजावत है भ० ॥ रथ० ३ ॥ बरसीदान देइ परमेश्वर सुरनर आणंद पावत हे । भ. । रथ. ४॥ संजम ले गीरनार सीधाए । सीवरमणीकुं चावत हे । भ. ॥ रथ. ५ ॥ सब सखीयां वीलखी होए चाली । राजुल सुण दुख पावत है ॥ भ. ॥ रथ. ६ ॥ बहु सखीयां संग ले कर चाली । रहनेमी समजावत है ॥ भ. रथ. ७। अवीचल प्रीत करी प्रीतमसें । अजर अमर पद पावत है । भ. ॥ रथ. ८ ॥ बे कर जोड जडाव जैपूर में ॥ लूल लूल सीस नमावत है । भ. ॥ रथ. ९॥

॥ रसना लीखंते ॥

॥ देसी वैरी लसकरीया । ए राग । ए रसना बीचारीने बोलो ए । हीरासुं पथर मती तोलो ए । आंकडी । बीगर बीचारी कइ जके । थारो वाजे अपजस ढोल ॥ रस. ॥१॥ खाय बीगाडे

पापणी तुं । बोल घटावे तोल । लम लगघे लाली रहे तुं । हारे जनम अमोल ॥ रस. २॥ दोष उघाड़े पारका हे । विन पूछयां अयाण । ज्यों तोने नहीं आवडे तो । बोलो मीठी वाण । रस. ३॥ मीठी वाणी प्यारी लागे हे । जन्मका वेर भागे ए । आ. फीरी छे । निंद्या खोरीनोपटेनी तरमी । परसुं गलावेखार । नीचली रहनीसभागणीवोने समजाइ सो वार । रस. ४॥ भणगे गुणगो सीखशो । थांरे मूल न आवे दाय । गाल गीतमें अग- वाणी । सारा प्हेली जाए रसना । हीनारी खडकी खोलोए । रस. ॥ ५ ॥ च्यारारी चुगली करे ए । अैंठो खायनीसुग । मान पडावे बोलने । मूडे धूल देवे सब जुग हे ॥ र. ६॥ होट कोटके मांए बैठी । बतीस चोकीदार । संक न माने तेहनी । धस नीकसे तत- खिण वार ॥ र. ७ ॥ वचन अमोलख जिने कया हे ।गुणधर गुंठी माल । गुण म्हलायत छोडने । ज्यारा अवगुण तारथ निहाल र. ८ ॥ इमरत वाणी बोलणी ए । खट काया हीतकार । जेपुरमांए जडावजो । थाने सीख दीनी बारंबार ॥ र. ९ ॥

॥ रसनारी ढाल दूसरीं लीख्यते ॥

कर हांरे घुमतडो घर आये । ए देश्नी । काल अनंते तू भम्योरे । जीवा लग रइ । हांरे प्राणी लग रइ । खांचा ताणजी । समजावे ए सुगुरु तोने । रसनां हे नीगर वीचारीने बोल । वैरण ए कइए गटावे मारो तोल । आंकडी ॥ १ ॥ गुण ढांके गुणवंतनाए । पर नींद्या हाए परनिंदा में आगेवांणजी ॥ स. २ ॥ तूं भोली समजे नहींए । मारा नीज गुण ॥हा. में पडी हाणजी ॥ स. ३ ॥ वीगतमै

लागी रहए कैइ बोले हा० अगट अयाणजी स० ४ ॥ रजक जिम राजी रहे ए तूं तो मेले हा० परायो धोयजीं ॥ स० ५२ ॥ पर आतम कर उजलीए तूं तो मेलो ॥हा० कर दे मोयजी ॥ स० ६ ॥ वैर वसावे बोलने ए तूं तो खाय हा० बीगाडे नाजजी ॥ स० ७ ॥ जनम बीगाडे जीवनो ए तोनै मूलन ॥ हा० आवे लाजजी ॥ स० ८ ॥ वंदीखानामें पडीए । थारे चारु । हा० चोकीदारजी ॥ स० ६ ॥ डाम सया केइ भातना ए । तूं ती अवतो । हा ए अवतो । लाज गीवारजी ॥ सम० १० ॥ हे चंचल चपला जसी ए । तूं तो बोले । हा० बचन नट जाएजी ॥ स० ११ ॥ पोचसके नहीं केवली ए । थाखे कीण वीद । हा० राखु समजायजी ॥ स० १२ ॥ प्रभूजी वचन रस पीजीए ए । नही कीजे ॥ हा० आल पंपालजी ॥ सा० १३ । गुण गावो गुणवंतना ए । सदा वरते । हा ए० संगल मालजी ॥ स० १४ ॥ सीख दीवी निज जीवने ए । मैंतो थारो । हा० आण प्रसतावजी ॥ स० १५ ॥वचन रतन जतना करीए । बोलो जेपुर । हा० मांए जडावजी ॥ स० १६ ॥

॥ देसी ॥ बड़े घर ताल लागी रे ॥ ए राग ॥

मन चंचल थिर न रयोजि । जब तुंम कीनो व्यार । तन सक्ति नहीं आपरी । तुम जोवो हीरदे वीचार । म्हाराजारी । मीठी वाणी रे । लागे अमीए समाणी रे ॥ आंकडी ॥ १ ॥ बेकर जोडी वीनउनी । नचो सीस नमाय । अर्ज करुं अलवेसरुं । थे सुंणज्यो चित लगाय ॥ म्हा० २ ॥ दुकर करणी आपरीजी । मार्ग ओगट घाट । पगल्याठाए पड़े नहीं ॥ थाने वर्स आया पूरा साठ ॥ म्हा०

३ ॥ गिराम नगरपुर वीचरताजी । तार्या गणा नरनार । अब अवसर थिर वासनो । तुंम याही करो उपगार ॥ म्हा० ४ ॥ तन मन थिरता राखनेजी । भजन करो भरपूर । किण वीद मारग चालस्यो । मारवाड घणो छे दूर ॥ म्हा० ५ ॥ आग्याकारी आदरेजी । सिष रतनांरी खान । सीध सरब सेवा करे । थाने अनमती दे सनमान ॥ म्हा० ६ ॥ म्हआवो आवो मैं करांजी । मोरश्ना जे में पुकार । ज्यो उपर कर जावसो तो । जोर नहीं है लीगार ॥ म्हा० ७ ॥ १९ सें तेपन भलोजी जैपुर सेंका काल । अर्ज करे जड़ावजी । तुम मानो दीन दयाल ॥ म्हा० ८ ॥

॥ देसी ॥ बेरी लसकरीयां ॥

ए राग । तुं पापी बहु पाप कीयाथी । तुं चुगली तुं चोर । बैरी तूं । तुं लंपट परनारनोरे । अधर्मी अंगोर ॥ १ ॥ प्राणी परदेसीडां । थारी अबतो सुरत । संभाल पापी जीवडला ॥ आं० ॥तुं करोधी तुं मानी अंखारीं । तुं कपटी कठोर । बैरी तुं । तुं लोभी तुं लालचीरे । नीसरमी नीठोर ॥ प्रा०६ ॥ तूं रागी तुं द्वेषी जगत को । तूं दूसमण तूं सैण । बेरी० सुख दुख करता तुंइ आतमको । दुख मेटण सुखदेण ॥ प्रा० ४ ।. तुं वालक तूं बावलोरे तूंइ जोध जबान । बैरी० तुं कायर तुं सुरमोरे । तुं बूढो नादान । प्रा०५ । तूं किरपण तुं दाता कहायो । तूं मा तूं साहूकार । बैरी तूं०॥ तूंइ रंक ने तूंइ राजा । थारा चरित अपार ।प्रा०६॥ तूं अग्यानी तुंइ मुर्ख । तूं ग्यानी प्रवीण ॥ बैरी० तुंइ सरागी, तुंइ बेरागी । तुं वडभागी तुं दीण ॥प्रा०७॥ तुंइ भोगी ने

जोगी । तुं फकर फैकीर । वैरी० तुंइ धर्मी तुंइ अधर्मी । तुं चंचल तुं धीर ॥प्रा०८॥ तुंइ सिध ने तुंइ संसारी । तुं तपसी तुं संत । प्राणी० कह न सकुं करमनकी वतका । जाण रह्या भगवंत । प्रा० ६ । चोरासीमें नाचतां । घणा सांग ल्यायो जगदीस । रीजाया प्रभू आपने । माने मुक्ती करो वगसीस । मारा प्रभूजी दीन दयाल । माने जनम मरणसुं टाल । आंकडी फीरी छे ॥ १० ॥ ज्यो दुख पाया देखने । माने माफ करो भगवंत । मति नाचे तुं पापीया । थारे आयो भवारो अंत ॥ मा० ११ ॥ १६ सें एकावनेजी । जेपुर होली चोमास । अरज करे जडावजी । प्रभू पूरो हमारी आस ॥ मा० १२ ॥

॥ बालचंदजी महाराज ना गुण लीख्यते ॥

देसी । केरवो । स्यामीजी चत्रुमास दीपाएनेजी । थे हुवा त्यारने त्यार । सतगुरुजी माएत वीरद बीचारनेजी । मारी वेगी कीज्यो सार । सतगुरुजी अर्ज हमारी सुण लीज्यो । कीरपा कर दरसण दीज्यो ॥ आंकडी ॥ १ ॥ सुत्र सुखने पदारीयाजी । आके हुवा सिस सुखकार । सामीजी ले परवार पदारस्योजी । कांइ माने कुण आधार । स० २ सामीजीरा नेण कवल दल पांखडीजी । थाको मुखडो पूनमचंद । सतगुरजी भवक चकोर नीहालनेजी । कोइ पामे परम आणंद । स० ३ । सामीजी अतसें धारी आपसाजी । कोइ वीराला छे कलूकाल । सामीजी सुं पाखंडी दवीया रहेजी । कइ जावे मूडो टाल । स० ४ । सामीजी

पाट बीराज्या फावताजी । जाणे केसी गोतमरी जोड । सामीजी गुरु भाइ गुण आगलाजी । नीत नमन करुं मद मोड । स० ५ । सामीजी रासी सवडा खीवराजजी । कांइ ब्यावचमें भरपूर । सतगुरुजी रात दीवस हाजर रहेजी । कांइ हंस बडा सिस सूर । स० ६ । सामीजी फते फते कर पामसीजी । कांइ उत्तम गते प्रधान । सतगुरुजी तप कर कर्म खपावसीजी । कांइ भजन करे भगवान । स० ७ । सतगुरुजी सब संतनके लाडलाजी । कांइ बालक सिष सुजाण । सामीजी सरणो लीनो आपरोजी । तुम राखजो जीवन प्राण । स० ८ । सतगुरुजी पुरण पुनमचंद्रमाजी । थारे नव दीखत अणगार । सामीजी बोत जतन कर राखज्योजी । ज्यांने दीज्यो पार उतार । स० ९ । १९ सें तेपन भलोजी । कांइ जैपुर सेंखेकाल । सतगुरुजी अरजी एह जडावकीजी । तुम मानो दीन दयाल ॥स० १०॥

॥ बालचंदजी महाराजनी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

। देसी । मनडो उमायोहो श्रीमिंद्र भेटवा । ए राग ।दोहा। आद नमु अरिहंतने । गणधर गोतम देव । सासण नायक वीरजी । नीत प्रत सारुं सेव । १ । सिधरिध नोनीध करे । टाले सकल कलेस । बालचंद मुनीराजना । गुण केहुं लवलेस । २ । समत १९ सें हो बरसज तेपने चैती दसरावो जाण । सुखे समादे हो । जैपुर सहर में । प्रगम्या मुनी जिनी भाण । बाल मूनीसर हो मारे मन वस्या । १ । भूलु नहीं खिण मात । पर उपगारी हो । तारी नीज आतमा । खट कायारा नाथ

। आ० वा० २ । सींघ चतुर मील हो । कीनी वीनती । अठ थाणे वीराजो दीवाल । पावन कीजे हो खेत्र मायरो । काडो मीथ्या साल । वा० ३ । तन वल खीणा हो । जाण्या नाथजी । रुत पिण देखी करुर । सींघ सरवनो हो । अति आगर करी । कीनी अर्ज मंजूर । वा० ४ । सासतर धारा हो । सीइ जीम गूंजेता । धूज गणा नरनार । वचन लबद कर हो । सहुने सुंतोकीया । मेटे मीथ्यात अंधार । वा० ५ । जाज समाणो हो । संसार समुद्रमें । तारक नावा जेम । मायतनी पर हो लेता संभालणा । भूल्या जावे केम । वा० ६ । स्वमत परमत हो । सहुने सुहावणा । मीठा मीसरी जेम । दीवाण मुसदी हो सेवा नीत सारता । वंदगी करी मूनी खेम । वा० ७ । ग्रीष्म ऋतु में हो लीनी अतापना । चार वीगेरा त्याग । नीत तप भोजन हो । एक वगत कीयो । दीन दीन चढतो वेराग । वा० ८ । एकज चादर हो एक वीछावणो । सयो सी ठंठार । अरस नीरससुं हो देहीने संतोषता काडयो तप जप सार । वा० ९ । अलप उपादी हो मंदी चोकडी । आदीजे वचन प्रभाण । वीरला हो सीहो । इण कलूकाले में । गुण रतनारी खाण । वा० १० । समत १९ सें हो । १९ सो भलो । भिलस्या सुखे चोमास । संजम लीनो हो । तिहां सुभ महोरते । मुनी मेघराजजी रे पास । वा० ११ । वरस साडत्रीस ज हो । संजम पालने । गणो कीयो उपगार मरुधर मालव हो । देस ढूंढाडमें । याद करे नर नार । वा० १२ । वेदनी कर्मज हो आयो जोर

में। आउ करम गयो खुट। सास खासनी हो सइ बहु त्रासना। आहार पाणी गयो छुट। वा० १३। चंदण मुनीसर हो। भलाइ पधारीया। साज भरीयो भरपूर। व्यावच कीनी हो। मुनी तन मन करी। रहत सरव हजूर। वा० १४। करी आलो-वणा हो। सुध प्रणामे सु गुरु भाइरे पास। पींडत मरणज हो। देस बीवारमें। एक मुगतरी आस। वा० १५। वद वैसाखज हो। छपन सालमे। तेरस पाछली रात। राइ पडीक्रमणे हो। सुध उपयोगसुं। करी हंसराज जी सुं वात। वा० १६। इण प्रणामे हो। काल करे कदां। तो पामे नीरवाण। इतनी कहने हो। प्राणज छोडीया। कर सागारी पछखाण। वा० १७। नीहरण कीनो हो। बोत उमंगसुं। बाइ भाइ अणूपार। बीरोहज खटके हो। मोटा मूनीतणो। पडे आंसुडारी धार। वा० १८। मरुधरमांए हो मोटो मानीज तो आखातीज तीवार। जेपुरमांए हो कहत जडावजी। अब मुज कुण आधार। वा० १९। इति संपूर्णः।

॥ श्रीमंदीर वहरमानरो स्तवन लीख्यते ॥

। देसी। प्रेमरस मैदी राचणी। ए राग। होजी श्रीमिंद्र जीनराय। जुगमींदर जिन दूसरा। वंदू बाउं ए सुबाउं जीरा पाए। सुजत सम दीस्टीधरा। वंदू वहरमान जीन वीस। बे कर जोडी भावसु। आंकणी। १। संयम प्रभूजी छटा देव। रिखबा नंदण सातमा। करुं अनंत वीरजीनी सेव। भजो सुर परमातमा। वं० २। बीसार वीजेधर जाण। चंद्रानंदण चित धरो। चंद

वाउंजीरी आण प्रमाण । भूजंगजी सेवा करो । वं० ३ । इसर श्री नेमजीनंद । वीरसेण दील ध्याइए । माहा भद्र जस आणंद । अजत वीर गुण गाइए । वं० ४ । ए वीसुइ जिनराज । खेत्र वीदेह वीराजीया । धन्य सेव करे नर नार । भव संचित कर्म भंजीया । वं० ५ । १९ सें ने वरस वेतालीस । चोमासो नवा सहर में । कीना जिनवरजीरा गुण गिरांम । तवन भलो मेंदी रागमें । वं० ६ । ससीवार काती सुद वीज । रंभाजीरा प्रसादसुं । माने मीले मुक्तरी रीज । जडाव कहे जीनराजसुं । वं० ७ । इति संपूर्णः ।

॥ देसी जीलारी ॥

। पूज वीनेचंदजी सुभ मोरथ आयाजी । मूनी खटही भला । मारे मन भायाजी । आंकडी । नव पालो नव प्रेहरोजी । नवरी करो नित हांण । निरणो करो नव बोलरो । थारे कवसुं पूरी पछाण । पू० १ । नवकीनी मिरमें राखवाजी । नवली दोप जाण । भजण करो नव बोलरोजी । नवसुं लीयो मन ताण । पू० २ । तपसी नमू जसराजजी । सोभाचंदजी वडा है वनीत । हरख हरख करणी करे । संजम पाले इंद्रियां जीत । पू० ३ । ग्यान भणे गुलराजजी । ज्यारे रात दीवस ओइ ध्यान । बेरागी वछ-राजजी । मुनी सव रतनांरी खांन । पू० ४ । वरतमान मूनी वरणव्या । वली वेरागी हूवा छे त्यार । लोक भाषा इम जाण । निश्चे जाणे जाणनहार । पू० ५ । मुज तुम गुण मेरु कोड । कह न सकुं रसना थकी । जडाव नमें कर जोड । पू० ६ । १९

स एकावनेजी। जैपुर में बरसाल। पूज तणा प्रसादसु । मारी फलीए मनोरथ माल । पू० ७ । इति संपूर्णः ।

॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

सासण नायक चीत धरीस । कांइ गणधर लांगू पाए। सिध सकल कीरपा करोस। कोइ बुध द्यो सरसती माय । आचारज आदे करीस। कांइ वंदू सीस नमायजी। मूंनी सुजाणमलणी। भलीरे वीच्यारी तारी आतमा। थारी सुरत प्यारी। भजन करोछो परमातमा। १। आंकडी। वाणी सुण वेरागीयास। कांइ जाण्यो अथीर संसार। चोथे आसरम चेतीयासरे। धन थारो अवतार। छती रीध छिटकायनस। कांइ लीनो संजम भारजी। मू० २। पूज वीने गुरु भेटीयास। कांइ माहा उतम भवीजीव। कर्म कटक दल जीतवास। कांइ दी समगत की नीव। कुटमी मेल्यो झुरतोस। थांरी बील बील करती धीयजी। मू० ३। पटणी कीसतूरचंदजीस लघू सुजाणमलजी भिरात। वालपणे संजम लीयो। मुनी वालचंदजी साथ। वाल बिरमचारी दीपता सरे। धन धन थारी मातजी। मू० ४। खाणे पीणे पहरणे सकाइ। सब कोइ चाले साथ। सीला अलूणी चाटवासरे। कोइये न घाले हाथ। वलीयारी जाउं आपरीस। थें करी प्रीत अख्यातजी। मूनी कीसतुरचंदजी। भलीरे वीच्यारीं तारी आतमा। थे अग्याकारी

भजन करोछो परमातमा । मू० ५ । जैपुर सहेर सुंहावणोस । जठे नीकसी हीरा खाण । मोल तोल ज्यारे नही सरे । चढयां ग्यान कुरसाण । मूनीश्वर ज्यारा पारखुं सरे । लीना रतन पीछाणजी । मू० ६ । १९ सें ५१ ने सरे । जैपुर में चोमास । अरज करे में जडावजी सरे । पूरो हमारी आस । मांगू बधाइ आसुं । मुज वगसो मुगत अवासजी । पुज वीनेचंदजी । भलोरे दीपावो । मारग जैनरो । थे परउपगारी । पार न पायो गुरु ग्यानरो । मू० ।

॥ देसी जीलारी छे ॥

प्रभूजी रीखब अजीत संभव अभिनंदण । ध्याउं हो । सुखकारी जीनराज । सुमत पदम । सुपासचंद । गुण गाउ हो । जीणंद । १ । प्र० सुवध सीतल श्री हंस बासपुज सामी हो । सुख० वीमल अणंत श्री धर्म संत सीव गामी हो । जीणंद ।२। प्र० कुंथ अरी मल्ली मुनी सोव्रत । जुग वीराता हो । सुख० नमीए नेम पार्स वर्धमान । वीख्याता हो । जी ३ । प्र० ग्यारेइ गुणधर । वहरमान जीनराया हो । सू० जैपुरमांए जडाव हरक । गुण गाया हो । जी । ४ ।

राग तेहीज । प्र० श्री श्रीमिंद्रदेव बडा देव नमे हो । सुख० दाय न आवे अवर देव । मुज मनमें हो । जी० । १ । प्र० खेत्र विदेह वीजेमें । अति सुखकारी हो । सु० कुंडरीकणी नगरीनी । छीब अत भारी हो । जी० । २ । प्र० संतकी मात तात । श्री हंस कहीजे हो । सुख० न्याय तीन लीछमीरो लावो लीजे

हो । जी० ३ । प्र० ज्यारा कुलमें रतन । चिन्तामण सरीखा हो । सुख० आयर उपज्या । सुरनरना मन हरखा हो । जी० । ४ । प्र० कला ब्होतर पुरखतणी प्रगटांणी हो । सुख० जोबन वयमें प्रण्या । रुखमण राणी हो । जी० । ५ । प्र० आउखो लाख चोरासी । पुरब वखाणी हो । सु० धनक पांचसो काया कंचण वरणी हो । जी० ६ । प्र० भोग तजीने जोग लीयो । जिनराया हो । सुख० चोसट इंद्र प्रणमें नीसदीन पाया हो । जी० ७ । प्र० एक चीत करने ध्यान सकल मन ध्यायो हो । सुख० केवल ग्यान । केवल दरसन पायो हो । जी० ८ । प्र० फीटक सींघा-सण चामर छत्र वीराजे हो । सुख० भाव मंडलने देव दुंदुभी वाजे हो । जी० ६ । अदवीच आप वीराजो पूनमचंदा हो । सुख० जीग मीग २ दीपे तेज दीनंदां हो जी० ६० । प्र० वाणी सुधारस वरसे इमरत धारा हो । सु० सुरनर तीरजंच समजे न्यारा न्यारा हो । जी० ११ । प्र. अतसें थारी देख भवक मन मोवे हो । सु. सो सोइ कोसामें रोग सोग नहीं होवे हो । जी. १२ । प्र. मनडो मारो मीलवाने उमावे हो । सुख. तन मन त्रसे गिण आयो नही जावे हो । जी. १३ । प्र. गुणवंता तो वीन तारया तिर जासी हो । सुख. मोए मूरखने विन तारया किम सरसी हो । जी. १४ । प्र. एह अरदास सुणीने किरपा कीजे हो । सु. चाकर जाणी नीज चरणामें लीजे हो । जी. १५ । प्र. पूज रतन समदायमें बहु गुणधारी हो । सु. दीन दीन दीपे रंभाजी इदकारी हो । जी. १६ । प्र. ज्यारे सरणे आय सदा

सुख पाया हो। सु. बे कर जोड जडाव हरक गुण गाया हो। जी. १७। प्र. समत १६ स तेतरीसें सुख वासो हो। सु. श्रावक भूगता। बडलू सुखे चोमासो हो। जी. १८॥

॥देसी पीचकारीकी छे॥

समुद्र बीजे सुत नेम कवरजी। सोरीपुर अवतारी रे। सेवा देजीरा नंदण। आं. १। छपन कोड जादव मील सारा। जान बणाइ भारी रे। से. २। तोरण आया मंगल गाया तो। पसुवां करीए पूकारी रे। स. ३। कर करुणा रथ फेर चल्या हे। जाये चढ्या गीरनारी रे। से. ४। किम आया किम फीर गया पाछा। तज राजुल सुखकारीरे। स. ५। चालो सखी जाउं गीरनारी। देउंगी ओलंभा भारीरे। से. ६ हमकुं छोड गए नीरधारी। जाए वरी सीवनारी रे। स. ७। आठ भवांरी प्रीत हमारी। नवमें कर दीवी न्यारी रे। से. ८। में चाउ प्रभू तुम नहीं चायो तो। केसे रहे एक तांरीरे। स. ८। महो ममंतसुं वोहत दुख पायो। कर दयोनी खेवो पारी रे। से. १०। ले संजम तपस्या कर भारी। मुगत गया ब्रह्मचारी रे। स. ११। कहत जडाव। तेवीसे रहणमें। आइ हमारी वारी रे। से. १२॥

देसी श्री श्रीमंधीर स्वामी महाविदेह अंतरजामी

गोतमजी उपगारी। ज्यां प्रसण पुछ्या भारी। ज्यारो आगम में अधिकारी हो। गुणधरजी गूणधारी। आं. १। अगनभुती नीनवंधो। भव भवना पाप नीकंदो। वाएभूतीजी आतम तारी

हो। गु॑. २। बीगत मुनीसर चोथा। ए सुखे सुखे सीव पोथा। जारी बार बार भलीयारीहो। गु॑. ३। पांचमा सुधरमा सामी। मन तारो अंतरज्ञामी। एक थां उपर इकतारी हो। गु॑. ४। छटा वंदू मंडी। ज्यां तार दीया पाखंडी। मोरीजी ममता मारी हो। गु॑. ५। अंक पीताजी मारा। संसार दुखासुं न्यारा। ज्यां करणी कीनी भारी हो। गु॑. ६। अचल अचल सुख पाया। मैतारज मुगत सीधाया। सीवरमणी लागी प्यारी हो। गु. ७। प्रभात उठी नित ध्याउ। मैं सेवा थारी चाउं। मोए राखो पास तुमारी हो गु॑. ८। चवदेसे बावन सारा। मैं वंदू न्यारा न्यारा। मोए दीज्यो सेव तुमारी हो गू॑. ९। १९ सें बावनने। वद जेठ पंचमी दीने। जेपुर में गुण बीसतारी हो। गु॑. १०। भगवंत भरोसो भारी। पूरीज्यो आस हमारी। जडावजी दास तुमारी हो। गु॑. ११॥

॥ देसी। मोत्यारो गजरो भूली ॥

। मत कर जीव गुमाना। नीस्ते एक दीन उठ जाना। धरी रह धन माया। बल भसमी होवे नीज काया। म. १। इंद्र चक्री हरी राया। सब बादल जेम वीलाया। बोत करी चतुराइ। पिण थीर नै रइ ठकुराइ। म. २। रावणसा अभीमानी। हर लाया रामकी राणी। परम पूरांण वखाणी। सब लंक भइ धूलधाणी। म. ३। आठमो चकरी जाणी। यो तो डुब मरचा परपाणी। इत्यादीक बहु राया। अभीमान थकी दुख पाया। म. ४। सावण वद १२ स। जेपुरमें प्रम हुलास। छोडो जीव गुमाना। जडाव

कहे मरजाना । म. ५ ॥

॥ ढाल ॥

। प्रभो आवीयो हो । होयने हुंसीयार । ए देसी । मोए नींद्रामांए सुतो । खूतो वीपय वीकार । हेलादेए जगावीयोरे । सतगुरु चोकीदार । मनवा मांनरे सतगुरुनो उपगार । आंकणी । १ । जगत दुखसुं काडीयोरे । दीयो संजम भार । कंकरसुं संकर कीयोरे । पुजा भइ अपार । म. २ । दीन जाणी दया आणी । झालीयो निज हाथ । काडीयो संसारसुंरे । लीयो आपणी साथ । म. ३ । समकीत रत्न दीखावीयोरे । मायत वीरद वीचार । ग्यान दीपक घटमें कीयोरे । मेंटीयो अंधार । म. ४ । भव समुद्र में डूबतोरे । लीयो मोषूं जेल । धर्मझाझ बैठायनेरे । दीयो कीनारे मेल । म. ५ । जोग लीयो दस बोलनोरे । सोऐलो मत हार । ए सामगरी दोहलीरे । चेते क्यूं नी गीवार । म. ६ । १९ सें पंचावनेरे । जेपुर सेके काल । कहत जडाव निज जीवनेरे । अब तो सुरत सभाल । म. ७ ॥

॥ हारे काय थका ए देसी ॥

। हारे जीवडला । सात धातकी पूतलीरे । हा. जोबन रंग पतंग । काया काचीरे । मत राचो माया कारमीरे । हा. मत राचो इण रुपमेंरे । हा. खीणमें होय वीरंग । का. १ । हा. हाड लोही नसा जालमेंरे । हा. चरम मांसरो पींड । का. २ । हा. मल मूत्रणी दीवडीरे । हा. केस रोमरो झुंड । का. ३ । हा वार

नाला वहे नारना रे । हा. पुरुष तणा नव द्वार । का. ४ । हा. प्रत्यक्ष दुखनी भाकसीरे । हारे असुच तणो आगार । का. ५ । हा. काचो कुंभ सीसी काचकीरे । हा. अथीर मानव की देह । का. ६ । हा पलट जाए पल एकमेंरे । हा मत कर इणसुं सनेह । का. ७ । हा जनम जरा दुख देहसुंरे । हारे सुखरो नहीं लव लेश । का. ८ । हा जेपुरमांए जडावजीरे । हा एम दीयो उपदेश । का. ६ ।

॥ देसी । उदाजी करमकी गत न्यारी ॥

। ए राग । उनालारा आलस करने । दरसण नहीं ए दीरायो । अब बरेसालो उतरण लागो ; उपर सीयालो आयो । १ । चनण मुनी दरसण वेगे दीराजयो । थेतो फिर पाछे । थे. जैपुर जाज्यो । च. आंकडी । १ । रीयां पीपाडे पधारो । सामीजी वडलूवी प्रसीजे । बायां भायां सबे वाट नीहाल । मोपर किरपा कीजे । च. २ । सीष्य स्वामीजीरी जोड भली हे । दीपे रही जग मांही । तपसी त्यागी वेरागीनीरागी वाल मूनी सुखदाइ । च. ३ । खीवराजजी खीम्या सागर । हंस वडा उपगारी । शिष्य सघला मोतनकी माला । सेवा करो नर नारी । च. ४ । अड-तालीसें रीया चोमासो । कीयो उपगार सवायो । बे कर जोड जडाव जुगतसुं । अर्जीरो पद गायो । च. ५ ।

चालत्तावणीरी

सुण पुत्र हमारा दीख्या मत लीजे माने छोडने । ए देशी ।

श्री गुरुदेव किरपा करीसजी भला पधारज्यो आप । मन चीन्त्या पासा ढल्या । मारो काटो भवनां पापजी । मूनी बालचंदजी भलाइ पधारया अजमेर सहेरमें । हूं करूं वीनती । करोनी चोमासो इण सहरमें । आंकडी । १ । नंदरामजी भला वीराज्या । किरपा कर मुनीराज । घणा मुनीसर अठै पदारे । दरसण करवा काजजी । मू. २ । चनण चनण बावनो सरे । दे सीतल उपदेस । भव भव तपत मीटाय दे सरे । चावा देस बीदेसजी । मू. ३ । खेमराजजी खिम्या सागर । सिस वडा सुवनीत । तप जप संजम खप करे सरे । रात दीवस एक रीतजी । मू. ४ । कीसनलाल मूनी हंसराजजी । हे अवसरका जाण । सब बायारी वीनतीस । कांइ आप करो प्रमाणजी । मू. ५ । १६ सें पंचालसेसरे । अजमेर में धर चाव । मगन कवरका केणसु सरे । जोड करी जडावजी । मू. ६

देसी असवारीकी छे

चनणमूनी दरसण वेगे दीराज्यो । सिष सारा तुम साथे ल्याजो । मोपर कीरपा करजो हांजी थे तो वीचरत जेपुर आज्यो हारो मूनी अब मत आगा जाज्यो । आं. च. १ । सब श्रावक वसत हे दसकुं । याद करे नरनारी । कब मूनी पाव धरे जेपुरमें । जीवन प्राण आधारो । च. २ । ब्यार करी नवे स्हर पधारया । जेपुर केम वीसारयो । दे विस्वास करी थे निरासा । ओ कइ आपे वीचारयो । च. ३ । मरुधर देस में किरपा तुमारी । जावत वारंमवारी । चुक नहीं मुनीवरजीथाको । या अंतराय हमारी । च. ४ । पापी पाव चले नहीं केडे । सब तन छेह दीखायो । मन

म्हसंत धरे नहीं धीरज। दोज्यो तुंम दीस आवे । च. ५ । वहोत कठण है तुमारी छाती । बिन अपराधी वीसारया । कहा कहूँ मोए उपजत नहीं । वीनती कर कर हारया । च. ६ । वीजे द्रसण प्रसन हाय कर । भरपाइरीजवारी । जेपुरमांए जडाव कहत है । आही अर्ज हमारी । च. ७ ।

देसी कलालीरी

चंद चढो गिरनार हो कवरजी । आद नमुं अरिहंत हो । मूनीवरजी कांइ पांचे पदाने सीस नमावसुं हो राज । म्हामूनी । पां. । १ । दिल धर इधक आणंद हो । मू. कांइ सरव मूनीवरजीरा गुण गावसुं हो राज । २ । वाल मुनी दीन दयाल हो । मू. कांइ चनण वावनो हो राज । म्हा० च० । ३ । खेम खिम्या गुणधार हो । मू० कांइ हंस प्रसंस मुनी मन भावनो हो राज । म्हा० हं० । ४ । भाग वली भगवान हो । मू० कांइ तपसी सोभागी रागी मूगतना हो । म्हा० त० ५ । धन धन मूनी सुजाण हो । मू० कांइ वाल विरमचारी । वारी तेहनी हो राज । म्हा० । बा० ६ । भला पधारया म्हा भाग हो । मूं० कांइ आसा हूती । जीम चातक म्हेनी हो राज । म्हा० आ० ।७। १६ से तेपन सहो । मू० कांइ देस प्रदेसा । मैमा आपरी हो राज । म्हा० दे० ८ । जेपुरमांए जडाव हो । मू० कांइ चरणामें राखो । सफली चाकरी हो राज । म्हा० । चर० ६ ।

॥ वाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

नमूं अरीहंतने सरे । म्हावीर मद मोड । सासण नायक

तेहनो सरे। बंधु बे कर जोड। गुण गाउं मुनीराजना सरे। पूर्ण म्हो मन कोड हो। तपसी तसधारी भलोरे दीपायो मारग जैनरो। थे पर उपगारी। भजन करोछो भगवानरो। आं० १। गालचंदमुनी दीपता सरे। वैरागी भरपूर। च्यार वीगे त्यागन करो सरे। तपस्या कठण करुर। कहणीं करणी सारखी सरे। करे करम चकचुर हो। त० २। चनण चनण वावनो सरे। दे सीतल उपदेस। मीथ्या तपत मीटावता सरे। चावा देस वीदेस। ग्यान ध्यानमें लीनता सरे। नहीं प्रमाद वीसेसहो। त० ३। खेस खिम्यां गुण आगला सरे। तप कर बारा भेद। गरु अग्या आराधने सरे बांच्या मूल ने छेद। बीनो आराधे आतम साधे। लगी मुगत उमेद हो। त० ४। हंस दीपावे वंसने सरे। धन धन कह नर नार। उनाले अतापना सरे। तपस्या वीवीध प्रकार। सुखदाइ गुरुदेवने सरे। अहो निस अग्याकार हो। त० ५। अठाइ आदे करी सरे। पनरा ने इकवीस। दीपस्या इण भरतमें सरे। तपसी बीसवा वीस। भाग बली भगवानदासजी। नमन करुं निज सीस हो। त० ६। ओछी बुद छे हम तणीस। कोइ तुंम गुण अनंत अपार। सुर गरु जो पोते भणेस। कोइ जीभ्या करी हजार। तोपिण पार न पामीए सरे। गुणनो छेह न पार हो। त० ७। १९ सें समत भलो सरे। जेपुरमें धर चाव। गुण गाया गुरुदेवना सरे। सुणजो धर उछाव। दीजे मुगतरीजमे मोषूं। अरज करे जडाव हो। त० ८।

चाल लावणीरी छे

देसी तजीएरे आलस दूर थइ एक मन्ना। भजीए रे। धन तपसीं मुनी बाल २ ज्यांरी दीपे। बाल० खीम्या खडग संभाय। करमकुं जीपे। कीनी मंद कसाय। चाय पुदगलकी। चा० तज कुमतीको संग। सुमतकूं परखी। ज्यारे सीस वडा सुवनीत। नमूं सीर नामी। न०। धन तपसी भगवानदासजी सामी। आंकणी। १। ज्यां क्रोधमान माया सब समता मारी। म० छोड सकल प्रपंच म्हाव्रतधारी। तज वीपयनको संग। थए वीरमचारी। थ० भए सुमतीको सीरदार। जती धर्मधारी। तप कर तोडे कर्म। मुगत के रागी। ध० २। पूज रतन समुदायमांए वडभागी। मा० करे तपस्या घोर जोर वेरागी। एक मुक्तीको ध्यान। ग्यानके रागी। ग्यां० लीयो जोवन वयमें जोग भोगकुं त्यागी। भूल चुक अपराध। खमो मुज स्वामी। ख०। ध० ३। समत श्री १९ स साल चोपने। सा० कीया वास ईकवीस। दोए दस दीने। अस्या विडला हे अणगार। कहे सब धन्ने। क० ज्यांरा दरसणसुं दुख जाए। भजो एक मने। जेपुरमांए जडाव नमे सिरनामी। न.। ध० ४

देसी जवाइ

मांने प्यारा लागोजी। पंच म्हा वरत आदरया। म्हाराजा हो। पाले पंच आचार। तपसीजी मांने प्यारा लागोजी। म्हारा०। आंकडी। १। दोष बयालीस टालने। म्हा० ल्यो निरदोषण आहार। त०२। पंच इंद्रीने वस करो। म्हा० सुमत गुपत सुख-कार। म्हा० ३। संवर बांध्योसेवरो। म्हा० सीलरो कीयो।

सीणगार। त० ४। किरया किलगी खूल रइ। म्हा० तपस्यारो तिलक लीलाट। मा० ५। खिम्या खडग ज्यारा हाथमें। मा० ग्यान घोडे असवार। त० ६। मुकतीरा डंका वाजीया। म्हा० संजम संन्यालार। मा० ७। अचल अखै सुख माणवा। मा० होय रह्या छो त्यार। त० ८। १९ सें चोपन भलो। मा० जेपुरमें वर साल। मा०९। जुगत करी जडावजी। मा० जोडी ढाल रसाल।१०

चाल चलेरेलगाडी

ए संसार असार जाणने। छीनमें छीटकाया। कान मूनीरे शिष्य मेगजी। ज्यारे चरण चीत लाया। भर्त में वालमूनी दीपेरे भ० अष्ट करम दल काट मूनीसर पाखंडी जीते। आं० १। पंच म्हाब्रत नीरमल पाले। दोषण सब टाले। सुमत गुपत मन डीड कर राखे। आठुं मद गाले। भ०२। नारी नागण जाण मूनीसर। तडके न्है तोडे। सुमत सखीरो हुकम उठावे। उबा कर जोडे। भ० ३। चार बीगेरा त्याग मूनीरा। एक वगत अहारी। परपुदगल परचाय अलप है। निज गुण उर धारी भ० ४। वाणी मधुरी। घन जीम गाजे। भवि जीन हीतकारी। श्रावक बीर सोभे मुख आगे। खूली केसरकी क्यारी। भ० ५। किरोध मान माया अति पतला। बिसनाकुं मारी। विचरे गिराम नगरपुर पाटण। भवि जीवां तारी। भ० ६। एक जीभसुं गुण किम गाउ। महीमा अति भारी। कहत जडाव गुण सींधू सम। अलप बुध मारी। भ०७। १९ सें समत अठाइ। रीयां सुखवासी। दरसण द्यो एक वार। मूनी में चरणारी दासी। भ,८

तन बसतरके रंग लगाया ए देसी

न्यारी मती करो नेणासु । अरजी थूलभद्रसु । आं० । आप बेरागी । भए हे नीरागी । मारी लीव लागी चरणासु ।न्या. १ । मुगत म्हलकी स्हेल वताइ । डुबत राखी भव जलसु । न्या. २ । मेंतो पलक एक संग नहीं छोडु । पिण जोर नहीं करमांसु । न्या.३ । दीवस भूख निस नीदन आसी । दरसण कद करसु । न्या.४ । बिरमचारी करणी अति दूकर । गरु कहे सनमूखसु । न्या०५ । न्हे लगाइ दइ छिटकाइ । अब कहो क्या करसु । न्या० ६ । कोस्या दासी । भइ हे उदासी । रात दीवस तरसू । न्यां.७ । गणिका नार । पार उतारी । सनमुख करी समगतसु । न्यां.८ । बीकानेर ७३ चोमासो । जडाव कहे जुगतसु ।न्या०९।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी असवारीनी छे । खेत्र बीदेहे बीराज्यां सामी । गुण गाउ सीर नामी । जीन हमारी बीनतडी । अवधारो । होजी माने भवनीधि पार उतारो । प्रभूजी. । आं०१ । दूर दीसावर अति घणो आगो । आवणारो नही थागो । जी०२ । दरसण चाउ किण बीद आउ । नीसदीन तुम गुण गाउ । प्र० ३ । लवद बीद्या नहीं पांख न मारे । हाजर आउ तुमारे । जी० ४ । पांचमो आरो नहीं मारो सारो । अधम अनाथ उधारो । प्र० ५ । चोसठ इंद्र करे तुम सेवा । वाणी इमरत मेवा । जी० ६ । धन भव प्राणी । सुणे नीत वाणी । पूरब सुकरत जाणी । प्र० ७ । श्री मंधीरजी सुणो मारी अरजी । राखो पूरण मरजी । जी० ८ । उद्रा मेसर

मंगल वासर । जडाव जपे परमेसर । जी० होजी माने जिम जाणे तिम तारो । प्र० ६ ।

मोटी जगमें मोवणी ए देसी

श्री मंधीर जीनसायबा एक सुणज्योजी अवलारी अरदास । बे कर जोडी वीनवु' । भल वगसो हो प्रभू मुगत अवास । श्री मंधीर जीन समरीए कर जोडी हो उगंते सुर । कर्म कटे संकट मोटे । सुखसाता हो पामे भरपूर । श्री० १ । आं०। आप वीराज्या म्हा वीदेहमें । हूँ दुखमी हो आरारे मांए । जनम लीयो जीनराजजी । मारे पूरी हो दरसणरी चाय । श्री० २ । लवद वीद्या नहीं मां कने । कइ पांखज हो नहीं दीनी देव । किण वीध आउं तुम कने । दूरासु' हो सारु' नीत सेव । श्री० ३ । हुँ कुमती कादागरी । कइ थें छोजी प्रभू दीन दयाल । सेवक जाणी आपरो । मारा काटो हो प्रभू कर्म जंजाल । श्री०४ । भवसागर में भटकीयो। हूँ पापी हो अनंती बार । अब तो सरणो आपरो । मुज तारो हो प्रभू वीरध वीचार । श्री० ५ । वोहत न मागूं तुम कने । छोटीसी हो कीजे वगसीस । मुगत नगर देखाय हो । तो जाणु' हो किरपा जगदीस । श्री०६ । समत दसे नव आगले । बतीसे हो सुद कातिक मास । गुरणीजीरा प्रसादसु' । पांचमने हो कीनी अरदास । श्री० ७ । प्रेम करी पालासणी । चोमासो हो कीनो धर चाव । धर्म ध्यान आणंदसुं । कर जोडी हो जपे जडाव । श्री.८

॥ ढाल ॥

वारी हो जंबुजी वेरागी । ए देसी । प्रथम गुणधर गोतम

सामी । ज्यां गुण नमु सीरनामी । श्री वीरजीणंदजीन प्रसण पूछ्या । भव जीवां हीतकामी । भवी जीन ध्याचो श्री गुणधर-जीरा गुण गावो । सीव सुख पावो । आंकडी ।१। अगनभुती जिन बाय मूनीसर । चोथा वीगट बखाणी । कंचन वरणी देही दीपे । इमरत ज्यांरी वाणी । भ०२ । पांचमा गुणधर गूण कर गाजे । ज्यारो नाम सुधरमा वाजे । श्री वीर जीणंदजी २ पाट बीराज्यां । आतम कारज साज्यां । भ०३। मंडीपुत्र जीन मोरी पूत्र । ए दोए ग्यान गेरीठा । आमम वेण सुणी तुम सोभा । नेणा कदय न दीठा । भ०४। अंकपिता जीन आठमा कहीजे । ज्यारो पे सम ध्यान धरीजे । ज्यारा चरण कवलरी सेवा । चाउ प्रभूजी तुम दीजे । भ०५। अचल पिता जीन मुगतना दाता । ज्यारा नाम लीया सुखसाता । मेतारज जिन श्री प्रभावे । ए दोए सकल बीख्याता ।भ०६। ए इग्यारइ म्हाण कुलमें । आय लीयो अव-तारो । माहाण माहण धर्म सुणीने । लीनो संजम भारो ।भ. ७। इत्यादीक गुणधरजीरे आगे । अरज करु कर जोडी । गरीब नीवाज बीरद तुमारो टालोनी भवनी खोडी । भ.८ । समत १९ स बरस बत्रीसें । पालासणी सुख पाया । पुज रतन समदाए रंभाजी । तत सिष्यणी जडाव गुण गाया । भ. ९ ।

देसी हरजसनीं छे

वण गए वैद आप गीरधारी । आ. । जी लख चोरासी फिरता फिरता मीनखा देही पाइ । आरज देस उतम कुल आए । सतगुरु संग सुणी रे जीन वाणी । सु० तज अभीमान भजोजी

गुरु ग्यानी । भ० तज. । आं. १ । जी गुरुसम जगमें नहीं उपगारी । जीव अजीव बतावे । दे उपदेस क्लेस मीटाए । तार दीए भव जलसें प्राणी । ज. तज. २ । जी आहेडेपर चढकर आए । संजेती गुरु पाए । वाणी सुणकर भीज गए हे । लीनो संजम इथर जग जाणी । इ. त. ३ । जी परदेसी राजा अति पापी । केसी गुरु समजाए । खीम्यां करके करम खपाए । तपस्यामें जहर दीयो नीज राणी । दी. त. ४ । जी अरजनमाली मुदगर झाली । मनुष्य हत्या बहु कीनी । वीर बचन सुण समता लीनी । सुत्र में जीनराज बखाणी । रा. त. ५ । जी चोर चीलायत लंपट लूटेरा । पापी और गणेरा । इत्यादीक सुण गुरु मुख वाणी । केइएक जाए वरी सिव राणी । व. त. ६ । जी गुरु आराधो आतम साधो । तिर गए उतम प्राणी । कहत जडाव जैपुरके मांइ । खूल गइ अनंत सुखारी खाणी । सु. तज. ७ ।

श्री १०५ श्री रंभांजी म्हाराजंना गुण लीख्यते

दोहा । गुणवंतारा गुण कीयां । प्रगटे आतम जोत । बीस बोलमांए कीयो । बंदे तिरथंकर गोत । १ । सात समुदर साही करु । लेखण सब बनराय । गुरुणीजीमें गुण घणा । मो मुख कह्या न जाय । २ ।

ढाल १ ली । देसी संतजीनेसर सोलमारे लाल । अरीहंत सिध समरुं सदारे लाल । आचारज उवझाए । सुवीचारीरे । साधू साधवी श्रावकारे लाल । वंदू गुरुणीजीरा पाए । सु. । १ । सतीया रंभाजी दीपतारे लाल । चावा देस विदेस । सु. गुण

आगर सागर समोरे लाल। ते दाखुं लवलेस। सु. स.। आंकडी। २। जंबुदीपरा भरतमेंरे लाल। वडलूरु नीपट नजीक सु. रुधीयो गाव सुहावणोरे लाल। जठ साथ साधव्यारी पीक सु. स. ३। धनजीसेठ वसे तिहांरे लाल। गोत वोरा वड जात। सु० पदमा नामें भारज्यारे लाल। प्रतिव्रता सुवीख्यात। सु० स. ४। सुभ वेलां सुभ मोरथेरे लाल। जीव उतम कोइ आय। सु.। जननी कूखे उपन्यारे लाल। पूरव पुन्य पसाय। सु. स. ५। गरभ अवध पूरी हूवारे लाल। जनम्यां पुत्री रतन। सु. हाथो हाथे संचरेरे लाल। करता कोड जतन। सु. स. ६। सरीर संपदा सोभतीरे लाल; प्रतक रंभा रुप। सु. रंभाजी तिण कारणेरे लाल। नाम दीयो अनूप। सु. स. ७। ज्यारे पूठे जनमीयारे लाल। पुत्र दोए सुख माल। सु. मात पीतारे लाड-लारे लाल। ज्यूं मोत्यां वीच लाल। सु. स. ८। जोवन वय जाणी करीरे लाल। मात पिता चीत चाव। सु. संसारनी वीद साचवीरे लाल। करी सगाइ व्याव। सु. स. ९। ओस्त वाल कुल दीपतारे लाल। पूरो ज्यांरे परवार। सु. जयंगजीरी कुल वहुरे लालकु कीरतमलजीरी नार। सु.स. १०। अल्प करम भोगावलीरे लाल। ततखिण पडीयो वीजोग। सु. वडलू आया सासरेरे लाल। जठे साध साधव्यांरो जोग। सु. स. ११। ए इदकार अठै रयोरे लाल। आगल वात रसाल। सु. पूर्वला संवंदनीरे लाल। ए थइ प्रथम ढाल। सु. स. १२।

दोहा। कुटम सहू चीन्ता करे। ए सुंदर सुखमाल। किण

विद जनम ज काडसी । पडयो मोए जंजाल । १ । सांइ दासजी बोथरा । श्रावक सैंठा जाण । मामारो सगपण हतो । इण विद बोल्या वाण । २ ।

ढाल २ जी । देसी आज स्हेद् वाणी सुरज उगीयो । वाइजी चीन्ता मती करो । करो नित धर्म ध्यान । मोटी सती हो । दान सुपात्र दीजीए । छोडोनी आरत ध्यान । मो. धन २ समता थांएरी । थारा गुणारो छेय न पार । मो. कुल मरजादा में चालस्यो थारो जस फैलेला संसार । मो. आंकडी । २ । एह वचन सबने सुणी । आएयो मन संतोक । मो. धर्म करणारी मनरली । जाणयो हे भोगन रोग । मो. ध. ३ । चंदूजी मोटा सती । कांकरीयांरो कुल चंद । मो. विरद्पणे थाणे रया । बाइ भायांरे हरक आणंद मो.ध.४ ज्यारे सिष्यणी दीपता । राम कवरजी म्हाराज । मो. द्रसण कर परसण भया । अबे सारसु आतम काज । मो. ध. ५ । समायक पोसा करे । सुणे नित वाणी हुलास । मो. खंद हरी चोव्यारनो । एक सीखणरो अभ्यास । मो. ध. ६ । रात दीवस सेवा करे । ज्यांरां दील वसीयो वेराग । मो. कुटम सहु समाजएने । आग्या लीनी म्हा भाग । मो. ध. ७ । समत १९ से नवाणुमे । वद पांचम फागण माए । मो. पुज रतनजीरे सनमूख । संजम लीनो हुलास । मो. ध. ८ । राम कवरजीने सुपीया । थारे सिष्यणी छे सुवीनीत । मो. । साधु आचार सीखावज्यो राखज्यो रुडी रीत । मो. ध. ९ । गुरु आज्ञामें चालज्यो । दीनी संसारयां सीख । मो. पंच प्रमाद नीवारज्यो । वेगी करज्यो थे मुगत नजीक । मो. ध. १० । ए सीखावण दील धरी । करे नीत

ग्यान अभ्यास । मो. मूल छेद उर धारने । कीनो मिंथ्यातनो नास । मो. ध. ११ । वाणी कोयल सारखी । मीठो ज्यारो उपदेस । मो. भिन २ कर समजावता । घाले धर्मरी रेस । मो. ध.१२ । गुरणीजी र मानीजता । गुरनासु प्रीत । मो० सिखण्या सहुने सुहावणा । मान पलक पलक आवो चीत । मो. ध. १३। वरस वावीसां संजम लीयो । वीस वरस गुर संग । मो. दूजी ढाल सुहावणी । होवे तीजीरो उचरंग । मो. ध. १४ ।

दोहा । वीसे वीकानेरमें । गुरणीजी दीवलोक । प्होता चव दस चानणी । ज्यांरो पड्यो वीजोग । १ । पूज कजोडीमलजी । जाण्या गादी जोग । पत्रीतणी पद थापीया । राजी हूवा लोक ।२।

ढाल ३ जी । देसी सुखकारी मारा पुजजी म्हाराज । मही मंडलमें वीचरताजी कांइ सिषयांरे प्रवार । खट काया रख वालता जी । कांइ करतां पर उपगार । जी सुखकारी मारा गुरणीजी म्हाराज । जी थारा दरसणारी बलीहारी । आंकडी । १ । खिम्या खडग ज्यारा हाथमेंजी । कांइ झाली तपस्यामें सेर । सुभट वीस दोए जीतवाजी । कांइ नीश्चल मेरु सुमेर । नी.१ । गुण छतीस बीराजताजी कांइ । विधाना भंडार । सुखदाइ सहु जीवनेजी कांइ । चर्ण करण गुणधारजी । सु. ३ । रवि जीम दीपे भरतमेंजी कांइ । ससि जीम सीतल होए । भवक चकोरवीकसे हीएजी । थारी सुरत मूरत जोएजी । सु. ४ । कंठ कला सुध बांचणीजी कांइ । वीधसु करता वखाण । भवीयणरा मन मोवीयाजी । थारी सुण सुण इमरत वाणजी । सु. ५ । वरस एकतालीस वीचरीयाजी कांइ । सुरपणे सुखकार । चालीससें चोमासो नागोरमेजी । जठे वोत

हूवो उपगारजी। सु. ६। कातीमें खेद हुइ गणी कांइ। कीना अनेक इलाज। भाग्य वायां करी वीनतीजी। अठ थाणे वीराजो म्हाराजजी। सु.७। दीलमांए वेठी नहीजी कइ। रहवणरी थिर वास। आगे जाणी जावसीजी। हाल वीचरसु मास दोमासजी। सु.८। तन वल चीणो जाणीयोजी कांइ। नेत्रांमें पड गइ हीण। मन बल सेठो राखनेजी कांइ। ब्यारकीयो प्रवीणजी। सु. ९। दरसण दीरावागुरवेननजी कांइ। बडलु पधार्या माभाग भाया वायां करी बीनतीजी। अब वीचरणरो नही मागजी। सु. १०। माएत वीरद वीचारनेजी। मारी कीजे अर्ज मंजुर। तन मन सेवा सारस्यांजी। सदा रहसां चरण हजूरजी। सु० ११। वार २ करी वीनतीजी कांइ। मानी दीन दयाल। तन मन थरता राखनेजी। अब तोडसु कर्म जंजालजी। सु. १२। वस्त्र पात्र अहारनीजी कांइ। छोडी ममत दियाल। समता सागर जूलताजी कांइ। ए थइ तीसरी ढालजी। १३ सु०।

दोहा। तपस्या बीबद प्रकारनी। आमल नेइ वास। सीयाले एकासणा। एकंत्र चोमास। १। अणोदरी तप सासतो। करता बारइ मास। भणवो गुणवो सीखवो एक मुगतरी आस।२।

ढाल ४थी। देसी भूंडीरे भूख अभागणी। ए राग। ठाणे इग्यार वीराजतां। सुखसातासु आपलालरे। सोले सत्यारां अदेपती। करता थाप उथाप लालरे। १। गुरणीजीमांए गुण घणा। मो मुंख क्याय न जाए लालरे। कोडे जूगां लग वरणवे। सुर

गरु पार न पाए लालरे । आंकडी । २ । सगला भेला खटे नहीं कठण साधूरी रीत लालरे सुखसाता छे मायरे । थे क्युं नहीं वीचरो नचींत लालरे । गु० ३ । जतन कवरजीन राखीया । सेवा बंदगीमांए लाल रे । व्यार करायो जडावने । जेपुरकांनी जाए लालरे । गु० ४ । दोए चोमासा बारे कीया । फिर आइ तुम पासे लालरे । जीन मारग दीपावीयो । श्री मुख दीस्या बांस लालरे । गु० ५ । जीम जाणो तिमही करो । मेतो हूवा नचीत लालरे । जीन मारग दीपावज्यो । चालो गुर वचनारी रीत लालरे गु. ५ । सिषण्यां आपरसावडी । मूडा आगे ठाठ लालरे । रात दीवस हाजर रहे । एक बूलायां आठ लालरे । गु० ७ । किरपा श्री गरुदेवरी । प्रसंसे मुनीराय लालरे । चोथा आरारी वानगी । कोइ रह गइ पांचमामांए लालरे । गु० । सिध सरव सेवा करे । धर्मध्यांनरा ठाठ लालरे । चंदणमालानी परै । सोभरया बेठा पाटे लालरे । गु० ८ । देही जाणी देवालणी । नही करी सार संभाल लालरे । छत्ररसांलग काडीयो । तप जप रुप्यो माल लालरे । गु० १० । आउथित थोडी रही । बेदनी कर्म वीसाल लालरे । ते आगे तुम सांभलो । ए थइ चोथी ढाल लालरे । गु० ११ ।

दोहा । पलक पलकमें पूछता । कतनी छे अब रात । पडिकमणो मनमें बस्यो । ओर न दूजी बात । १ । स्हाग सुकल एकस दीने । पोर एक चढ्यो सुरे । कारण पुखीया वाएनी । वेदन सही करुर । २ ।

ढाल पांचमी । राय बडगर ताल लागी रे । जीव. सम प्रणामे भोगवीरे । अबस पणारी खेद । करम लणायत जाणने चूकाया

व्याज समेत । १ । गुरणीजी ए गुण भारी रे । मैमा भरत मजारी रे । आकडी । करोध मान कीया पातलारे । माया लोभसुं दूर । करम कटक दल जीतवा । हूवा सतवादी ने सुर । गु० २ । ओख-दरी नहीं आसतारे । सरस नीरसमभाव । निज परआतम तारवा । बेठा सीलधरमरी नाव । गु० । सत्रू मीत्र सारखारे । समगिण रंक ने राव । संजम पाले सुरमा । ज्यांरा दिन दिन चढता भाव । गु० ४ । पांचम सुख बीराजतारे । रुचसुं लीनो आहार । पचखाण कराया श्री मुखेरे । सरव सत्यां लीयां धार । गु० ५ । म्हा व्रत पांच आलोचनेरे । सरणा च्यारुं लीध । चोरासी लख जीवसुंरे खमत खामणा कीध । गु० ७ । तीन करण तीन जोगसुंरे । त्याग्यां पाप अठार । सैगारी अणसण लीयोरे । पचख्या चारुंइ अहार । गु. ७ । कीतरीक रात गया पछेरे । पोढ्या सुखे समाध । ततखिण पाछा उठीया । एक समरण रो उदमाद । गु० ८ । मोरथ दोएरे आस-रेरे । भजन कीयो भरपूर । पंचपदाने वंदणारे । स्वमुख दीनीहुर । गु० ९ । थाक गया बेठा थकारे । पोढ्या पाछली रात । मनमांइ माला फेरता । ज्यारो बीसवा उपर हात । गु० १० । ध्यान सुकल मन ध्यायनेरे । पाप पूंज प्रजाल । निज आतम नीरमल करी । संपूरण पंचमी ढाल । गु० ११ ।

ढाल छठी । दयारणसिंघो वाजीयो । जागो २ नरनार ए देसी । तीजी वार उपनी हो । पुलीया वाए नीधेद । सुणावो २ पूकारता । एक संथारारी उमेद हो । गरणीजी गुण सागरा । आंकणी । १ । वार २ ज्यान पूछीयो हो । तीन हांकारा भराय । संथारो कराउं आपने । थे सरध लीज्यो मनमांए हो । गु० २ ।

तेरे सत्यांरी साखसुं । मनमांए सेठी धार । त्याग कराया जडावजी हो । जाव जीव चोव्यारहो । गु० ३ । पुप नक्षत्र तिथ पंचमी हो । सिध जोग गरुवार । सुध प्रणामां सरधीयो हो । संथारो चोव्यार । गु० ४ । सरणा च्यार सुणावीया । सलेखणांरो पाठ । परभाथे पूज पधारीया हो । नर नारयांरा ठाठ हो । गु. ५ । त्याग वेराग हूवा गणा हो । खंद कुसील चोव्यार । रंभाजी मोटा सती हो । कर दीयो खेवो पार हो । गु. ६ । आलोइ नींदी नीःसल थया हो । अष्ट पोर चोव्यार । संथारो पाल्यो सुरमां । ज्यारे दीसे अलप संसार । गु. ७ । पोस करसन छट सुक्रने हो । चोथा पोर मजार । सुरगत जाए वीराजीया । जठ वरत्या जे जेकार हो । गु.८ । श्रावग बरग भैला हुवा हो । खरचे होडा होड । निहरण कीधो सरीरनो हो । पूरयां मनरा कोड हो । गु. ९ । बरस एकतालीस बीचरीयां हो । नव बरस थिर बास । बावीस बरस घरमें रह्या । सजम पाल्यो बरस पचास हो । गु. १० । बोतेर बरसारो सरब आउखो हो । भोगव्या पुन रसाल । जीन मारग जोर दीपावीयो । माने बीरह खटक जिम साले हो । गु. ११ । गुण गुरणीजीमे छे घणा हो । मो मुख रसना एक । पार कीसी बिदे पामीए हो । नही कबिता वीवेक हो । गु.१२ । पूज बिने प्रसादसुं हो । सफल फली मुज आस । गुण गुरणीजीरा मन बस्या हो । ज्युं फूल बीच बास हो । गु.१३ । अकसर पद हीणो कयो हो । रस्व दिरग कोइ बिरुध । ते मुज मीछयामी दुकडं हो । कवि जीन कीजो सुध हो । गु.१४ । वडलुमें गुण जोडीया हो । बोत हूवा प्रसीध । पुख नखत्र शुद बीजने हो । सिध जोग संपूर्ण कीध हो ।

कलस । पूज रतन समदाएमांए । बडा २ हूवा म्हासती । पाटोधर श्री पाट दीपे । रुखमाजि इदकी रति । रु. १ । तस पाट धीजे देख रीजै चंदूजी चंदा समां । तसपाट तीजे रामकवरजी । तप जप में हूवा सुरमा । त. २ । तस पाए वंदू कर्म निकंदू । रंभाजी मोटा सती । आप पोते पाट चोथे । प्रसंस मोटा जती । प्र०३ । खट ढाल वारु राग चारुं । सांभलतां बहु रस हे । प्रसाद श्री गुरुदेवजी को । कवि जिन दीजो जस है । क. ४ । समत श्री १६ स कहीए । वरस वली ४६ स हे । वे कर जोड जडाव जंपे । गुरणी जिरी गुण रास हे । २ । ५ ।

आत्म निंदयारी ढाल लीखंते

देसी भरतजिरी छे । देव नमूं आरिहंतने । गरु गिरवा श्रीसाध । धर्म केवलीको भाखीयो । मैतो समकित रतन ज लाद जिवडला । तूंतो जतन करीजे जेयना ।१। आद रयो तीरजंचमें । बासठ लाख बीचार । तस थावर केइ जूणमें । तूंतो भमीयो अनंतीवार । जि० थारो दूख जाण एक केवली । २ । कर्म गस्या । हलवो हूवो । इंद्री पाइ दोए । बे इंद्री ते इंद्री चोंद्री । थारी अनंत पून्याइ जोए । जि० तूंतो काल संख्याता तिहा रयो ।३। असंनी तिरजंच पिण हुवो । इंद्री लादी पंच । चवदे ठीकाणा मीनखरा । जठे सुख नहीं पायो रंच । जि० तूंतो मरमरने उपज्यो तिहा । ४ । संनी जलचर आद दे । उपज्यो म्होमाए । सीत उसन परवसपणे । सही भूख तिरखा अथाय । जि० थारी गरज सरे नहीं प्राणीया ।५। ग्यान रहत अग्यानमें । जठे सही बेदना घोर । जि० कोइ नासण नसेगी नही ।६। प्रमाधामी देवता । ज्यारी पनरे । जात

तेरे सत्यांरी साखसु । मनमांए सेठी धार । त्याग कराया जडावजी हो । जाव जीव चोव्यारहो । गु० ३ । पुप नत्तत्र तिथ पंचमी हो । सिध जोग गरुवार । सुध प्रणामां सरधीयो हो । संथारो चोव्यार । गु० ४ । सरणा च्यार सुणावीया । सलेखणांरो पाठ । परभाथे पूज पधारीया हो । नर नारयांरा ठाठ हो । गु. ५ । त्याग बेराग हूवा गणा हो । खंद कुसील चोव्यार । रंभाजी मोटा सती हो । कर दीयो खेवो पार हो । गु. ६ । आलोइ नींदी नीःसल थया हो । अष्ट पोर चोव्यार । संथारो पाल्यो सुरमां । ज्यारे दीसे अलप संसार । गु. ७ । पोस करसन छट सुक्रने हो । चोथा पोर मजार । सुरगत जाए वीराजीया । जठ वरत्या जे जेकार हो । गु.८ । श्रावग वरग भैला हुवा हो । खरचे होडा होड । निहरण कीधो सरीरनो हो । पूरयां मनरा कोड हो । गु. ९ । बरस एकतालीस बीचरीयां हो । नव बरस थिर बास । बावीस वरस घरमें रह्या । सजम पाल्यो बरस पचास हो । गु. १० । बोतेर वरसारो सरब आउखो हो । भोगव्या पुन रसाल । जीन मारग जोर दीपावीयो । माने बीरह खटक जिम साले हो । गु. ११ । गुण गुरणीजीमे छे घणा हो । मो मुख रसना एक । पार कीसी विदे पामीए हो । नही कविता बीवेक हो । गु.१२ । पूज विने प्रसादसु हो । सफल फली मुज आस । गुण गुरणीजीरा मन वस्या हो । ज्यु फूल बीच बास हो । गु.१३ । अकसर पद हीणो कयो हो । रस्व दिरग कोइ विरुध । ते मुज मीछयामी दुकडं हो । कवि जीन कीजो सुध हो । गु.१४ । वडलुमें गुण जोडीया हो । बोत हूवा प्रसीध । पुख नछत्र सुद बीजने हो । सिध जोग संपूर्ण कीध हो ।

कलस । पूज रतन समदाएमांए । बडा २ हूवा म्हासती । पाटोधर श्री पाट दीपे । कुखमाजि इदकी रति । रु. १ । तस पाट धीजे देख रीजै चंदूजी चंदा समां । तसपाट तीजे रामकवरजी । तप जप में हूवा सुरमा । त. २ । तस पाए वंदू कर्म निकंदू । रंभाजी मोटा सती । आप पोते पाट चोथे । प्रसंस मोटा जती । प्र०३ । खट ढाल वारु राग चारुं । सांभलतां बहु रस हे । प्रसाद श्री गुरुदेवजी को । कवि जिन दीजो जस है । क. ४ । समत श्री १६ स कहीए । बरस बली ४६ स हे । बे कर जोड जडाव जंपे । गुरणी जिरी गुण रास हे । २ । ५ ।

आत्म निंदयारी ढाल लीखंते

देसी भरतजिरी छे । देव नमूं आरिहंतने । गरु गिरवा श्रीसाध । धर्म केवलीको भाखीयो । मैतो समकित रतन ज लाद जिवडला । तूंतो जतन करीजे जेयना ।१। आद रयो तीरजंचमें । वासठ लाख वीचार । तस थावर केइ जूणमें । तूंतो भमीयो अनंतीवार । जि० थारो दूख जाण एक केवली । २ । कर्म गस्या । हलवो हूवो । इंद्री पाइ दोए । बे इंद्री ते इंद्री चोंद्री । थारी अनंत पून्याइ जोए । जि० तूंतो काल संख्याता तिहा रयो ।३। असंनी तिरजंच पिण हुवो । इंद्री लादी पंच । चवदे ठीकाणा मीनखरा । जठे सुख नहीं पायो रंच । जि० तूंतो मरमरने उपज्यो तिहा । ४ । संनी जलचर आद दे । उपज्यो म्होमाए । सीत उसन परवसपणे । सही भूख तिरखा अथाय । जि० थारी गरज सरे नहीं प्राणीया ।५। ग्यान रहत अग्यानमें । जठे सही वेदना घोर । जि० कोइ नासण नसेरी नही ।६। प्रमाधामी देवता । ज्यारी पनरे । जात

प्रकाशक
महिला मण्डल
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ,
बारह गनगोर का रास्ता, जयपुर।

रचनाकार
स्वर्गीय महासती श्री जड़ावकंवरजी महाराज

मूल्य सवा रुपया

मुद्रक :
जिनवाणी प्रिंटर्स
कोटे वालों का रास्ता,
जयपुर

जद पुदगलरे साथ अब छेडो कद आवसी ; एक नाण श्री जग-नाथ । जी. तूंतो ले सरणो अरीहंतनो । १८ । आतम नींद्या में करी । पेर करी जो कोए । पूर कपट जो केलव्यो तो । मीछ-यामी दुकडंग मोए । जी. थारे अरिहंत सिधारी साखसुं । १८ । १९ सें समत भलो । उपर चोपन साल । जेपुरमांए जडावजी । जोडी जुगतसु ढाल रसाल । जी. आतो मगसर वद एकादसी ।२०

लावणी लीख्यंते

पापसुं जीव बोत राजी । खेलतो कुमत संग बाजी । होए रह्यो ममताको मोजी । सुमतकी सेज नहीं साजी । मीथ्यामतमें भुलतो । लाग्यां कुगुरुका कान । भव भवमें भटकावसी । थारे खुली कुगतकी खान । अंधेरा ग्यान बीना । तेरा जन्म इख्यारथ धर्म वीना । तेरा धर्म इख्यारथ मर्म बीना । प्राणी नहीं पावो भव पार गरुका हुकम बीने । आकडी । १ । जीवं तुं पुदगलको रसीयो । जगत जंजालमें फसीयो । कर्मको काट नहीं घसीयो । धर्मसु दूर जाए वसीयो । माया माया कर रह्यो । पच रयो रात और दीन । कोडी कोडी जोडने । भेलो कीधो धन । अंधेरा । तेरा धन इख्यांरथ दान बीने । तेरा दान इख्यारथ मान बीने । प्रा.२ । काया तेरी व्होत बणी चंगी । पलकमेंगी सता भंगी । धर्म विन देए तेरी नंगी । विपतमें होए कोण संगी । तप जप किरया वावरो । खाया ताजा माल । कर्म उदे जब आवसी । थारा नरका पडे हवाल । अधे. तेरी देय अलूणी चेतना । तेरा चेतन अलूणा दया विना । प्रां. ३ भटकतो त्रिया कतइ । पूत पर-

वार और भाइ । खानेमें सब भेला थाइ । संकटमें होए कोण साही । तेरा कीया तूं भोग ले । मन कर आरद ध्यान । अवसरमें चेत्यो नहीं । थारो गयो हीयाको ग्यान । अंधे. तेरा ग्यान इख्यारथ भजन विने । तेरा भ. समज विने । प्रां.४ । जुलम तुं व्होत किया भाइ । जरासी जंदगीमांइ । अब तुं चेत जागेला । देत हे सतगुरुजी हेला । १६ सें एकावने । फागण होली चोमास । जैपुरमांए जडावजी । करी लावणी तास । अं. तेरा जन्म इख्यारथ धर्म इख्यारथ धर्म विने । प्रां. ५ ।

सभाय लीख्यंते

देसी जिलारी छे । वारे वारे मति भटको हो । जिवांजिवो । आवो ग्यान घरमांए । सु० ग्यानी थाने कया समजाउं हो मना । आंकडी ।१। हिंसा परित्यागो हो । जि० । दान दया सुखदाय । मूर्ख०।२। झुठमति भाखो हो । झुठारी दूर जाय ।सु० ३। चोरी मती कीजे हो । जि०। दोन्यु भव दुख दाए । मू०४। परनारीसुं डरीए हो । जि०। पंचामें पत जाए ।सु०५। ममता नहिं कीजे हो जि० समतारे घर आए । हटीं० ६ । किरोध मान बूरो छे हो । जि० कपट लोभ द्यो छोड ।सु०७। रागधेग रुलावे हो ।जि० कलो हो कियांपत जाए । मू० ८ । आल देणो सोरो हो । ज़ि० भूगत्यां छूटको थाए ।पा०६। पिसुन पराइ हो । जि०परै २ बाद नहीं भाखे । सु० १० । रत अरत निवारो हो । जि० माया मिरखा नै दाखे ।११। मीथ्या सल साले हो । जि० समगत सेठी

मू०१३। पापेसु प्रच्यो हो । जि० ताग्यां छूटको थाए। मू० १४ निज मन समजावे हो । जि० जेपुरमांए जडाव ।सु०१५। एकावन होली हो। जि० जोड करी धर चावे अ.१६ ।

स्तवन होलीको

देसी फागणकी । होलीखेलोरे । हारे होली सुमतसुं हित- आणी ।हो.१। आं. । सुमत गूपतकी । करो पिचकारी । समवर सील भरो पाणी । हो. २ । मन मिरदंग सुरत सारंगी । मधुर २ गावो निन वाणी । हो.३। नेम धर्मका दोए मंजिरा । सरदा डोर करो प्राणी । हो. ४ । ग्यान गुलाल । अबीर घ्यानको । आबीर घ्यानको । आठ करम करो धूल धाणी । हो. ५ । स्तस्तार किरतकी भेरी । चरचा चंग वजावो ग्यानी । हो. ६ । एसो फाग खेलो भव प्राणी । सुखे सुखे जावो निरवाणी । हो.७ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । फागण वद चवदस जाणी । हो. ८ ।

राग तेइज

मती ढोलोरे । हारे मती. । नीर जलम बीगडे । म. १ । आंकणी । नीरसुं वीर जगत सब जिवे । नहींत्र लोग दुनीयां अरडे । मती. २ । दूध गिरतना दाम लगत है । पाणी ढोले थारो क्या बिगडे । मती.३। गली गली में फिरेरे भटकतो । धके पडे तो धधा पकडे । मती.४ । माए सुणेरे थारी वेन लजत है । सीरडी जिम कांइ अरडे । म. ५ । राख रेतसू होलीरे खेले

भिसटासु' देइ खरडे । म. ६ । धर्म ध्यानसु' सरम आवत हे । गाल गीतमें आगे अरडे । म. ७ । जीव असंख्या कया जीन-वरजी । विन मरजादा कइ रेडे । म. ८ । आण वेराग त्याग सुध कीजे । नहीतर जम ले सीस कटे । मती. ६ । एकावन फागण सुद तेरस । सुस करे तो कइ अकड़े । म. १० जैपुरमांए जडाव कहत है । जीव दयासु' जन्म सुधरे । म. ११ ।

राग तेहीज

कीजो २ रे हांरे कीजो २ रे । सुक्रत थारे संग चाले । १ । आंकडी । धर्म करे पिण मरम न जाणे । कुलकी रुडलीवीजाले की. २ । धर्मीसु' द्वेप पापीसु' प्रच्यो । ज्याने मारग कुण घाले । की. ३ । मात तात मुतलबका गरजी । सुखमें सीर सबी घाले । की.४ । आयो अकेलो ने जासी अकेलो । पुन पाप थारे संग चाले । की.५ । सतगुरु सीख मानी नही मूर्ख । सो भव भव-मांए साले । की.६ । तरसत देखी परकी सायबी । अब तेरा जोर नहीं चाले । की. ७ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । खर्ची लायो सो खा ले । की. ८ । एकावन फागण सुद पुनम । उतम गरु मारग घाले । की. ६ ।

राग तेहीज

पीज्यो २ हांरे पीजो २ रे । सुगण समतारा प्याला । १ । आंकडी । ममता डाकण बेत बुरी है । सब जगत खाया लाला पी० ।२ बालपणो हस खेल गमायो । जोबन में त्रियांका चाला ।

पी०३। बूडापे भगवंत नहीं भजीयो। मूंडामें पड रही लाभलां। पी०४। देस प्रदेसांमे फिरेरे भटकतो। भाग विने नहीं मीले गहला। पी० ५। धनके काज अनेक मूवा पछे। छोडेसो सिव सुख लेला। पी० ६। नरभव पायो तूं एल गमायो। आगे जवाव कइ देला। पी० ७। जेपुरमांए जडाव कहत है। प्रभू भज पार उतरव्हला। पी० ८।

राग तेइज

लीजो २ रे हांरे लीजो २ रे। धर्म धनको लावो। ली०। आंकडी। १। खायो न खुटे चोर न लुंटे। नहीं लागे राजारो दावो। ली० २। भार नही याको भाडो न लागे। मन आवे ज्यां लेजावो। ली० ३। गले नहीं विरखा रुत आयां। फले घणो हिरदामें वावो। ली० ४। काठ न आवे कीडा न खावे। कुसी पडे ज्या धर जावो। ली० ५। वांट दीयां तिलभर नहीं खूटे। दान देवणको राखो चावो। ली० ६। १९ स एकावन वरसे। फागण सुद पुनम गावो। ली० ७। जेपुरमांए जडाव कहत है। सुखे २ सीवपुर जावो। ली०।

राग तेहीज

दीजो २ रे हां २ दीजो २ रे। सुपात्र दान सदा। दी० १। आंकडी। दानसुं मान वदे इण जगमें। गूणीजन नीत कीरत गावे। दी० १। सेठ धनो श्री हंसकवरजी। सालभद्र सुख लीयो सगणा। दी० ३। संख राजा मेघरथ जयवंती। गोत तिरथंकर

बांध्यो सुगणा । दी० ४ । मान बडाइमें क्या धन खोवे । दानमें कर बरसावो सगणा । दी० ५ दान दीया थारो धन नहीं खुटे । खेत चीणा जीम जाणो सुगणा । दी० ६ । पात्र कूपात्र देखने दीजे । उत्तम फल लागे सुगणा । दी० ७ । जस कीरत तांइ धन खरचे । भावे ज्यांबलजाव सुगणा । दी. ८ । १६ स एकावन जेपुर । फागण सुद पूनम सुगणा । दी० ६ । हित उपदेस जडाव दीयो इम । नर भव सफल करो सुगणा । दीजो दीजोरे । १० ।

राग तेहीज

मत खावो रे । हांरे मत खावो रे । भवक कांदो मूलो । १ । म.। आकडी । जीव अनंता कया जीनवरजी । परभवको तूं डर भूल्यो । म. २ । फाड चीर आचार बणावे । मांए बोत भरे लूणो । म. ३ । अंतकाय सुखाय मणा बंद । सोगनकर मनमें फुल्यो । म. ४ । बेगण खाय भणीदो वणावे । पाप उदे जब क्यां सुलो । म. ५ । धर्मी बाजे खाता नहीं लाजे । ज्यांरे सिर पडसी धूलो । म. ६ । कांदो बांदो खाय सरावे । भव २ में होसी लूंलो । म.७ । अभख अनंत कया जीवनरजी । सुणतां २ कइ भूलो । म. ८ । आणे बेराग त्याग सुध कीना । देख देख मन क्यूं डुलो । म. ६ । बास बूरी याको नाम निकामो । खाय खाय चीत क्यां फूलो । म. १० । १६ सें एकावन जेपुर । फागुण शुद उडे धूलो । म. । कहत जडाव जमींकद त्यागो । नहीं तो निगोदमांए भूलो । म. १२। हित उपदेश सुणी भव जीवां । हीर दारी खीड-की खोलो । म. १३ ।

राग तेहीज

मत जाणो हांरे मती जाणोरे । मत्रक काया मेरी । म. १ । आकडी । मेरी २ करता व्होत दुख पाया । या कब ही नही हे तेरी ।म. २। कांया रंग पतंग सरीखी । उड़ता नहीं लागे देरी म. ३। इणसे मोए करे सो मूर्ख । खिणमें होए भसम देरी म. ४। इणमें राचनाच भव २ में । चोरासी में दी फेरी म. ५ । होए निसंक कर्म तू बांधे । भुगतण में काया न्यारी । म. ६ । पूगी मुदत रहण नहीं पावे । वीचमें जम ले घेरी । म. ७ । जब पिछ-तासी कुड छूडासी । नासखान नहीं हे सेरी । म. ८ । तप जप सार जडाव काड ले तो इज्जत रहली तेरी । म. ९ । १९ सें एकावन जेपुर । हित सीखामण हे मेरी । म. १० ।

राग तेहीज

मत पीवोरे हांरे मत पीवोरे । तमांखु जनम विगडे म. । आंकडी । १ । हाथ जलरथारोधुकरे कालजो । अरड उबासी आवे सुगणा । म. २ । रुप गयो थारा दांत डाडरो । थचकां थूक पडे सुगणा । म. ३ । नाकजरे थारा वीसन वीगाडे । डाडी मूछ भरे सुगणा । म. ४ शुध करे तुं साध संतकी । परकी एंठ पीवे सुगणा । म. ५ । दाम कटे थारो घटत कायदो । वदन बूरो वासे सुगणा । म. ६ । वहट नजार हजार मीनषमें । हूंकाने हुरडे सुगणा । म. ७ । तनक तमाकु मागे मगता जिम । लाज सरम नहीं आवे सुगणा । म. ८ । इण भवमें इतना अवगुण । पंचामें

पत जावे सुगणा । म. ९ । मान कयो तु छोड़ तमाखुं । नही तर नरक पड़े सुगणा । म. १० । अगन वरण कर हुको पासी । पीछे घणो पीसतावे सुगणा । म. ११ । १९ सें एकावन जेपुर । फागण सुद चउदस सुगणा । १२ । हित उपदेस जडाव दीयो इम । सुण २ त्याग करो सुगणा । म. १३ । इति संपूर्ण ।

ढाल चंदरी

रे रंगीला सुडा । सतगुरु दे छे हेला तुं समज २ ने गेला । दिल सुं वीचारोने पेलारे । तीरो भव प्राणी । संसार समुद्र जाणी । ती० । १ । आंकड़ी । परभव निस्ते जाणो । थे लीज्यो धर्मको नाणो । आगे नहीं नाणोरे । ती० २ । मात पिता पर-वारो । सव हे मुतलव का यारो । दुखमें कोई नहीं थारो रे । ३ । सु सवरत किया मोटा । जव जोर पडयो किया खोटा । तू खाय नरक सोटा रे । ति० ४ । पाततणो वोपारी । तुं कर्म कमाया भारी । सतगुरु की सीख न धारी रे । ती० ५ । इंद्रारे वस पडियो । तु भव भवमें रडवडीयो । थारो आतम कार्ज नै सरियो रे । ती० ६ । वेस वणावे भारी । तु तके पराइ नारी । थें घर की नार बिसारी रे । ती० ७ । भांग तमाखु खावे । तूं घर वेस्यांरे जावे । थने लाज सर्म नहीं आवे रे । ती० ८ । राजा जाणे तो डंडे । खर चाढे न सिर मुंडे । थाने न्यात जातमें मांडे रे । ती० ९ । दया जरा नहीं तेरे । तुं नवकरवाली फेरे । तुं माल वीराणा हरे रे । ती० १० । सतगुरु ग्यान सुणावे । जठ झुक झुक झोला खावे । वाता में रात गमावे रे । ती० ११ ।

आतम काज बीगाड़े । तूं न्याव पराया नवेड़े । तू पडयो कुतम के डेरेरे । ती० १२ । कुगुरुको मरमायो । थने हिंसा धर्म वतायो । तुं शुध समगत नहीं पायोरे । १३ । अब के अवसर आयो तुं । उतम नर भव पायो । थाने सतगुरु धर्म सुणायोरे । १४ । फागण शुद १९ से । जेपुरमें बीसवा बीसे । कांइ जडाव दीयो उपदेसेरे ।

ढाल

काटो २ करमकी बेडी । जागो २ रे मूर्ख मन मेरा । क्यां सुता होए सवेरारे । जा. आंकडी १ । भजो नाम । प्रभूजिका गेहरा जिणसुं टले भव फेरारे । जा. २ । तूं जाणे एह घर मेरा । पिण हो ए जंगल में डेरारे । जा. ३ । काया कपटण ठग २ खावे । नितका करे बखेरारे । जा. । ४ । धन धन करतो फिरे भटकतो । पिण विलसे कोइ अनेरारे । जा. ५ । कुटम सहु मुतलब का गरजी । अतंसमे नहीं तेरारे । ज. ६ । आयो अकेलो न जासी एकलो । मेटे मिथ्यात अंधेरारे । जा. ७ । चेत सुधी श्रावन में बरसे । तीजे वडी गण घोरयांरे जा. ८ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । मान कया गुरु केरारे । जा. ९ ।

राग तेहीज

लीज्यो २ रे सुगरुका सरणाः । ज्यो थाने भवजल तिरणारे । ली. । आं । १ राय संचेती पापी प्रदेसी । मेट दीया जन्म मरणारे । ली. २ । डीड परीहारी चोर चलायती । सुगरतमें अवतरणारे । ली. ३ । मेघ कवर धनोरिखराया । स्वारथ सीध अव-

तरणारे । लीज्यो० ४ । साल कबरने रिख अबंतो । आतम कारज करणारे । ली० ५ । इम अनेक गया सीवतमें । ज्यांरा सुत्रमें कीया निरणारे । ली० ६ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । अब उतम कार्ज कारणारे । ली० ७ ।

राग तेहीज

रहो २ रे जगतसुं न्यारा । ज्यो चावो नीसताराारे । रहो. आंकणी । १ । वेह रही जन्म मरण की धारा । डुब रया संसारारे । रहो० २ । आदी रातका पुत्र जायो । सरख्या सहु प्रवारारे । रहो. ३ फजर भइ जब गुजर गया है । हाय २ करे सारारे । रहो. ४ । परण्यो निरख हरखने सुंद्र । माने सुख अपारारे । रहो. ०। ५ । आवो काल कपट ले जासी । कोई न राखण हारारे । रहो. ६ । चार दीनाकी है चतुराइ । छेवट घोर अंधारारे । रहो. ७ । जेपुर रमांए जडाव कहत है । अब तूं जित जमारारे । रहो. ८ । १९ सत्तावन में वरसे । चेतमास उजियालारे । रहो. ९ । इति संपूर्ण ।

देसी पखवाडारी या वारामासीरी छे । पहेलो आलस करम काठीयो । करे ग्यान की घात । उदम नही किण वातरो सरे । पडयो रहे दीन रात । पसु सरीखी ओपमासरे । दीनी त्रीभुवन नाथजी । तुम समझो प्राणी । बोहत वूरा छे तेरा काठीया । सुण सतगुरु वाणी । दूर तजोनी तेरे काटीया । आंकणी । १ । काया माया वैन भारज्यां । मात पिता सुतभिराता । स्हो मायामें पस रया सरे । नहीं तिरणारी वात । ए सब हे मतलब का गरजी । एक न

चाले साथजी । तुम. २ । अकड लकड सारखा सरे । अव छदा अवनीत । लोड वडाइनगीण सरे । नहीं गुरुसू प्रीत । लोक सउ फित २ करे सरे । प्रभो होय फजितजी । तु. ३ दसमो कालकमें कयो सरे । अवनित जहर समान । वचन बोले असुवावणसरे । गरु नहीं देवे ग्यान । कूया कानरी कूकरी सरे । कोय न देवे मान जी । तु ४ । मीनष तिरजंच ने देवतासरे । अवनित दुखिया होए । गलयारगधानी ओपमा सरे दीनी सूत्र जोए । भूख त्रीपा गणी भोगवे सरे । भव २ दुखीया होय जी । तू. ५ । बोल चाल फेरे नहीं सरे बीगता बादकी तोल । प्रमादी पापी कीयोसरे । गमेगणी रंग रोल । तप संजमरी खप नही सरे । हारो जन्म अमोल जी । तु ६ । क्रोधी कुकरनी परे सरे । भूस भूस सामा होय । आप बले परने संतावे । लोक हसवाइ होय । तप संजम सव क्रोध सु सरे । बल जल भसमी होएजी । तु ७ । रोग करे तन जोजरो सरे । काया होय निकाम । तप सजम न कर सके सरे । रुचे नहीं अनपान । खाट पड्यो टसका करे सरे । गरकाने देवे कानजी । तु ८ । जस कीरत के कारण सरे । खरचे घर का दाम । उलटी अप कीरत हुवेसरे । लोक करे अपमान । सातमो अप-जस कर्म काठीयो । भाख्यो विरधमान जी । तु ६ । झाल्यो मत छोडे नहीं सेर । लीनी टेक समभाय । सटल्यां पटल्यां जे हुवे सरे । कुलने दाग लगाय । पकड्यो पूंछ गद्या तणो सरे । मुर्ख दु लाता खाय जी । तु० १० । डरकी बात सुणे ज्यो तिलभर । मैं लागे तिण वार । गुरु संगत न कर सके सरे । आवे संक

अपार । आख्यां सरखा नवी ।ज्यारे काजलरो सिणगार जी । तु॑० ११ । सुत्र चारीत्र अंतरायसु॑ । धर्म न आवे दाय । संका-संकीसु॑ करे सरे । मोजी नही भेदाय । काली कामल रंग कसु-मल । नहीं बदे तिण मांयजी । तु॑० १२ । मन चंचल थिर नै रहे सरे । च्यारु॑ दिस झोला खाय । सतगुरु वाणी वागरे सरे । सुणे न चित लगाय । मन डीगे ज्यु॑ काया डीगे तो । जडा मूल सु जायजी । तु॑० १३ । भरी सभा में बेठ अगाडी । झुक झूक झोला खाय । पूछयां साच न कहे । हमारी आख्या नहीं गुलाय । वाणी जेलु आपरी सरे । लटका करु॑ मुनिरायजी । तु॑० १४ । समदाणी कर्म काठीयो सरे । कयो तेरमो जाण । धर्म ध्यान नै कर सर सके । लग रइ ताणो तांण । मोय तंतूस बांधीयं। सरे । छुटां पछ निरवाणजी । तु॑० १५ । १६ सें समत भलो सरे । वरस एकावन साल । चैत कृसन पक्ष अष्टमी सरे । करे काठीया नास । जेपुरमांए जडावजीस रे । करी लावणी तासजी । तु॑०१६॥

देसी । आज हींदवाणी सुरज उगीयो । ए राग । सात वीसन मती सेवज्यो । वीसनारी नही प्रतीत । सुगण नर हो । विसन विगूथा मानवी । कइक हुवा फजीत । सुगण० । सात० १ । आंकडी । पंडुरा यनापुत्र ते पंडव पाच सुजाणो । सुजाणो स० । जुवे हारी द्रोपदा । पडी गणी राजमें हाणो । सु० । सा० २ मांस रेवंती दुख सयो । म्हा सतकजीरी नार । सु० मंस अहारी पापीया खावे नरकमें मार । सु० सा० ३ । मद छकीया वकीया गण । जादव कवर सुजाण । सु० तपसी दोपायण खीजव्यो । दुवारका

थाली आयशे । सु० सा ४ । नरक गया घणा जावसी । वेस्यांसु करे प्रतीत । सु० परनारी प्रसंगथी । रावण हुयो फजीत । सु० सा. ५ । हिंसा पचंद्री । जीवनी नरक ले जावे ताण । सु० च्यार बोल करे जीवने । हुवे सुभ गतरी हाण । सु० सा ६ । चोरी चोरावे खालने । माए भरावे लुण । सु० मसतक काढ सुली दीयो । चोरनो वेली कुण । सु० । सा० ७ । एक एक दुखीया हुवा । सातु सेवे कोए । सु० । ज्यारा हवाल होसी बुरा । अतक लीज्यो जोए । सु० सा० ८ । बावन साल वेसाखमें । वद दसमी सुकर-वार । सु० जेपुरमांए जडावजी । कहे छोडोनी बिसन वीकार । सु० सा० ९ ।

राग : मोत्यारो गजरो

लखचोरासीमें भमीयो । जठ काल अनंता रुलीयो । नव घाटी फिर आयो । पुन जोग नर भव पायो । सुण भव प्राणी । सम जावे सुमत सयाणी । आं १ । आरज देसमें जारी । लीयो उतम कुल अवतारी । दीर्घ आयु देह नीरोगी । पूरी इंद्रां सतगुरुजीरो जोगो । सुं. २ । सुण बोलइयो सुलभ । पिण सरदा परम दुलभ बिरत करयो नहीं जावे । जीव नर भव अफल गमावे । सु. ३ । ए दस बोलरो ताणो । प्राणी बार २ मती जाणो । इम जाणी कीजो धरमे । ज्यो राखी चावो सरमे । सु० ४ । कूमत कूपात्र नारी । थाने लागे प्राण से प्यारी । तिणसुं कीयो घर वासो । वाला भव भव दुख पासो । सु. ५ । या छे नार धूतारी । कांइ ठगीया पुरुष हजारी । इणको संग निवारो । वाला सफल करो

अवतारो । सु. ६ । १६ सें ४२ ली सहर आ जीयापुर रसाली । दीयो जडाव लवलेसो । निज आतमने उपदेसो । सु. ७ ।

राग : भांगरा गीतनी

दीनकोर धंधो कर पर नींद्या । सुतो रैण जगावे । मोरा लाल नींदडली खारी लागे ए भजनमें नींदडली । परी जाए वेरण यासुं नींदडली । आंकडी । १ । नींद लेवान प्राणी कुमत बूलावे । थाने भर भरं प्याला पावे । मो. नी. २ । करम कथा के डीग नहीं जावे । माने भणतां गुणतां सतावे । मो. नी. ३ । राग रंग में दूरी दूरी जावे । मारा भजनामे भंग पडावे । मो. नी. ४ । ग्यान ध्यानमें आलस आवे । जठ झुक झुक झोला खावे । मो. ५ । चोर चुगल भोगी ने रोगी । जठ जाइ २ बीगर बुलाइ । मो. नी. ६ । द्रव निंद्रांसुं द्रव गमावे । वे तोइण भव में पिसतावे । मो. नी. ७ । भाव निंद्रामें जे नर सुता । थे तो खराये बिगूता । मो. ८ । कहत जडाव यातो बोत टगारी । थे तो राखीज्यो हुसीयारी । मो. नी. ९ । अब थांसुं निंद्रा कोल करुं । थू तो मारे नेडी २ मती आजे । मो १० । समत १६ सें वरस एकावन । जयपुर सेखे वालो । मो. नी. ११ । नींद निवार सुणो भव प्राणी । भांगरी राग रस लो । मो नी. १२ ।

ढाल

चेतन चेतोरे चे. । दस बोल जगतमें मुसकल मीलीयारे काया न्यारीरे । का. किम चेतन काया कीनी प्यारीरे । का.

आंकडी । १ निस दिन तुं इणके संग भीनो । पूंजी खोइ सारीरे । गइ गइ अब राख रइ । सुण सीख हमारीरे । का. २ । सुमत सखी कर जोड़ कहत है । करमांसु एक तारीरे । मुगत म्हलरी स्हल बताउं छे सुख भारीरे । का. ३ । रात दिवस कुमती घर बेठो । खेले पासा सारीरे । भरा बजारा धाडो पाडयो । कुमत ठगारीरे । का. ४ । इण कायासु ममता करने । डुब्या वहु नर नारीरे । जडाव कहे तप जप करो । सिव रमणी त्यारीरे । का. ५

ढाल

राग । मोत्यांरो गजरो भूली । कर जोडी सीस नमाउं । नीत गोत मजीरा गुण गाउं । अगनभूती जिन दूता । नीत उठ करो ज्या पूजा । सुण भव प्राणी । गणधर वंदू गुणधारी । आंकडी । १ । वाय मुनी सुखदाइ । ए तीनुइ सगा माइ । वीगट मुनीसरवंदो । भव भवना पाप निकंदो । सु. २ । सुधर्मा धर्मना दाता । मंडी मोरी जगभिराता । अक पीताजी मारा भवसागर तारणहारा । सु. ३ । अचल २ सुख पाया । मेतारज मुगत सीधाया । प्रभाव प्रभवसु डरीया । ज्यारा आतम कारज सरीया । सु. ४ । सगलाइ मुगत सीधाया । नित प्रणमुं ज्यारा पाया । एकावन सुख वासो । जेपुरमें होली चोमासो । सु. ५ । बारस सुध पखमांयो । जडावजी सीस नमायो । मैं छुं दास तुमारी । सुण लीज्यो अरज हमारी सु. ६ ।

लावणी लीखंते

चाल गोपीचंदरा ख्यालरी । पखवाडो ली. एकम जीव तुं एकलो सरे । बांधे कर्म कठोर । परभो चिंता वावरोस । थाने माणस कहू कठोर । अशुभ उदे जव आवसी । तुं कांइ करेला जोर । जीव थारो अफल जनमारो जावसो पाछो नहीं आवसी । कुछ सुक्रत कर ले सफल दीयाडो लेखे लागसी । आं० २ । बीज कहे सुण वापडासरे । बेठो किम नीरधार । अवसर बीत्यो जात हे सरे । चेते क्युं नी गीवार । वंधी मूठी आवीयो सरे । जासी हाथ पसार । जी० ३ । तीज कहे तूं त्रिजा प्राणी । वेठ धर्म की जाज । ग्यान दरसण चारीत्र पाठीया खेवे गुरु माराज । भवजल पार उतार सीस । वाने मीले मुगतको राज । जी० ४ । चोथ कहे चारुं गत मांए । रुल्यो अनंती वार । पुन संजोगे पामीयो सरे । मानवरो अवतार । दान सील तप भावनास । कोइ लावो लीज्यो लार । जी० ५ । पांचम कहे सुण प्राणीयासरे । पंच म्हाव्रत धार । पंच इंद्रीने वस करोसरे । पंच प्रमाद निवार । पंच प्रमेस्टी देवनोसरे । ध्यान धरो सुखकार । जी० ६ । छट कहे छकायने सरे । राखो प्राण समान । पुत्र सरीखी ओपमासरे दीनी श्री वृद्धमान । छ परवी पाला करोस । केइ देवो सुपात्र दान । जी० ७ । सातम कहे सत राखज्यो सरे । सत छोड़े पत जाय । सतसु रीजे देवता सरे सतसू रीजे राय । सतसुं गुरुजी राजी हुवे सरे । सत मुगत ले जाए । जी० ८ । आठम आतम वसकरेसरे । धोवो मिथ्या मेल । आठ मद अलगा करो

सरे । ग्यान गरीबी भेज । आठ कर्म खपायने सरे । करो मुगतकी सहल । जी० ६ । नम कहे नव बोलनो सरे । निपुन करो निरधार । जाणपणे समगत लहसरे । जाय अज्ञान अंधार । तप संजम सफला हुवसरे । समगतरी बलीयार । जी० १० । दसम कहे दुसमण तजोसरे भजो प्रमेस्टी पंच । या समरा पातक जरे सरे । रहन कुमणा रंच । ध्यान धरो एक चीतसुं कह तजो सरब प्रपंच । जी० ११ । इग्यारस रस पी जीएसरे । जीनवाणी अवधार । अंग इग्यारेइ भलासरे । बारे उपंग बीचार । मूल छेदमांए कीयो सरे । वाणीरो बिस्तार । जी० १२ । बारस कहे तूं बावलो सरे । जूतो घरके भार । कर्म करे तूं एकलो सरे । खावणमें सब त्यार । सहे नरक में एकलोसरे । जमदूतकी मार । जी० १३ । तेरस कहे तुं तत्पर होजा । आगे नहीं अवसाण । काल सीराण आवीयोसरे । खेंचे तीर कवाण । तक तक मारे जीवनेसरे । पलक पलक में बाण । जी० १४ । चवदस कहे चेते नहीं सरे भूल्यो फिरे गीवार । च्यार दीनाकी चानणीसरे । सेवट घोर अंधार । ग्यान दीपक घटमें नहीं सरे । डुबो कालीधार । जी० १५ । पुनम पख पूरो हुवो सरे । करता छुटी जोड । गड़ गड़ सो जाणदो सरे । अमही दोडो दोड । पुनम प्रमाण लीखा वज्योसरे । पावो आछी डोर । जी० १६ । पाप धर्म दिन सारखसरे । वीत्यो जावे काल । जोग मील्यो दस बोलनोसरे । कीज्यो धर्म बीचार । पापी पच पचने मुवासरे । धर्मी हुवा निहाल । जी० १७ । १६ सें बरस बावनसरे । जेपुर सेखे काल । जोड कर जडाव

जीसरे । पखवाडारी ढाल । वइसाख मइनो किसन पखमें सातम मंगलवार । जी० १८ ।

राग पणियारिकी

श्री मंधीर जिन सायबा । जिनवरजि हो । अरज करूं कर जोड । जिनवरजि । आंकडी । १ । सेवक जाणी आपरो । जि० पूरो हमारी कोड । २ । खेत्र विदेह विराजिया । जि० आडा समद अथाग । जि० ३ । विखमी मारग छे गणो । जि० नहीं आवणरो थाग । जि० ४ । विध्याधर मित्री नही । जिन ल्यावे आप हजूर । जि० ५ । मानीज्यो मारी वनणा । जि० पोह उगंते सुर । जि० ६ । दुखमी आरो पंचवो । जि० लीयो भरतमें वास । जि० ७ । ओर कछु मागू नहीं । जि० राखो तुमारी दास । जि० ८ । आपो आपरा दासरी । जि० सव कोइ पूरे आस । जि० ९ । हुं सरणो लीयो आपरो । जि० करस्यो केम नीरास । जि. १० ओगणीसें एकावने । जि० जेपुर होली चोमास । ११ । बे कर जोड जडावजि । जि० एम करे अरदास जि० १२ ।

चोइसी पद ली०

राग राभे पधारीयाजी आमणः । रिखव अजित संभव नमू । अभिनण जिनदेव । सुमत पदम सुवासजि । चंदतणी करुं सेव । भवक जिन भावसुं वंदो जिन चोवीस । १ । आंकणी । सुवध सीतल श्री हंसजि । वास पुज भगवंत । वीमल अणंत धर्म संतजि । जग वरतायो संत । भ० २ । कुंथ अरी मल्ली नाथजि । मुनीसो वरत जिनराय । नमी नेम श्री पार्स वीरने । वंदू सीस नमाय

। भव० ३ । बिहरमान गणधर सभी । केवली श्रतक कोड । जेपुर मांए जडावजि । वंदे वे कर जोड । भ० ४ ।

राग । करहा चाले उतावलो । पगडे आइ गण गोर । रिखव अजित संभव भलाजि । सुण अभीनंनण अरदास । सुमत पदमसुपासजि । कांइ चंद कीयो प्रकासजी । मारे दील वसीया चौवीसजी । ज्यांरे चरण नमाउं सीस । आंकडी । १ । सुवध सीतल श्री हंसजी । कांइ वासपुज जिनराय । वीमल अणंत धरम संतजि । कांइ संत करी जगमांए । जि० २ । कुंथ अरी मल्लीनाथजि । कांइ मुनीसोव्रत सुखकार । नेमीसर रीठनेमजि । ज्यांने तारी राजुल नार । जि० ३ । पार्स २ सारखाजि । लोह फरयां कंचन होए । ए अधिकाइ आपरीजि वीन फरयां तारो मोए । जि० ४ । विरधमान चोवीसवाजि कांइ सांसणरा सीरदार । सरणे आया ज्यांने तारीयाजी । माने भूल गया किरतार । जि० ५ । अव जाण्या प्रभू आपनेजि । में छोडया आल जंजाल । सरणो लीनो आपरोजी । माने तारो दीन दयाल । जि. ६ । चउदस बावन हुवाजि० कांइ गणधर जिन चोवीस । वंदू वे कर जोडने । जी कांइ विहरमान जिन वीस । जी० ७ । १६ से एकावने जी कांइ । जेपुर सेखे काल । चेत महीनो चूपसुजी कांइ । जोडी जडावजी ढाल । जी० ८ । इति संपूर्णः ।

देसी मन मोये हो जिनेसर । थे छो मारा नाथ । मैं छां थारा दास । ए देसी । रिखवदत देवानंदा । वीरजीनेसर वंदवा । भवक जीन । वेठारे एक रथ मजार । चाल्यारे एम मजार । श्री

जीनजीसु मारो मन मोयोरे । १ ।अतसें देखी उतरयां । सचीत द्रव्य अलगा करयां । भव० चाल्यारे वेहु पाय वीहार । नरखेरे श्री जिन दीदार । श्री० २ । समो सरणमें आयने । नीचो सीस नमायने । भव० । वंद्यारे जिन मान ज मोड । उभा रे तिहा वे कर जोड । श्री० ३ । मणी पीठका सुरे करे । फिटकसीघासण तीणपरे । भ० । वेठारे श्री वीर जीणंद । मुखडोरे जाणे पूनमचद । श्री० ४ । घाज अवाज सुणी मोरज्यु । हरक्यां चंद चकोर ज्यु । भव० नीरखेरेये । भर २ नेण । मीलीयारे थे साचा सेण । श्री० ५ । फल फूलत थइ देयमें । पानो आयो सथानमें । भ० भरवारे वली लाग्यो दूध । भूली रेया सगली सुध । श्री० ६ । गोतम इचरज पायने । नीचो सीस नवायने । भ० वाइ रेया इम कीम थाय । सासोजी मारो देवो मीटाय । श्री० ७ । अंगजात हूं एहनो । काम बूरो सनेयनो । भ० जनम्योरे हु परघर जाय । पूरव-रेइण वांधी अंतराय । श्री० ८ । वीर वचन श्रवणे सुणी । मनमें अकुलाणी गणी । भ० रोवेरेया भर २ नेण । मीलीयारे मन साचासेण । श्री० ९ । अव सरणो भगवंतरो । कदय न आवे अंतरो । भ० करस्यूरे हिव श्री जीन साथ । सुणसीरे सुख दुख वात । श्री० १० । पीता परम सुख पायने । उवासी सन मायने । भ० लीनोरे वेहु संजम भार । तप कररे गया मुगतमेंभार । श्री० ११ । जननी वछल वीरजी । पुंछायी भव तीरजी । भ. पालीरे ज्यां पूरण प्रीत । आछेरे उत्तमनी रीत । श्री० १२ । १९ सें पंचालमें पालीपीठ रसालमें । भ. धन २ रे आ वीरनी मात । जोडेरे जडावजी हाथ । श्री. १३ ।

सजाय लीख्यते

छोडो छोडोरे कपटकी कत्रणी । वोलो २ रे सजन सत वाणी । राखो दुजी अगवाणीरे । आंकडी । १ । समकीतकी साची सैंनाणी । मुगत पुरीकी नीसाणीरे । वो. २ । वेद पूराण कूराण वखाणी । अंतसुं खारी खाणीरे । वो. ३ । पंचामें प्रतीत वधावे । होय कर्म धुल धाणीरे । वो० ४ । वोपारी धन वधतो जावे । कदय न आवे हाणीरे । वो. ५ । नीसचइ सुखदेव मीनखरा । पावे पद नीरवाणीरे । वो. ६ । कहत जडाव जैपुर के माइ । भूठ तजो भव प्राणीरे ७ ।

चाल तेहीज

राखो २ रे सरस गुरु केरी । जीणसुं टले भव फेरीरे । रा० १ । आंकडी । गुरु सम जगमें नही उपगारी । ग्यान देवे हेरी २ रे । रा० २ । कंकरसुं संकर देवे । पूजा होए गणेरीरे । रा० ३ । नरक दुखासुं कर दे न्यारो । खोले गुरगतनी सेरीरे । रा० ४ । गुरुकी आण धरो सिर उपर । फते होएगी तेरीरे । ० ५ । स जेपुरमांए जडाव जुगतसुं । सीख देवे घेरी घेरीरे । रा० ६ ।

चाल तेहीज

ताको ताकोरे धर्मकी सेरी । मत ताको नार अनेरीरे । ताकोरे । १ आंकडी । धर्मसुं जीव परम पद पावे । वाजे उसकी भेरीरे । ता० २ । भव भवमांय होय संगाथी । टाले चारु गत फेरीरे । ता० ३ । कहत जडाव जेपुरके मांइ । मान कया गुरु केरारे । ता ४ ।

चाल तेहीज

मत करोरे मर्मकी जारी । लागे पातक भारीरे । म० आंकडी । १ । मर्मसु सरम जाए परकेरी । प्रीत घटे होए वेरीरे । म. २ । छे प्राणी मरीया कुवचना हूइ भसमकी ढेरीरे । म० ३ । कहत जडाव जेपुरके मांइ । मीष्ट वचन सुखकारीरे म० ४ ।

लावणी लीख्यते

चाल जंवूजीरी लावणी । स्वारथकी सबइ है दुनीयां । विन स्वारथ नही ढीग जावे । मुतलबकी सब प्रीत सगाइ । विन मुतलव नहीं बतलावे । स्वा० । आंकडी १ । बाप बेटाकी इथर सगाइ कनकरथ राजा जाणी । जनम जातने खोड लगाइ । राज रिध ममता आणी । स्वा० २ । पुत्र पिताकी इथर सगाइ । कूणकने कुमती आइ । सेणक राजाने दीया पीजरो । कोस लीनी सब ठकुराइ । स्वा० ३ । चूलणी राणी ब्रह्म दत बेटाने । बालणरी अग्या दीनी । प्रसराम मातासु विरच्यो । लाज सरम सब खोदीनी । स्वा० ४ । बंधब बंधव भरत बाउबल । बारे बरस जगडो कीनो सुरीकंथा निज प्रीतमने । भोजनमांए विस दीनो । स्वा० ५ । सीसेण सामासु गिरध्यो । एक घाट पांचसें नारी । लाख मेहेलमें बाली एकठी । वीसवासघात करन मारी । स्वा० ६ । बहु सासुरी इथर सगाइ ' सुत्र वीपाकमांए देखो । सासु बहु अंजनासु बदली । आल देइ काडी एको । स्वा० ७ । सुसरो बहु सती सुभद्रा । आलदीयो आणी धेको । बहु सुसरो सागर समुद्रमें । घटको नहीं आणी संको । स्वा० ८ । देवर भोजाइ बलैकवरने

। पद्मावती कीयो खुवारो। चेडो कूणकनानो दोएतो । मिनख मार कीयो संगारो। स्वा० ६ । मामो भाणजो राय उदाइ । केसी छल करने मारचो। काको भतीजो श्रीपालने । राज भीसट कर नीकाल्यो। स्वा० १० । इत्यादिक में कहु कठा लग। विन स्वारथ सगपण तोडे । उंच नीच केइ मुतलब कारण वीन सगपण ममत जोड़े। स्वा. ११ । संतानीक राजा सांइसु जगडो। करदीवाण राजा हारचो। ठाकुर चाकुरसुग्रीवादिक। फूट करी रावण मारचो । स्वा. १२ । सोकरेवंती छल कर मारी। बारेइ एकण साथो। रुपदेव मींत्रीसर छलकर। बामदेवनी करी घातो । स्वा. १३ । १६ सें पचावन बरसे । जेपुर में सेखे कालो । केइ गरंथकी साख देइने । जडाव एह जोडी ढालो। स्वा. १४ ।

अवनीतकी लावणी लीखंते

चाल गोपीचंद्का ख्यालरी। काल दुकाले आवीयासरे । पेट भराइ काज। भेख पहर भारी पडयांसरे। जाणे पायो राज। ग्यान ध्यान री खप नही सरे बण बेठा म्हाराजरे। अवनीत गरुना केश काडेरे मूर्ख जीवरा। आंकणी। १ सीखदीया सामा हुवेसरे । सुसावे जीम सांढ। गुरुदेवसु सरे। वके उगाडा भांड । जैसे कीडानीवकासरे । कैसे चाखे खांडरे। अव. २ । लोड वडाइ काण कायदो। राखे नहीं अयाण। बतलायां वाका वदेसरे । थें क्युं मूडयां जाण। पइलांतो समझा नहीं। अब क्युं करो खेंचा ताणजी। अव ३ । गुरु बोले वछ जावो गोचरी। ल्यावो भात ने पाण। मूडा वडाने रोगी गिलानी। तपसी छोटा जाणने।

ओखद वेखद सुजतो सरे । वेगी देवो आणजी । अव० ४ । थे तो वेठा हुकम चलावो । माने राख्यां दाम । इण भवमें दुख दीसतारे । कसी मुगतरी आस । खासी छोड़ ल्यावसी सरे । मेंतो करस्यां वासजी अव० ५ । हीवडा तालो जडीयो होसी । वगत अदूरी थाय । दिन आयो नही पेरसी सरे । काले सुता खाय । वीना वगतरी गोचरी । समेल्यावा कठासुजाएजी । अव ६ । श्रावक थारा सुमडा सरे । वाता में विलमाय । वायां तो बोले नही सरे । जीमे आडो जुडाय । मूंडा देखी तीलक करे सरे । छती वस्त नट जायजी । अव० ७ । श्रावग भगता आपरा सरे । जोवे थांरी वाट । थे तो वैठा वात वणावो । मे गोकां सुत्र पाठ । थे कइ वेठा वद जास्योस । मारयां मारो पाटजि । अव० ८ । दोरो सोरो जावे गोचरी । मन भावे ज्युं लाय । सरस दावनीचै धरे सरेम निरस उघाडे आय । कपटी कपट गुरांसुं करने मन गमती मील खायजी । अव ९ । अणगमतो आगे धरे सरे । गमतो देवे छिपाय । जाणे देसी ओरने सरे । अथवा आपलीराय । वीनेवंत वाजे लोक में सरे मरने दुरगत जाएजी । अव १० । अच्छो भावे आपने सरे । मांरो ल्यायो न आवे दाय । मीलसी जैस्यो ल्यावस्यांस । कांइ धरण वेठा जाय । ज्यो भावे खाय ल्यो सरे । नहीतर ल्यावो जायजि । अव० ११ । गुरु जाणीने करां वंदगी । थे नहीं देवो जस । ग्यान ध्यान आगो र्योस । वल नहीं जीभमें रस । नास कठी जावा अगाडी । पडीया थांरे वसजी । अव० १२ । जावां तो जावण नही देवो । थे कां खरच्यां दाम । वेठा वेठा वात वणावो । मांसु करावो काम । भायांन भेला

करल्यासूं । बिगड जाएली मांमजी । अ० १३ । असतीसुं अञ्यो गणो सरे । चूक दीवी मरजाद । रोल मसकरी । बातां बिगतां । करे ग्यान कुण याद । भारी कर्मा भेला हुइने । उपजावे असमाद जी । १४ । रागीओगुणने गणसरे । सीख न देवे ताण । पख करे अवनीतनो सरे । होरया जाण अजाण । डर नहीं गुरुदेव नीसरे । किणरी राखे काणजी । १५ । कुसिख पाचसें घरक आचारज । छोड हुवा एकंत । सगलाइ हुवा सारखा सरे । नही एकमें तंत । बस राखे निज आतमा सरे । सोइ साध महंतजी । अ० १६ । छात फटीने कारी लागे । फाट गयो असमान । एक टले तो संका आणे । बिगडयो सघलोइ घाण । किण २ ने ओलंबा देवे । कूवे पड गइ भांगजी । अवछंदारी नहीं आबरु । दोन्यू भव दुखदाय । ठास ठाम सुत्रमें चाल्यो. । बांचो चित लगाय । आंक फरक बातां बिगतासुं । भोलाने भरमायजी । अ० १८ । आप अकेला कइ कर लेस्यो । मारे गणारी पूठ । सारे नहींछा थाय रेस । में कालेइ जास्यां उठ । जाणे रामदेवका कावा । माडी चांटा चुंटजी । अ० १९ । सगला मारी करे बंदगी । थांने लागा जहर । ल्यावो जोली पात्रासरे । मारा पाना देदो हेर । न्यारी करस्यां गोचरीस । कोइ नही छे थांरो स्हरजी । अ० २० । सीलावण इणमें हीतकारी । बांचो आण विवेक । विनेवंत हीरदामें धरज्यो । सुत्र मांए देख । अवनीताने नहीं सुवावे । सुण सुण करसी धेखजि । अ० २१ । अवछंदांसु जीतसके नहीं । मूनकरी भगवंत । जमाली घोसालो देखो । मत चलायो पंथ । धणीया वेठा धाडो पाड्यो । रुलसी काल अनंतजी । २२ ।

१६ सें साठो सुखदाइ । जेपुरमांए जडाव । वीती जेसी जोड सुणाइ । नहीं धेषरा भाव । आयो वेतो मिछामी दुकडं । ग्यानी आगै न्यांवजी । अव० २३ ।

श्री मंधिरजीरो स्तवन

देसी मोए अपनी कर राखो । मोए चरणामें राखो । मैं सरण लीयो छे थांकोजी । मो० आंकडी । १ । पुदगलको रस पाको । मैं जनम मरण कर थाकोजी । मो. २ । प्रभू श्रीमंधीर श्रीस्वामी । मोए तारो अंतर जामीजी । मो. ३ । लख चोरासी फिर आयो । जठे जैन धर्म नहीं पायोजी । मो. ४ दुलभ नरभव पायो । मैं तप कर तन नही तायोजी । मो० ५ । पुन खजानो ल्यायो । सव एले साथ गमायोजी । मो. ६ । कुमतीकी संगत भेली । आलसमें आतम गालीजी । मो० ७ । मायामें ममता फेली । चारुं गत चोपड खेलीजी । मो० ८ । प्रभू थे मुगत्यांरा गामी । मैं निठ २ समगत पामीजी । मो० ६ । मारो कुमत न छोडे केडो । थे अव तो न्याव निवेडोजी । मो. १० । प्रभू ज्यो मोए राखो नेडो । भवदु खरो पाउं छेडोजी । मो. ११ । प्रभू आप वडा उपगारी । करणीमें कसर हमारीजी । मो. १२ । प्रभू कर्मनकी गत न्यारी । कोइ लख न सके नर नारीजी । मो. १३ । प्रभू अव के ओसर आयो । मैं धर्म तुमारो पायोजी । मो. १४ । प्रभू ममता में मुरजायो । मैं फिर २ ने पिसतायोजी । मो. १५ । प्रभूरीजसउभरपाइ । करमनकी कथा सुणाइजी । मो. १६ । प्रभू

१६ सें वरसें साठे। हुया धर्म ध्यानरा ठाठेजी। मो. १७। आसोज मास वद आठे। मैं वरसे सरणाठेजी मो. १८। जडाव जेपुरके मांइ। करमनकी कथा सुणाइजी। मो. १६।

कक्का बतीसी लीख्यंते

जडावजी महाराज कृत। दोहा। अरिहंत सिध समरु सदा। सरसती लागूं पाय। वरण बतीसी में करूं। स्हानिध कीज्यो मांय। १। कक्का करणी कीजीए। कर वरसावो दान। समत राखीने रहे। होजा करण समान। २। खखा खिजमत कीजीए। गरुदेवनकी खूब। जवइतिरणो होयगो। नहींतर जासी डुब। ३। गगा गरव न कीजीए। सुत सम्पतकुं देख। जोवो कीसन मुरारजी। रया एकका एक। ४। घघा घेरो कर्मको। लागो तेरी लार लख चोरासी जुणमें घूमत फीरे गिवार। ५। चचा चर्चा कीजीए। ग्यानी गुरके पास। घटमें कर दे चानणो। होय भरमरो नास। ६। छछा छेय न लीजीए। होजा जाण अजाण। करणी जासी आपरी। मत कर खेंचाताण। ७। जजा जीवन जात हे। जेम नदीको पूर। पोट धरी सिर पापरी। भूं भारी घर दूर। ८। झझा झटपट चेत जा। म्हो निद्रां मत लेए। चोडे दोडे चोरटा। चोकी सतगुरु देए। ६। ञञा नरभव पायने। भज्यो नहीं किरतार। च्यार दीनाकी चानणी। सेवट घोर अंधार। १०। टटा टाटी धर्मकी देले अपणी पूंठ। करम किराणो वेचने। लावो लेलो लूट। ११। ठठा ठाली होयने। जासी प्रभवं मांए। कांइ खासी वापडा। खरची लीनी नांय। १२। डडा

१६ सें साठो सुखदाइ । जेपुरमांए जडाव । बीती जेसी जोड सुणाइ । नहीं घेपरा भाव । आयो वेतो मिछामी दुकडं । ग्यानी आगै न्यांवजी । अब० २३ ।

श्री मंधिरजीरो स्तवन

देसी मोए अपनी कर राखो । मोए चरणामें राखो । मैं सरण लीयो छे थांकोजी । मो० आंकडी । १ । पुदगलको रस पाको । मैं जनम मरण कर थाकोजी । मो. २ । प्रभू श्रीमंधीर श्रीस्वामी । मोए तारो अंतर जामीजी । मो. ३ । लख चोरासी फिर आयो । जठे जैन धर्म नहीं पायोजी । मो. ४ दुलभ नरभव पायो । मैं तप कर तन नही तायोजी । मो० ५ । पुन खजानो ल्यायो । सब एले साथ गमायोजी । मो. ६ । कुमतीकी संगत झेली । आलसमें आतम गालीजी । मो० ७ । मायामें ममता फेली । चारुं गत चोपड खेलीजी । मो० ८ । प्रभू थे मुगत्यांरा गामी । मैं निठ २ समगत पामीजी । मो० ६ । मारो कुमत न छोडे केडो । थे अब तो न्याव निवेडोजी । मो. १० । प्रभू ज्यो मोए राखो नेडो । भवदु खरो पाउं छेडोजी । मो. ११ । प्रभू आप बडा उपगारी । करणीमें कसर हमारीजी । मो. १२ । प्रभू कर्मनकी गत न्यारी । कोइ लख न सके नर नारीजी । मो. १३ । प्रभू अब के ओसर आयो । मैं धर्म तुमारो पायोजी । मो. १४ । प्रभू ममता में मुरजायो । मैं फिर २ ने पिसतायोजी । मो. १५ । प्रभूरीजसउभरपाइ । करमनकी कथा सुणाइजी । मो. १६ । प्रभू

१६ सें वरसें साठे। हुया धर्म ध्यानरा ठाठेजी। मो. १७। आसोज मास बद आठे। मैं बरसे सरणाठेजी मो. १८। जडाव जेपुरके मांइ। करमनकी कथा सुणाइजी। मो. १६।

कका बतीसी लीख्यंते

जडावजी महाराज कृत। दोहा। अरिहंत सिध समरु सदा। सरसती लागूं पाय। वरण बतीसी में करूं। स्हानिध कीज्यो मांय। १। कका करणी कीजीए। कर वरसावो दान। समत राखीने रहे। होजा करण समान। २। खखा खिजमत कीजीए। गरुदेवनकी खूब। जवइतिरणो होयगो। नहींतर जासी डुब। ३। गगा गरब न कीजीए। सुत सम्पतकुं देख। जोवो कीसन मुरारजी। रया एकका एक। ४। घघा घेरो कर्मको। लागो तेरी लार लख चोरासी जुणमें घूमत फोरे गिवार। ५। चचा चर्चा कीजीए। ग्यानी गुरके पास। घटमें कर दे चानणो। होय भरमरो नास। ६। छछा छेय न लीजीए। होजा जाण अजाण। करणी जासी आपरी। मत कर खेंचाताण। ७। जजा जीवन जात हे। जेम नदीको पूर। पोट धरी सिर पापरी। भूं भारी घर दूर। ८। झझा झटपट चेत जा। म्हो निद्रां मत लेए। चोड़े दोड़े चोरटा। चोकी सतगुरु देंए। ६। ञञा नरभव पायने। भज्यो नहीं किरतार। च्यार दीनाकी चानणी। सेवट घोर अंधार। १०। टटा टाटी धर्मकी देले अपणी पूंठ। करम किराणो वेचने। लावो लेलो लूट। ११। ठठा ठाली होयने। जासी प्रभव मांए। कांइ खासी बापडा। खरची लीनी नांय। १२। डडा

डरजा पापसुं । सुखीयो होसी सेण । हंस्यारा फल पाडवा । रोसी भर भर नेण । १३ । ढढा ढील करो मती । दान दयाके मांए । काल अचाणक आवसी । पछे गणो पिसताए । १४ । णणा नीरणो कीजीए । देव गुरुने धर्म । सरदा राखो नरमली । छोडो मिथ्या भरम । १५ । तता तिरणो दोयलो । विन सतगुरुकी संग । तिरसी सोइ तारसी । देदे अपणो रंग । १६ । थथा थिर कर आतमा । ग्यान गरीबी जेल । थोडा दीनकी जाजली । पछे मुगतकी स्हल । १७ । ददा देणो दोयलो । साध सुपात्र दान । लाखा खरचे लाजमें । राखे आपणो मान । १८ । धधा धनसुं भरी । तरसे निरधन लोए । पावे सो खावे नहीं । एह अछंबा मोए । १९ । नना नाकारो कीयां । कीरत फेले नांय । भूंजी वाजे लोकमें । पूंजी प्रले जाए । २० । पपा पांचू वस करो । चुगल चोरटा नाण । ठग ठग खावे टीक विन । चतुर करो पिछाण । २१ फफा फिर २ आवीयो । लख चोरासीमांए । फिर नहीं फीरणा लालजी । जैसो करो उपाव । २२ । वबा वणजा वावलो । होजा जाण अजाण । आरंभ कारज पूछतां । मत वण आगीवाण । २३ । भभा भारी होत हे । आतम आलसमांए । किण विधा तिरसी जीवडा । भव दधी भरयो अथाय । २४ । ममा मान वडाइ छोडने । सबहीसुं हित राख । दुसमन अपनी आतमा । ममता रसने चाख । २५ । या लायो या ल्यावस्युं । या मारी घरनार । याया करतो मर गयो । खडो रयो परवार । २६ । ररा राजी होयने । आरंभ कीया अनेक । वदले देतां दोयलो । म्यांदपूंगा फल देख । २७ । लला लाज नु-

राखीए । दान दयाके मांए । नफो लेता जस घणो । दोन्यूं भव सुखदाय । २८ । वव्वा विनकुं कीजीए । राखे सबकी लाज परका प्राण उगारके । आपणा सारे काज । २९ । ससा समपत पाएने । खाइ खरची नांय । लारे पिण नै ले चल्यो । धर गये धरती मांय । ३० । षषा खायो खरचीयो । दीयो नहीं दो हाथ दीयो घरमें चानणा । दीयो चाले साथ । ३१ । स्हा सफेद कर्मकी । करता और न कोय । दोस न दीजे रामकुं । वांक आपणो जोए । ३२ । हाहा इण संसारमें । जनम मरण की जोड । जाउं पिण आउं नहीं । एमी चाउं टोड । ३३ । १९ से अठावने । कटलामांए पडाव । ककाबतीसी करी । जेपुरमांए जडाव । ३४ ।

पुजजी म्हाराजरा गुण लिख्यते

देसी पंथीडारी छे । मूरत हो मोवन गारी पूजनीरे । जाणे पुनमचंदरे । भवि जीन हो भविक चकोर निहारनेरे । पामे परम आणदरे । मूर्त । १ । आंकणी । जंबूरे जंबू दीपरा भर्समेंरे । मरु धर देस मभाररे । सोवन हो सोवन थली सुंवावणीरे । उंडा नीर अपार रे । मू. २ । स्हर जरे स्हर फलोदी दीपतो रे । हिंदवाणी तप तेजरे । श्रावक हो २ लोक वसे तिहारे । देव गुरांसुं हेजरे । मू० ३ । ओसजरे ओस वंसमें सोभतारे । पुंगलीयां वड जातरे । रंभारे २ जी उर उपन्यारे । प्रतापचंदजी तातरे । मू. ४ । तण कुल हो २ मांये जनमीयारे । सुभ वेला सुभ वाररे । उछव हो २ वहु विद साचव्यो रे । हरख्यो सो परवाररे । मू. ५ । बंधव

हो २ च्यारसे हो धरु रे । वेन एक माल रे जनम्यां हो जनम्यां पांचू अनुकरमेरे । मात तात कीयो कालरे । मू० ६ । आया हो २ पाली स्हरमेंरे । वहन पटंगो जाणरे । करवा हो २ पेट अजीवकारे । च्यारु चक्रसु जाणरे । मू. ७ । मीलीया हो पूज कजोडी-मलजीरे । पूरव पुन पसायरे । बंधवहो दोन्यू ए ममतो करीरे । दीनो जग छिटकायरे । मू. ८ । गरु मुखरे गरुवीने अराधेनेरे । भणीया ग्यान रसालरे । पछेरे बिरोह पड्यो लगु भिरातनोरे । वडो कसाइ कालरे । मू. ९ । थाणे हो २ पूज वीराजीयारे । अजिया पुर सुभ ठामरे । तप जप हो २ करी सलेखणारे । पुज पधार्यां धामरे । मू. १० । पाटज हो पाट विराज्या पूजनेरे । वड बंधव विनेचंद्रे । लायकरे नायक चारु सिंघ नारे तोडे कर्मना फंद्रे । मू० ११ । समतरे १९ से पंचावनेरे । जेपुर सेखे कालरे । दीज्यो हो दीज्यो द्रस जडावनेर । कर किरपा किरपालरे । मू० । १२ ।

ढाल

गजरारा गीतरी छे । जी घणा कालसु वीचारतां । भला पदार्‍यां आप । मनवंछीत पासा ढल्या । पूज तणे प्रताप । म्हाराजा थांरी वाणी प्यारीजी । समज पडे सब न्यारी न्यारी न्यारी । माने लागे प्यारीजी । आंकडी । १ । जी संग सरव सेवा करे । धर्म ध्यानरा ठाठ । च्यारु जोड़े दीपता । पूज वीराजे पाट । म्हा० । २ । जी स्वमत परमत धारणा । भिन २ करो वखाण । रागद्वेष नही उपजे । छो अवसरका जाण । म्हाराजा थारी । ३ । जी हीए वीराजे सरसती । सुसर कंठ सुपियार । सुण फुले पुरखदा

बरसे इमरत धार । ४ । जी इतनी मानो वीनती । कनीरामजीरा सिस । होली चोमासो कीजीए । जेपुर विसवा वीस । मा० ५ । जी घणा परीसा देखने । दरसण दीया दीयाल । मारवाडमें मन बस्यो । परालब्धरो ख्याल । महा. ६ । जी तपस्यां करवा आपरे । वाया थइ उजमाल । अर्ज करे जडावजी । मानो दीन दयाल । म्हा० ७ ।

चवदा नेमरी ढाल लीख्यते

चवदा नेमें चीतारो । आंकडी । प्रथम सचीत तणी मरजादा । भिन २ कीज्यो वीच्यारो । द्रवादिक तिणमांए । अनंता । खावण पीवणरो परीहारोरे । प्राणी । चवदा० । १ । पांच वीगे रोजाना नैलीजे । कोइ एक टालो कीजे । पनी पावडी मोजा वगेरे । गिण-तिसु धारीजेरे प्राणी . । च. २ । मूछण जात तम्बोल पांचवें । तिणरी करो मरजादे । छटे कुसम सुगंधरी गीणती । कीजे मती प्रमांदरे । प्राणी. । च. । ३ । वहण गाडी नाव असवारी । दिन प्रते गिण लीजे । सहण सेजा मुढां कुरसी । रोजीना संख्या कीजेरे । प्राणी. । चवदा. । ४ । वस्त्र वेसमे पांचूइ कपडा । कीमत वरण वीचारो । गिणती कर मरजादा वादो । ते गतिरो संसारोरे । प्राणी. । ५ । वल्लेपणमें कांजल केसर । टीकी आरिसे निहालो । मरदन पीडी चन्णांमादी । आवण फुलारी मालोरे । प्राणी० ' च. ६ । बंभ इग्यारमें सील पालीजे । दिस मरजादा कीजे । चवदेइ राजरी इवरत रोको । नरभव सफल करीजेरे प्राणी । च. ७ । नावण धोवण देस सरवथी । त्यागो

गिणनी आणी । ते आवग भव सागर तिरसी प्राण ज्यूं जाणे पाणीरे । प्राणीरे । प्राणी. । च० ८ । भात पाणी मरजादा तो लीने । समवेइ पेट प्रमाणे । उतम करसी नेम चीतारी । ते धर्मरो मर्म पीछाणेरे । प्राणी. । च. ९ । १९ सें जडाव जेपुरमें सावण वद बावने । दिन दस मीने जोड सुणाइ । नेम चितारे सो धने रे । प्राणी. च. १० ।

श्री म्हावीरस्वामी को सिलो लीखंते

चाल शिलोकारी । अरिहंत सिद्धारे पाए नित लागु । गुरु ग्यानी पासे वीद्याजी मागूं । महावीरस्वामीरो कहस्यूं शीलोको । एकण चित करने सुणज्यो सब लोको । २ । मरीछे भवमें तपस्यां कर भारी । बावे आदेसर हुंडी सीकारी । ३ । मा सिरखो होसी छेलो अवतारी । इतनी सुण मनमें फूल्यो अपारी । ४ । मारो कुल मोटो बोले अहंकारी । फालेदे कूदयो उंचो कुलहारी । ५ । कर्म नीकाचित बांध्यां तिणवारी । तेनो फल कहस्यूं सुणज्यो अगाडी । ६ । कालंत्र तिहा समकित पाइ । गिणती मेली ना भवसताई । ७ । थानक बीसुंइ पहले भवमांइ । सेव्या तिर्थंकर गोते उपाइ । ८ । दसमा सुरगमें उपना जाइ । बीसे सागरनी पूरण तिथपाइ । ९ । सुर सुख विलसी चविया जिनराय । मान प्रभावे मागण कुल आया । १० । देवानंदारी कूखे उपना । माताजी देख्यां चवदे सुपना । ११ । बेठा सभामें सुरपत बीच्यारे । कठ प्रभूजी लीनो अवतार १२ । अवदे प्रजूंजी इयाफोदीनो । नीसचे करीने सांसो मन कीनो । १३ । त्रीभूवन स्वामी तीरथे नाथो ।

बामण कुल आया इचरज वातो । १४ । उपजे कदापी जनम न थावे । देव सकतीसुं सारन करावे । १५ । हीरणगमेषी ले कर आयो । बदलो काडीने सुखसाता पायो १६ । खत्रीकुंड सिद्धारथ राया । राणी तिसलारे कुंखां पदार्या । १७ । हाथ जोडीने सीस नमायो । सारो फेरो कर सुरग सिधायो । १८ । देवानंदा मन आरत आवे । सुपना हमारा कूण ले जावे । १९ । माता तिसलारो भाग सवायो । बिन माग्यो पुत्र से जाइ आयो । २० । म्हल जरोकामोत्यांरी जाली । लटके लूंमाने सेजे सुंवाली । २१ । पोढयां तिसला दे ढलती सीरेणी । थोडीसी निंद्रा जागे मिरग नैणी । २२ । चव देइ सुपना उत्तम देखे । जब कैसो जागी हरक विसेखे । २३ । याद करीने हीरदामें धारे । देव गुरुने धरम चीतारे । २४ । उठ्यां सेजाथी धीमा पग ढाले । गज गती चाले जाणे मराले । २५ । घणी उमाइ पिव पासे आइ । पोढयां जाणीने पगाथे जाइ । २६ । जिणेसर प्रभाणी राग सुणावे । निद्रामे सुता कंथ जगावे । २७ । हाथ जोडीने उंबी निज मिंद्र । पूछे महाराजा किम आइ सुंद्र । २८ । बेठो सिंघासण बीसरामो खावो । खेद टालीने काज फुरमावो । २९ । आद्र पामी निज आसण बेठो । विनो करीने बोले मुख मीठी । ३० । इचरजकारी सुपना मैं दीठा । सुणतां स्वामीजी लागे अत मीठा । ३१ । बोल्ले म्हाराजा विध सेती भाखो । सरबे सुणावो संका मत राखो । ३२ । मलकंतो मंगल अम्बाडीमांते । दूजो विरखबनेसिंघ माख्यां ते । ३३ । चोथे लिछमीजी भांक ज माला । पांचे वरणारी पुसपारी माला । ३४ । छटे उगंतो ससि हर होवे । सैस किरणसुं सुरज सोवे

। ३५ । आडमें धजा आकासां लेखे । नवे संपूरण कलसे त्रिसेखे । ३६ । पदम सीरोवर कवला कर छायो । खीरे समुद्र हीलोला खायो । ३७ । देव वीमाण देखा श्रीराजे । रतनारी रास तेरमी छाजे । ३८ । निरधु अगनी चवदमें देखे । जल हरती जाला चिउदीस लेखे । ३९ । इणविद स्यामीजी सुपना में पाया । हरखीने बोल्या सिधारथ राया । ४० । तिरथंकर के चकरीसर नाणी । कूखमें आयो उत्तम प्राणी । ४१ । तहत करीने सीस चढावे । सीख केइने निज मिंद्र जावे । ४२ । उगंते सुरज सिधारथ राया । मंजण करीने सभामें आया । ४३ । इण्याकारीनें हुकम दीरावे । आठे भद्रासण आगे रचावे । ४४ । पसवाडे एक प्रेचे खंचावे । नमो राणीरो आसण वीछावे । ४५ । मरजादा सेती महाराणी आवे । श्रीफल सुपारी हाथमें लावे । ४६ । हल वेगा जावो पिंडत तेडावो । चवदे सुपनारो अर्थ करावो । ४७ । हुकम पाइने नगरीमें जावे । सुपना पाट कनें ततखिण ल्यावे । ४८ । नीरखी हरखीने राय वदावे । आद्र करीने आगे बेठावे । ४९ । अणुंकरमें सुपना सरवे सुणावे । सास्त्री देखीने अरथे करावे । ५० । त्रिलोकीनाथो तिलक सरीखो । आय उपन्यो म्हाराणी खूंखो । ५१ । दोय कुल तारक सूरज सामानो । अन धन लीछमीसुं भरसी खजानो । ५२ । भरत खेत्रमें उदयोते करसी मंजम लेइने सिवरमणी वरसी । ५३ । सला करीने बोले छ जोसी । उत्तम सुपनारो चो फल होसी । ५४ । राजा राणी सुण आणंद पाया । दान देइने घरे पूछाया । ५५ । श्रीफल सुपारी पानांका बीडा । वांटे सभामें करता वहु कीडा । ५६ । जीमणकी

वेल्यां भोजन कीना। लौंग सुपारी मूछ्रण लीना। ५७। नित नवला पहरे वस्त्र भूषण। गरभ प्रतीपाले टाले सब दूषण। ५८। पुनय प्रभावे उपजे सुभ डोला। पूरे म्हाराजा करती रंगरोला। ५९। ग्याने प्रभावे गरभ आलोवे। वीनो करीने अंग संकोचे। ६०। माता दुख पावे करती वीचारो। हाले न चाले गरभ हमारो। ६१। राजा राणीजी झुरंता वेहू। जीवे जठालग संजम नहीं लेउं। ६२। भिल २ करती आंसुडा नाखे। पग फुरकायो हरख विसेषे। ६३। वांटे भदाइ हुवो आणंदो। दिन २ वाधे जीम दूजनो चंदो। ६४। चैते सुदीने आदीसी रातो। तेरसने जनम्या श्री जगनाथो। ६५। छपन कुंवारी मंगल गावे। चोसट इंद्र मिल मेरु पर ल्यावे। ६६। तीरथ मेलीने पाणी मगावे। भर भर कलसा उपर पदरावे। ६७। इंद्र सगलाइ अणुकंप ल्यावे। बालक वय प्रभूजी असाता पावे। ६८। तिण वेल ततखिण परच्यो दीखावे। चटी चांपीने मेरु कंपावे। ६८। ग्यान प्रभूभी सुरपत बीचारी। जाणी प्रभूजी सकती तूमारी। ७०। अनंत बलीने सांसण धीरो। सक्र इंद्र नाम दीयो म्हावीरो। ७१। उछव करीने निज मिंद्र ल्यावे। सुंपी माताने सीस नमावे। ७२। देवी देवा मिख दिव लोक जावे। विचमें अठाइ उछव करावे। ७३। दिन उगे दासी दौडीने आइ। पुत्र जनम्यांरी दीनी वधाइ। ७४। सोनारी झारीसु मांथो नवावे। दासीपणाने दूरे करावे। ७५। मुकट वरजीने आवरण सारा। वरसे म्हाराजा कंचन धारा। ७६। पुत्र जनमारे हरक करावे। चंद्रमां देखी आचल खुलावे। ७७। छटे दिन उगा सुरज पूजावे। दसमे दिन सुतक दूर करावे। ७८।

भाइ बेटा ने न्याती बूलावे । डसोटण करस्यां दूवो दरावे । ७६ । बांमण वचकसण कंदोइ ल्यावो । विविध भांतीरा भोजन रंदावो । ८० । कुटुंब कबीलो स्हरका सारा । जीमण बैठा न्याराजी न्यारा । ८१ । आदर करीने चोकी बीछावे । सोनां रुपारा थाल दीरावे । ८२ । पहली मीठाइ पछे पकवानो । पुरसें सगलाने दे दे सनमानो । ८३ । लाडु पेंडा ने घेवर ताजा । झीणा फीणा ने खांडरा खाजा । ८४ । बरफी कलाकंद मीश्रीरो मावो । पछे दूजाने पहलीयो खावो । ८५ । तइथडा ने जलेबी फीणी । गहरी गलेफी खांडज चीणी । ८६ । पेठा डोठा ने नुंगतीरा दाणा । पुरसें माडेणी भरीया छे भाणा । ८७ । गूंजाइमरती सकरपेरा । कर कर मनवारा पुरसें छे गहरा । ८८ । चदकलाने चूरयो चकचकतो । सगला सरावे जीमण जुगतो । ८८ । मालपुवा ने खीर बणावे मीश्री ने मेवामांए रलावे । ६० । सीरो साबूनी झरझरती लपसी । दूध राबडीयां पीवेला तपसी । ६१ । लुची पूडीने सोटे सुंवाली । छावा ले उवी पुरसणे वाली । ६२ । फीणा बटीया ने पतलीसी पोली । पूरण पोली घिरत जबोली । ६३ । दाल सालने केसरीयां भातो । भिणज भडीयारो जीमें सब सातो । ६४ । सुतक तोलीमीजीम खाणा । लोइतिल्ली ने कसकसका दाणा । दाख बीजोरा खारक खीजुर । काची गीरीने केला अंजीर । ६६ । कीसमिस चारोली बीदाम पिसता । नुकले पचरंगी खावे सब हसता । ६७ । पूवा वडाने कचोरी ताजी । पापड फलीयासे सब कोइ राजी । ६८ । दाल सेवाने मोगर

मंगावे । भुज्यां पकोडी सवनेइ भावे । ९९ । चीणा चवला ने अंबोलमेथी । और तरकारयां पुरसे छे केती । १०० । केरेकाचरिया खीज्यां खारोडी । पापडकी गोल्यांने तिलवारा ओडी । १०१ । घोल वडा ने राइता ल्यावे । ज्यूं २ मीठाइ दूणी जीमावे । १०२ । आवे अथाणो केरीजीपाको । मागे सगलाइ पुरसणतो थाको । १०३ । खडी चावलने पतली पैलेवो । मीठा पर खाटी सब कोइ लेवे । १०४ । ओला पतासा मीश्रीरा पाणी । भारी भरल्याए गिंदोदक छाणी । १०५ । जीम्यां जूटीने चलुजी कीना । विवद प्रकारना मूछण लीना । १०६ । बैन सुवासण सुवाजी आवे । कुडता टोपी ने सांतीया ल्यावे । १०७ । गावे मंगल बाजे वाजा । नाम दीरावे सिधारथ राजा । १०८ । नालारी जागा प्रगट्यो निदांनो । गुण निष्पन्न नाम दियो ब्रिद्मानो । १०९ । वस्त्र भुषण ने रुपैया रोको । देइ बीदाय सरबे संतोको । ११० । पांचे धायां मिल पाले नानडीयो । पोढे पालणीए गावे हालरीयो । १११ । छटे महीने खावो सीखावे । चोटी पटारांकेस रखावे । ११२ । हस खेलने गुडोल्या चाले । थडी करावे आंगलीयां भाले । ११३ । कडा मोती ने चांदलीयो छाजे । कंठी दोरा ने हार बीराजे । ११४ । कडीयां कंदोरो गुगरीयां वमके । पाए जाजरयां चाले छे ठमके । ११५ । जगा टोपीने सुतण सोवे । बैठगाडोले सगलाइ जोवे । ११६ । ताती जलेबी मीश्रीने मेवा । दइ माखण सुं मागेकलेवा । ११७ । आडो माडीने रुसणो लेवे । माता मनावे मागे जो देवे । ११८

। चक्री भवराने ख्याल तमासा। देखी मांताजी पूरे मन आसा। ११६। लाडे लडावे वैनड सुवा। आठे वरसरा जाभेरा हुवा। १२०। वेला पुल देखी भणवा वैठावे। हुसें करीने जोसीजी आवे। १२१। चांदीरो पाटो सोनारो वरतो। लिख लिख पाहाडा मुख आगे धरतो। १२२। खोट जाणीने कोप चढावे। खोसी पाटो ने सामा डरावे। १२३। ऊंउंकारनो अर्थ करावे। सुणने जोसीडो इचरज पावे। १२४। याकी बुधीरो पार नै पावे। ऐसी तो विद्या हमने नहीं आवे। १२५। थर थर धुजंतो उठीने भाग्यो पोथी लेइने मार्ग लाग्यो। १२६। जोग जाणीने कीनी सगाइ। पुत्र परणायो बहु घर आइ। १२७। दास दासीने डाइजो ल्याइ। पंचइंद्रिना भोग विलसे सदाइ। १२८। पीव द्रसण नामें वेटी एक जाइ। परणी जमाली जोग जवांइ। १२८। मात पीताजी बारे व्रतधारी। लीनो अणसणने दोषण सव टाली। १३०। काले करीने उंची गत पाइ। सुरगे वारमा उपन्यां जाइ। १३१। उठासु चवसी अनुकरमे दोइ। खेत्र बीदेहमें सिव गत होइ। १३२। पछे प्रभुजी संजम लेवे। बडा भाइजी आग्यानै देवे। १३३। मात पितारो पडीयो बीजोगो। तूं कांइ भाइ लेवे छे जोगो। १३४। धीरज राखीने ठहरोरे भया। वर्स दोए लग निरलेप रैया। १३५। लोकंतिक देवा तिण वेला आवे। हाथ जोडीने अरजे करावे। १३६। ओसर आयां संजम लीजे। भरतखेत्रमें उदयोत कीजे। १३७। इंद्र इंद्रकारी वेसरमण आवे। भरीया भंडारा दाने दीरावे। १३८। सोला मासारो सोनैयो कीजे। एक कीरोड आठ लाख दान दिन प्रत

दीजे। १३६। इसडीकोडांरो छमछर दानज दीनो । एकाएकी जिन संजम लीनो। १४०। दिख्या किल्याण उछव करावे। नरनारी पाछा नगरीमें जावे। १४१। कुटम सहुंने पूठज दीनी। देसे अनारज इछाजी कीनी। १४२। शस्त्र ले सक इंद्र उभा ले आगे। कष्ट गणो छे तुरमें लागे । १४३। हुइ न होवे भगवंत भाखे। कर्म दूजासुं टूटे नहीं लाखे। १४४। लाड देसमें पादरा आया। जीत्यां परीसा कर्म खपाया। १४५। बारे छमछर ने साडा खट मासो। छदमस्त रया वर्स ३० घर वासो। १४६। तपस्या करीने केवल पायो । तीरथ थापीने सांसण वरतायो। १४७। गोतम आदीने चवदे हजारो। रहस छतीसें साधवयां लारो। १४८। एक लाखने गुणसट हजारो श्रावक हुवा बारे वरत धारो। १४९। तीन लाखने सहस अठारो। श्रावका हुइ इतनो प्रचारो। १५०। म्हाण कुंडलपुर प्रभुजी आवे। देवा देवी मिल त्रिगडो रचावे। १५१। सोनारा कोट ने रतनारा छाजा। गाजे अमर ने वाजे छे वाजा। १५२। आकासे देव-दुंदभी बाजे। देखी पाखंडी दूरासुं लाजे। १५३। फिटक सिंघासण वीर वीराजे। चवर वीजे ने छत्र छाजे। १५४। रिखभदत ने देवाजी नंदा। दरसण देखीने हुवा आणंदा। १५५। फूली काया ने छुटी दूधनी धारा। देखीने पाया इचरज सारा। १५६। हाथ जोडीने गौतम पूछे। बाइ सु सगपण प्रभुजी सुं छे। १५७। भगवंत भाखे ए मेरी माता। समखे सुंणीने पाइ सुख साता। १५८। ऐसा पुत्रनो पडीयो वीजोगो । अब तो

दोन्युं इ लेस्यां में जोगो । १५६ । संजम लेइने करम खपाया । केवल पामीने मुगते सीधाया । १६० । अैसा तो वेटा जनम्यां प्रमाणो । मात पीताने मेल्यां निरवाणो । १६१ । गावां नगर ने अनारज देसो । पावापुरीमें चरमें चोमासो । १६२ । राजा पिरजाने देवीजी देवा । निमदिन सारे प्रभुजीरी सेवा । १६३ । देस अठारांरा राजाजी आवे । चवदस पखीरा पोसाजी ठावे । १६४ । वैठ विमाण सक इंद्र आवे । देइ प्रदिखण सीस नमावे । १६५ । इतनी प्रभुजी किरपा करावो । । थोडीसी उमर और वधावो । १६६ । भसम गिरहरो जोर हट जावे । दया धर्मरो उदयोत थावे । ६७ । हुइ नै होवे ए वातां झुटी । टूटी उमर के नहीं लागे बूटी । १६८ । होण पदारथ निसचेइ होइ । टाल सके नहीं सुरनर कोइ । १६६ । कनीवुद अमावस आदीसी रातो । मुगत पदारथां श्री जगनाथो । १७० । सिंघचारांसें हुवो छे सोगो । मोटा पुरसारो पडियो वीजोगो । १७१ । पछे भूरंता गोतमजी आया । मोवणी जीत्यां केवल पाया । १७२ । सुधर्मा स्वामी पाटे वीराजे । तीरथ चारांमें सिंघ ज्यूं गाजे । १७३ । सातसें साधु एक हजारो । च्यारस उपर महा सतीयां लारो । १७४ । करणी करीने कारज सारयां । केवल पामीने मुगते पधारयां । ७५ । वर्स चोसठ लगा केवली रया । पाटोधर तीनू मुगत्यां मगया । ७६ । वरत्यो केइ वस्ते वरतण हारो । सासण चाल्यो वरस एकीस हजारो । ७७ । केइ कथाने सुत्रमें धारी । शिलोको कियो ओछी बुध मारी । ७८ । इधको ओछो ने

अकसर हीणो । लीज्यो सुधारी पंडत प्रवीणो । १७६ । ग्यानी भाख्यो सो तहत करीजे । भूठारो मिछामी दुकडं दीजे । १८० । भणो गूणो ने सीखो सगलाइ । मूडे जैणा कर वाचीजो भाइ । १८१ । समत १६ स साठरी सालो । सावण बद तेरस जैपुर वरसालो । १८२ । रतन मुनीरी समदाए छाजे । पूज विनेचंदजी पाटे बीराजे । १८३ । बे करजोडी जडावजी वंदे । म्हर राखीजे वीर जीणंदे । १८४ ।

कलस लीख्यते

महावीरसामी मुगत पामी । दीन जाणी दुख हरो । सिधारथ नंनण । जगत वंदण सिवमें सानिध करो । प्रभु सेवगने साता करो । १ । मन वचन काया । पहू पाया । सीसपें दो कर धरी । अरज एती करुं केती । सेवा चाउं आपरी । प्र० । २ संसार सागर । तिरण तारण । विरध ऐसो जाणने । जग त्याग दीनो सरण लीनो । तार करुंणा आणनें । प्र० । ३ । काल आद अनाद रुलीयो । चार गत उजाडमें । नवघाट खोटा खाए सोता । अब आयो बाजारमें । प्र० ४ । प्रपंच पसीयो । कर्म कसीयो । राग धेग वंधण करी । मोए बाध सेठो । जीवढेटो । डूवणारी करणी करी । प्र० ५ । अर साय मोरी बंध तोडी ' करम कलेसी मारने । देउं जीत डंका । होय निसंका । कदिय न जाउं हारने । प्र० । ६ । ले ग्यान ध्यान । खजान साथे । समकित आगे राखसुं । धर्म जाभ बेठी । धार सेठी । अजर अमर सुख चाखसुं । प्र० ७ । दोहा । एह मनोरथ मायरा । पूरो श्री भगवंत ।

बालक हट हाती चढु । नही जाणे वरचंत । १ हु बालक तुम आगले । हट कर बेठो सु वाम । माएत विरद वीचारने । दीज्यो मुगत मुकाम । २ । त्रिन करणी तिरणो नही । ए झुठी अविलाप । खोटो हीरो वेचतां । कैसे पावे लाख । ३ । सुख दुख करता आतमाने संचे पुनने पाप । तेसाइ फल भोगवे । साखी धर छो आप । ४ । सिध साधिक मीलीया विना । विद्या सिध न कोय । कांइयक प्राक्रम हु करु । सो पूठ तुमारी होय । । मन घोडा तनताजणा । चुप कर लीजे ताण । तीनूं इ वस राखतां । पावे पद निरवाण । जनम जरा मरणो नहीं । अविछल सुख अनंत । क्या जाणु कद पामस्यु । अखे गुमतरो पंथ । ७ ।

चोइसी लीख्यते

देसी होली काफीरी छे । रिखव अजीत समभव अभिनंदन । भव जीवनके मन भाया । वंदो नित नित चोइसइ जीनराया । वं० । आंकणी । १ । सुमत पदमसुपासचंदा प्रभु । हरक हरक परणमू पाया । वंदो० २ । सुवध सीतल श्रीहंस वास पुज । सीव रमणीसें चित ल्याया । वंदो ३ । वीमल अणत धर्म संत जीनेसर । संत करी सहु सुख पाया । वं० । कुंथ अरि मल्ली मुनि सो-व्रतजी । जनम मरणसु कंपाया । वं० ५ । नमीए नेम पारस महावीरजी । सिवपुर मारग दीखलाया । वं० ६ । चोवीसें गुणधार नमूं नित । वहरमान निसदिन ध्याया । वं० ७ । १९ स एकावन जेपुर । फाग रागमें गुण गाया । वं० ८ । बे कर जोड जडाव नमे नित । जिन चरण चीत लपटाया । वं० ९ ।

छंद अडीयल

रिखब अजीत संभव अभिनंदन । सुमत पदम प्रभु । पाप निकंदन । । सुपारसचंद । सुबध सीतल भज । हंस वास पुजे पद पंकज । २ । वीमल अणंत धर्म संत सहायक । कुंथ अरि जीन त्रिभुवन नायक । ३ । मलीनाथ मुनि सोब्रत सामी । नमी नेम पारस सिव गामी । ४ । चोइसमा श्री विख्यात । सांसण नायक मुगती दाता । ५ । गोतम आद नमुं गुणधारी । बहरमान बीस उपगारी । भाव सहत वंदो नरनारी । ६ । १९ सें ५९ सुख वासो । जेपुरमांए पोस सुद मासो । ७ । तिथ तेरस रवीवार सुणीजे । बेकर जोड जडाव भणीजे । ८ । भणो गुणो सीखो सुखदाइ । ज्यां घर कूमी रहे नहिं कांइ । ९ । कलस । अरिहंत सिध आचार उपाध्यां । साधु सकल गुण मालए । जपू जाप मन वचन काया । त्रिकरण सुध त्रिकाल ए । । नवकार सार संसारमांइ । ओर सरव जंजाल ए । पस्यो जीव मुज भूल निज गुण । जग छेर आजी ख्यालए । २ ।

कजोडीमलजी माहाराजरा गुण लीख्यते

राग हरीजीरो राखो भरोसो भारी । पंच परमेसटीरा पद प्रणमुं । गण गिरवा गुण धारी । पूज कजोडीरा गुणरी माला । गुंते गल हारी । पूजजीरो ध्यान धरो नरनारी । आंकडी । पंच महाव्रत निरमल पाले । खट काया सुखकारी । बिचरत गांव नगरपुर पाटण । भव जीवां हितकारी । पू० २ । सत्रभेदे संजम पाले । तपस्या कठण करारी । दोष बयालीस टाल भली परल्यो

निरदोसण अहारी। पू० ३। सम्प्रदाय आठरें जुगत बीराजो। गुण खटतीसें बीचांरी। रतन हमीरेकी गादी दीपावो। आचारज पद भारी। पू० ४। स्वरसती कंवीराजे छाजे। भवियण बिदमें जारी। दिन किर्ण परदेइ दीपे। देख देह जाउं वारी। पू० ५। वाणी सुधारस इमरत धारा। बरसे निरमल वारी। पीतां तपत मीटे भव भवकी। सुण समजे नरनारी। पु० ६। ससि जीम सीतल बदन तुमारो। भविक चकोर निहारी। सनमुख बोल सके नही कोइ। अतसें आपरी भारी। पू० ७। सिख सरोवण सारा पूजरा। एक एक इदकारी। बिनेचंद जिम सरद पुनमको। मूर्त मोवनगारी। पू० ८। सिंध सहुनें साताकारी। जोग मुद्रा ज्यारी भारी। पाटवी चेला पुजरा कहीए। बालपणे बिरमचारी। पू० ६। जसराज जीरो जस अतिभारी। मरुधर देस मझारी। त्यागी बेरागी समतारा सागर। ममता कुमत बिदारी। पू० १०। सोभाचंदजीरी सोभा जगतमें। बिने तणा भंडारी। अंगचेसदा यपपूजरी। अहोनिस अग्यांकारी। पु० ११। इदकी म्हर रही सुख सागर। भर पाइरी जवारी। निज कर जाणो कुरणा आणो। में छुंदास तुमारी। पु० १२। एक जीभ सुं कडुं कठालग। महमा इदक तिहारी। तुम गुण सिंधु मुज बुध बिंदू। कहतां न आवे पारी। पू० १३। सेखे काल बीचरता आया। पीपाड सहर मजारी। फागण सुद पख होली चोमासी। बारससि सुखकारी। पू० १४। समत १९ सें बरसें चोत्तीसें। रंभाजी उपगारी। ज्यारे प्रसाद जडाव कहत है। चाउं नित किरपा तुमारी। पु० १५।

लावणी ली

देसी । करम रेख नहीं टले करो कोइ लाखा चतुराइ । साल ६२ की अब आइरे सा. । मत घवरावो धीरज राखो । धर्म करो भाइ । धर्म भव भवमें सुखदायरे । धर्म० चोरासीका फेरा टाले । मुगती कीसाइ । साल० आंकडी । १ । सालका क्या डर है भाइरे । सा० पुन पापका जोडा जगतमें । भुगते सगलाइ । छुटको नहीं होवे कोइरे । भव भवमांए साथे चाले । निज कृत कमाइ । सा० २ । नीत अछी राखो भाइरे । नी० अनित जगतमें बोहत बूरी है । वणी विगड जाइ । नीत सु रिजक व्होत थाइरे नी० पांचु पंडव राजा हरीचंद गइ संपत पाइ । सा० ३ । पापसें दूर रहो भाइरे । पा० दान सीयल तप भाव । पुनकी खरची सुखदाइ । खाय करमती खोवो यांहीरे । खा० कहत जडाव जेपुर के मांइ । कुछ डर है नांही । सा० ४ ।

पार्सनाथजी की लावणी

देसी कलाली भर ल्याये प्याला । कासी देस वडो नीको । आस्वसिण भोमांको कीको । सोभ रयो अवनी सिर टीको । प्यारो प्रांण हमजीको । तुं म माता तुं मही पीता तूं मिंत्री तूं भिरात । तुं सरणागत सायवा जग तारण जगनाथ । मरणमें सरण आप केरी मर० पास जिन आसरो तेरो । १ । जरा को तीर लग्यो तीखो । भजन नही होय सके नीको । विपम रस पुदगलको पाको । जीवको जोर कीयो भांको । घेरो लागो कर्मको । प्रवल चार कषाय । च्यारु गतरा चोकमें । भूल्यो चेतन राय ॥ चिटे किम चोरासी फेरो । मिटे । पा० २ । राग मोय वाध लीयो सैंठो । द्वेषको

वीच पड्यो आंटो । रोक रयो मुक्तीको घाटो । लुंट लीयो निज गुणको लाटो । साय करो तुम सायवा । रहो हमारी पूंठ । सारे नहीं इण नीचके । मारु एकण मूंठ । कोस लेउं धरम धन डेरो । को. । पा. ३ । कर्मकी चाल हे न्यारी । उदेको जोर अति भारी । निबल है आतमा मारी । सया दुख व्होत अब हारी । गुनगार छुं आपरा । तुंम हो दीनदयाल । टालो मोए मिथ्यात सुं । मीटे सरब जंजाल । एहइ सल सालत है गहरो । एह. । पा. ४ । नाथ अब असरणागत तेरी । राख मोए चरणाकी चेरी । मीले एक समगतकी सेरी । आवतां नही लागे देरी । मुगतीकी जुगती करो । सुण ए किरपा निधान । बगसो दोय पग भुमका । कर लेस्युं गुदरान । व्होत जस होय आपको रो वो० । पा० ५ । साठकी साल गइ सारी । आइ अब इगसटकी वारी । उमर सब आलसमें हारी । लगे नही दूसरी कारी । गइ गइ सो जाणदे । अबही सुरत संभाल । अवसर बीत्यो जात है । ज्युं अरटतणी गट-माल । आउं जल छीजत है मेरो । आ. । पा. ६ । चेत सुध दूज सुखदाइ । अर्जकी लावणी गाइ । मिले मोए मुकती कीसाइ । ओर सबरीज भरपाइ । १६ सें समत भलो । जेपुर सेखे काल । दीजे दर्शन जडावने । बरते मंगल माल । कटे भरम जाल जीव केरो । कटे । पा. ७ ।

पूजजी महाराजरा गुण ली०

देसी । मोत्यांरो धजरो भूली । पूजपरम उपगारी । ज्यांरी सेवा करो नरनारी । आंकणी । में तो वीनती कर कर हारयां । तोइ

उग्रवाड़े पधारयां । बडलुने दीनी टाली । थारी जन्म भोम समाली । पू. १ । मारा भाया कोसाणे आया । ज्यांने टावर ज्युं जो-लाया । मारे होती मोटी आसा । सो आप करी निरासा । पू. २ । आप तो स्हरां सुं राजी । कुंण राखे हमारी वाजी । मारी अर्ज वीनती झेलो । थारा चेला चोमासे मेलो । पु. ३ । पूर्व पापज कीना । पुज दरसण मोडा दीना । माने त्रसे त्रसे त्रसाया । मैं तो निठ निठ दरसण पाया । पू. ४ । सती रंभाजी उपगारी । ज्यांरी जगतमें मैमा भारी । ज्याने तो दरसण दीज्यो । मान किर-यावर मत कीज्यो । पूज. ५ । सब सरीखा कर लेखो । माने एक निज कर देखो । मायत बिरद बिचारी । मति देखो चूक हमारी । पू. ६ । ओलंबा सुण खीजो । तो केद मुक्तमें कीजो । रिज्यां तो किरपा कीज्यो । माने वेगा दरसण दीज्यो । पू० ७ । १६ सें अडताली । बिचरंता सेखे काली । बडलुंमें पग धरीया । मारा वंछित कारज सरीया । पू० ८ । गणी बायां वहन जुडाइ । जडावजी ढाल बणाइ । सुणने कांइ वगसीजे । कलपंता मास रहीजे । पू० ६ ।

देशी । आज शहरमें रहंजामारु सीपडे । स्हर सुबटपुरमांए वीराजीया । लगता जुग चोमास । सुगरुजी करयोएकसुर हमारो नाथेजी । त्रसावो नीजदास । सु० । वेग पधारो जेपुर सहरमें । आंकणी । १ । तुम बिने त्रसे लोय । सु. नव दखत सीस लारे ल्यावजो । सफल मनोरथ होए । सु. । वे० २ । माफी करने वो मानो वीनती । जाणी कांसखवास । सु. दीज्यो दरसण परसण

होएने। पूरो हमारी आस। सु. वे० ३। आप निरागी हो समता रा सागेरु। मोय ममत दीयो छोड। सु० पिणमुज मनडो होए रयो लालची। तुम सेवारो कोड। सु. वे० ४। कीनो चोमासो हो चेलारी चायसुं। फिर नही कीनी संभाल। सु० हमतो गरजी हो अरजी कर होस्यां। मानो दीन दयाल। सु. वे. ५। होड न होवे हो जेपुर स्हरनी। चेला हुया थारे पंचे। सु. मनरी घूंडी खोलो नाथजी। किम लीनो मन खंचे। सु. वें: ६। भूलचूकने हो अविनय असातना। करीए कराइ कोय। सु. पखीये चमोसी होती जी छमछरी। खमीए्माएत होय। सु. वे. ७। चंद चकोरां हो मोरा मेहज्युं। त्रस रया मुज नेण। सु. वरसे नीर हो धीरे धरे नहीं। सवण सुणणकुं वेण। सु. वे. ८। मनरा मनोरथ पूरो नाथजी। दूरो गणो तुम वासे। सु. पग पिण वेरीवो आगा खिसे नहीं। लवद नही मुज पास। सु. वे. ९। समन १९ सें हो वरस पंचावने। भादरवा वद बीज। सु. जेपुर-मांए हो द्रस जडावने। दीजे कीजे रीज। सु वे १०।

ढाल

रे पनजी मूडे बोल। भांग तमांखुं अमलतिजारो। इणको संग निवारोरे खरच अणुंतो कांइ फायदो। हीए वीच्यारोरे। बीसन नीवारोरे। बीस. दुलभ मीनष जमारो यूं मती हारोरे। वी. आंकणी। १। रंग रुप कइ स्वाद न दीसे। खातां मूंडो खारोरे। नही मीले जब कइय न सुजे। करत पूकारोरे। वि. २। माल मीले जब मोज करो। बहु मन भाव ज्यूं खावरे। कसर पडे जद

नींद न आवे । मन पिछतावेरे । वि. ३ । एक जवानी पैसो पले । तीजे संगत खोटीरे । ऐस करंतां बिसन लगाया । कांइ अकल फूटीरे । वि. ४ । आछो भावे नहीं कमावे बेठो दंम जगावेरे । सब घरकाने खारो लागे । प्राणी घुररावेरे । वि. ५ । नसा बादरो नहीं कायदो । बोलत २ चुकेरे । जात कूजातरो भिन नहीं । मरजादा मूकेरे । वि. ६ । इण भवमांये इतना अवगुण । परभव पाप उगाडेरे । बिसन विगूंता होय फजीता इम नरनारीरे । वि. ७ । १६ सें एकसट भाद्रवो । पांचम पख उजवालोरे । जेपुर-मांए जडाव जुगतसुं । कहे हितकारीरे । वि. ८ ।

देसी । फाटकारीया तेरा काटी. जी बालपणो हसखेल गमायो । जोबन त्रिया वसको, बूढापामें जरा सतावे । खातां पीता टसकोरे । बूडापा वैरी किण विद थासी थांसुं छूटको । बू. १ । आंकडी । जी जोत भइ नेणाकी मंदी । दांत पडया सब ढीला । नाक झरे सुणवामे घाटो । केस भया सब पीलारे । बू. २ । जी घोडां हाथ देइने उठे । कमर करडी कीनी । डांग पकडने डिगतो चाले । सुद बुदने खो दीनीरे । बू. ३ । जी बहुआं छोडयो कांण कायदो । कद मरसी तूं डाकी । खाय सका नहीं पहर सका नहीं । हीडा कर कर थाकारे । बू. ४ । जी बोलातो बोलण नहीं देवे । सीख न माने घरका । साठी बुद नाठी कहसरे पडयो रहनी झरखारे । बू० ५ । जी दोय पेटकी हांडी मांए । खीर राबडी होवे । बेटा सबडे खीर खांडने । बाबो टुगमुग जोवेरे । बू. ६ । जी बेठा खावो हुकम चलावो । पर दम जगावो । पुरसां

जेस्यो खायल्यो सरे । नहीतर जाय कमाग्रोरे बू० ७ । जी पीसा-पोत्रा करां रसोइ । टाबर टूबर रोवे । जाय पुकारो बेटा आगे । मासुं काम न होवे । बू. ८ । जी बेटा बात सुणे नहीं तिल भर बैरांरा भरमाया । घरसें बेठा माला फेरो । कांइ कमावण आयारे बू० ९ । जी अठी उठीरा धका लाग्यां । पूरो हो गयो कायो । कुण सुणे किणने कहसरे । जाणे काग उडायोरे । बू. १० । जी एकत खाट पिछोकड़े पटकी । कोय न आवे नेडो । कूरां कूरां करमूड पचावे । डोसांने मत छेडोरे । बू. ११ । जी घरसुं रोटी करडी आवे नरम खीचडी भावे । दांतासुं चावी नही जावे । मन दीलगीरी ल्यांवेरे ; बू. १२ । जी दोरो खरच चलावां घरको । टाबरया अणाणा । थाने माल मसाला भावे । माने भाग नही खाणोरे । बू. १३ । जी सीख्यो ग्यान गयो गेबाउ । पडे ध्यान में घाटो । भरा बजारा धाडो पाडयो । लूंट लीयो सब लाटोरे बू. १४ । जी पूरबपूंजी खाय खुटाइ उमर लंबी पावें । जमदूत जब घाटी पकडे अंतममे पिस्तावेरे । बू. १५ । जी पाप करीने माया जोडी । घरका फिर फिर जोवे । रोग असाता उदे होय जब आप अकेलो रोवेरे । बू. १६ । जी रोया गरज सरे नहीं भोला । हुंसीयारीका काम । भव भवमां ए साथे चाले । प्रभूजीरो नामर । बूस १७ । जी ग्यानी होय सो गत सुधारे । मूरख मरण बिगाडे । बाल मरणने पंडीत मरणो । केइ जीते केइ हारेरे । बू. १८ । जी आयां जाया सगा सनेइ । चित नहीं देवे परणी । दोस नहीं देणो । किसीने । जोवो आपरी करणीरे । बू.

१६ । जी जीवतडारी सार न पूछी । विद्‌विद्‌ पाडयां वेला । मोवा पाले जात जीमावे । रोवे दे दे हेलारे । बू० २० । जी शिष सुवनीत सुपात्र बेटा । विरला जुगमें पावे । जीतव मरण सुधारे दोन्यूं तेउसरावण थावेरे । बू० । १६ स एकसठ भाद्रवे । गो गानमी वखाण । जैपुरमांए जडावनोसरे । जरा कीयो नुकसाणरे । बू० २२ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी लंजा सीपाइकी । खेत्र विदेह वीराजीयाजी । श्रीमिंद्र-स्वामी । होजी मारा अंत्र जामी । हुं इण भरत मोझारे । सीवगत गामी । आंकडी । १ । विन देख्यां मन हुलसे जी । श्री० हो० जीम चात्रिक जलधार । सो २ लवद विद्या नहीं मा कनेजी श्री० हो० पांख नहीं तन मांय । ३ । विद्याधर मिंत्री नहीं जी । श्री० हो० गिण विद मेलो थाय । सी० ४ । दूर दीसावर आदरोजी श्री० हो० विचमें विखमी वाट । सी० ५ । आडा डुंगर वने गणाजी । श्री० हो० नदियांओ वटवाट । सी० ६ । इण भव आय सकुं नहींजी । श्री० हो० वनणा उगंते दूर सी० ७ विन रुजगारनी चाकरीजी । श्री० हो० राखो कपूंनी हजूर । सी० ८ । भवसागरमें भरमनाजी । श्री० हो करी अनंती वार । सी० ६ । अब तो न्याव निवेडदोजी । श्री० हो जी० भमत भमत गयो हार । सी० १० । मायत जावे जीमचाजी । श्री० हो० वालक किम रहलार । सी० ११ । आप तो मोक्ष पदारस्योजी श्री० हो० मानेइ पार उतार । सी० १२ । भवि ए छुं अभवी छुं जी ।

श्री० हो० सो तुम देवो बताय । सी० १३ । धीरज धर करणी करुंजी । श्री० हो० मनको भरम मीटाय । सी० १४ । पूरवधर दृष्टि धराजी । श्री० हो० जघन साधुजी सो कोड । सी० १५ । चरण लागी सेवा करे जी । श्री. हो. हुं नहीं करुं जांरी होड । सी. १६ । दूरे रइ दर्शण करुंजी । श्री. हो. एसो कीजे उपाव । सीव. १७ । बार बार करे विनतीजी । श्री. हो जैपुरमांए जडाव । सी. १८ ।

बीजे कवरजीरी लावणी लीख्यते

दे धन धन जंबू कवरजी जोबनमें समता लीनी । कछ देस कसुंवी नगरी । देखंता सब मन भावे । सेठ धनावो धगकर दीपे । बीजे कवरजी सुत थावे । बाल ख्याल कर जोवन वयमें । सतगरुकी संगत पाइ । सर्व व्रतामें सील बखाण्यो । बिजेकवर सुण हरखाइ । किसन पखरा त्यागज कीना । उत्तम काम कियो हदरी । भर जोवनमें सील आदरयो । बीजे कवर विजया कवरी । आंकडी । १ धन सार वलि सेठ दूसरो । तिणहीज नगरीकमाइ । सुंदर मंदीर रिध संपदा । पुनवंत पुत्री जाइ । चोसट कलावती सुलत्तण । रुपवंत बहु चतुराइ । पूरव पुन संजोग धर्मरो । सतियांरी संगत पाइ । सील प्रसंस्यां सुणी निज सरवण । सुकल पख सोगन सवरीं । भर० २ । माहो माइ करी सगाइ । मात पिता सहु सुख पाया । जान मान दे बहु आडंबर । प्रण पात निज घर आया । रुपा रेल केल कंबाज्युं । नमन करी सब पाए पडी । सज सोला सिणगार सुहागण । पीउ मिंद्रमज आय खडी ।

जोबन जोर घटा चढ आइ । अमरमें चमके बिजरी । भ० ३ । सीस राखडी काना कुंडल । नक बेसर चूपा चलके । मुख तंबोल मांग भर मोती । कांचूं हार हीये हलके । रतन जडत चूडा अरु कांकण । बाजूबंद जडियां जब के । दुलडी तीलडी चोसरमाला बीच बीच हीरा दमके । करमें मुदडी । ओडण चुंदडी । लिलवट बिदली रइफबरी । धन धन श्रावक पुन प्रभाव । बीजे कवर । बि० ४ । रिचक झिमक घुघर घमकाती । ठमक ठमक पगलां भरती झणण झणण कैकट मेकल । गज गति चाल चली जाती । वदन दीपाती मन ललचाती । मदन दीपाती मदमाती । काजल रेख देख नेत्रांमें । कामीकी छाती थरराती । सांगोपांग सरग चोथानी । मुख आगे टाडी अमरी धन० ५ । लटक लटक करतो बहु लटका । मुलक मुलक मुखडो मोडे । मधुर मधुर बोले मन गमती । प्रीतमसेथी नेह जोडे । खडी खडी कनकी अबहारी । म्होत कठण तुमरी छाती । हुकम करो तो लेउ विसरामो । नहींत्र पाछी घर जाती । आंट न खोलो मुखे न बोलो । करकाया कनकासयरी । धन. ६ । इम बतलाती । कंथ रीजाती । हे जबर हीये हुंलसाइ । बिजे कवर कहे काम नही मज हे सुंदर तुं किम आइ । जाव जाव मैं किसन पखरा त्याग कीया मन डिडताइ । तीन दिवस तो दूर रहो तुम । पीछेसें जाणी जाइ । टूटी आस भइ निरासा । अब कुण सार करे हमरी । धन. ७ । निरख वदन देखी कवरी को । बतलावे मीठी वाणी । दिलको दर्द कहो हम सेती । हे सुंदर किम कुमलाणी । जाव जीव मैं सुकल पखरो सीलव्रत लीयो हित आणी । अबतो

सर्वथा। तुम परणो बीजी साणी। सेठ कहे सांभल सुलक्षणी। तुम सरखी मिल गइ नारी। तो कुंण आपद लेवे गलामें। समतामें सुख है भारी। भली विचारी कर एक तारी। तरी जास्यां दोन्युं भवरी। धन. ८। छानी बात कठालग रहसी। प्रगट हुवा होवे हांसी। साध सतीने देसी परीसो। मात पिता बहु दुख करसी। कंथ कहे तुं सुणए कामण। मन वच काया वस राखो। धर्म ध्यान कर काल गमास्यां। अपण मुख सुं मत भाखो। एकण सेज्यां सील पालस्यां। तप जप कर देइ दमस्यां। प्रगट हुवासुं संजम लेस्या। करणी कर भव जल तिरस्यां। सेठ सेठाणी एकमतो कर। ग्यान पढण लागी लिवरी। ध. ९। जिनदास श्रावक सुपनामें। निर दोषण ले अन पाणी। सैंस चोरासी महाश्रमण मुनी। प्रतिलाभ्यां उत्तम जाणी। जागे तो काइ एक न दीसे। उत्तम फल बीसवा वीसे। वीमल केवली तुरत पधार्यां। पुछे कर नीचो सीस। भाखो स्वामी अंतर जामी। वुधी निरमल है तुमरी ध० १०। नगर कसुंबी सेठ धनावा। बीजे कवर विजीया कवरी। बाल ब्रिमचारी। बेउ नरनारी तुम मीलीया होसी जारी। सुण सुख पायो। तुरत सीधायो। कोसंभी नगरी आयो। सेठ बुलायो नैत जीमायो। तुम सुतको दर्शन पायो। विस्मय थायो। कवर बुलायो करणी है इनकी जवरी। ध. ११। सुण हो पुत्र देवो उत्तर। हमने खवर नहीं कांइ। दीजे सिख्यां लेद्दं दिख्यां। हूं वंभव ने या बाई। घरमेंइ पालो। दोषण टालो। संजम कठण व्होत भाइ। नहीं मानो तो जोर नहीं मुज। हे अग्यां जिम सुख

थाइ । परण्यां छां जीम उछव करने । घर छोडयो चेटा चउरी । ध. १२ । गुरु अराधे आतम साधे । तप जप खप करणी कीनी । सेठ सेठाणी बेहु भव प्राणी । थोडामें मुगती लीनी । १६ सवासट फागण बद । सनीवार नोमी जाणी । जेपुरमांए जडाव लावणी । गाइ उत्तम गुण खाणी । बार बार जिनराज चरणामें । वंदणा हे मस्तक नमरी ध. १३ ।

श्री मंधीरजीरो लीख्यते

आवे वर लटकंतो । कनक धज महाराज । घडियां अटकंतो । ए देसी । म्हा विदेहमें विराजे । प्रभूजी हुं इण भरत मोझारोरे । भव दुख वारो । मुज तारोजी क्रिपानिधस्वामी । १ । आंकडी । सेंधु माणस कोय न दीसे । ल्यावे तुम समाचारोरे । भ० २ । मन मारो त्रसन । हिवडो हुलसे । देखण तुंम दीदारोरे । भ. ३ । सेवक जाणीने सनमुख राखो । सफल हुवे अवतारोरे । भ. ४ । कहा करुं मैं पर नहीं पाइ । पर विन उडोय न जावेरे । भ. ५ । देव विध्याधर मित्री न दीसे । सो तुम मार्ग दीखावेरे । भ. ६ । म्हर करी मुज मरण मीटावो जनम जरा नही आवे २ । भ. ७ । सेजेइजसहबसुख सागर । दोन्यूं दुख मिट जावेरे । भ. ७ । अतर्से नाणी ने केवल ग्यानी । नही इण दुखमी आरोरे । भ. ६ । वीसुइ वीलम रयाजी म्हा विदेहमें । एक दोय अठइ पदारोरे । भ. १० । दूर रहुं मारो दिल नहीं लागे । राखीजे निज सागेरे । भ. ११ । चाकर होय रहस्युं चरणा में ज्यो मुज भव दुख भागेरे । भ. १२ । किरपा कीजे ने दरसण दीजे ।

मन वंछत पूरीजेरे । भ. १३ । इतनी गरज अरज मैं कीनी । सायत विरद धरीजेरे । भ. १४ । सेवा चाउं न किण विध आउं निस दिन तुम गुण गाउंरे । भ. १५ । प्हो उठीने बे कर जोडी । चरणा सीस नमाउंरे । भ. १६ । कर्म कलेसी करत बखेरा । सो तुंम दूर हटावोरे । भ. १७ । समरथ सायब साय करीने । पुदगल फंद मीटावोरे । भ. १८ । समत १६ म ने म्हा महीने । दूजन पख उजवालोरे । भ. १९ । जेपुरमांय जडाव कहत हे । वीनतडी अवधारोरे । भ. २० ।

आलूंणकी ढाल लीख्यते

देसी जंबुजीरा तावनरी छे । हो नाथजी पाप आलेउं आपरा । केइ भांतरा । दिन रातरा । उंलालो । किया पच इंदी वीणास । मारयां गल देइ पास । घणा खाया मद मांस । दीनानाथजी । सुणो वातजी । जोड हाथजी । आंकडी । १ । हो नाथजी । लुटयां छ कायरा प्राणने । केइ जाणने । केइ अजाणने । उ० नहीं जाणी परपीडा । चाप्यां कंथवा ने कीडा । चाव्यां पाना हंदा बीडा । दी० २ । हो वनासपती तीन जातरी । केइ भांतरी । छमकी हाथेरी । उ० छेद्यां पत्र फल फूले । सेक्यां गाजर कंद मूले । खाया भरी भरी सूपे । दी० ३ । हो० आचार कीना हाथसुं । चीरयां दातसुं । गणी खांतसुं । उ० माय गाल्या है मुसाला । खाया भरी भरी प्याला । आया उलणयाका जाला । दी० ४ । हो० पाणी अलु-च्यां तलावरा । कूवा बावरा । नदी नावरा । उ० फोडी सरव-रीयारी पाल । तोडी तरवरीयारी डाल । वरफ घडा दीयागाल ।

दी ५ । हो० अदर आकासारा जेलीया । भर भर मेलीया । उना ठंडा भेलीया । उ० अरथ अनरथ दीया ढोल । कीनी अणछाणी अंगोल । मांए मांडी भैसारोल । दी० ६ । हो० मातासु पुत्र बीछोइया । घणा रोइया । दूधा दूइया । उं० कोस्यां लानडीया सा बाल । अपेटा पाडी भाल । तोडयां पंखीडारा माल । दी० ७ । हो० जू माकडने माखीयां । रोकी राखीयां ' रस्ते नाखीयां । उ० तडके माचा दीया मेल । मांए उना पाणी ठेल । आगे होसी घणी हेल । दी० ८ । हो० सीयाल करी खीरा भरी । चोडे धरी । उ० मांए पडपड मरीया जीव । पाप कीया मस दीव । दीनी नरकारी नीव । दी ९ । हो० उनाले बाग्र बीजोबीया । फुल बीछावीया । जल सिंचावीया । उ० कीनी वागामांए घोट । खाया चूरमा ने रोट । बांदी पाप तणी पोट । दी० १० । हो. चोमासे हल हाकीया । बेल भूखा राखीया । मारयां चाबख्यां । उ० फोडया जमी तणा पेट । मारयां सांप सप लेटे । दया नहीं आणी ढेटे । दी० ११ । हो० जुना नवा कर बेचीया । सुलीया संचीया । नही सोचीया । उ० अण जोया लीया पीसे । इल्यां मारी दसवीसे । आगे रोसी देइ चीसे । दी० १२ । हो. दूध दइ आछचालेना । सरबत दाखेना । केरी पाकना । उं० बलि गीरत न तेले । दीया उगाडाइ मेले । कीडयां आइ रेला पेले । दी १३ । हो० कुड कपट छलता किया । छाने राखीया । नही भाखीया । नही भाखीया । उ० मुख बोले गणी भुठ । धाडा पाडे लीया लुट । जंत्र मंत्र मारी मूठ । दी० १४ । हो. परनारी धन चोरीयां । खेली होरीयां । गाइ डोरीयां । उ०

देख्यां तमासा नेनी जे ताल्यां पीटी होइ हींजे । वाल्यां गाइ घणी रीजे । दी० १५ । हो० अवगण वाद गुरां तणा । वोल्यां गणा । असुखा वेणा । उ० दुख दीया में अग्यानी । निंद्या कीनी छानी छानी । नही थाम्यो अन पाणी । दी० १६ । हो. भोजन भली भली भांतरा । आदी रातरा । खावा सातरा । उ० पीया अण छाण्यांइ पाणी । मन करुणा नहीं आणी । पर पीडा न पीछाणी । दी० १७ । हो. सासु सोक सुवागणी । पाडोसण मणी । संताइ घणी । उ० मुख वोली माठी वाल । केइ दिया कूडा आल । तपसी रोगी वुडा वाल । ज्यारी नेंकरी संभाल । दी० १८ । हो. शंशय कीया में मोटका । कोइ छोटका । हुवा खोटका । उ० करी छाने राख्यां पाप । सो तो देख रया आप । मारे थेइ माय वाप । दी० १६ । हो. स्त्रीसुं भांता पडावीया । गरभ गलावीया । जीव जलावीया । उं० मारी जूं ने फोडी लीख । वेठो पापीरे नजीक । नहीं मानी गरु सीख । दी० २० । हो. थापण राखी पारकी । केइ हजारेकी । साउकारेकी । उं० देता कीया सीट पिट । माग्यां तुरत गया नट । लीया सामूलाइ गिट । दी. २१ । हो. तप जप संजम सीलरी । देता दानरी । भणतां ग्यानरी । उं. दीनी मोटी अंतराय । तेतो भुगती नहीं जाय । पडियो करसी हाय हाय । दी. २२ । हो. मात पिता गुरु देवा तणो । अवीनेपणो । कीयो घणो । उं. वसीयो चोरासीरेमांए । ज्यांसु कीयो वेर भाव । खमो खमो चित चाव । दी. २३ । हो. सार करीने संभालज्यो । मती विसारज्यो । पार उतारज्यो । उं सतत ओगणीसें वासठ । झांको

मती करो हट । दूसण दीज्यो अबे झट । दी. २४ । हो. आले-वणा इम कीजीए । मिछ्यां दुकड दीजीए । करम छीजीए । उं. जेपुरमांय जडाव । आणी उजल भाव । ढाल कीनी धर चाव । दी. २५ ।

धन्नाजिरी लावणी लीख्यंते

राग । गोरी तो चाली सासरे । तुम कवीतो फिर आना । कवी तो फि आता । देसी इणमें मीलती छे । आद श्री अरिहंत सिध सरव साधु । सिध. मैं नमन करु निज सीस भावसें वंदूं । इण जंबू दीपमें । नगरी का कैंदी सोवे हो । नगरी. तिहां भद्रा नामे । सुवारथ वाइ होवे । एक धन्नानामे । पुत्र रतन जिण जायो रतन. प्रभुता है पूरी बतीस । कोड धरमायो । दिलकर दीपे ससि जिम सुरत सोभागी हो । सु. । धन धन्नाजी महाराज बडा वैरागी । १ । आंकणी । ज्यारे म्हल बयालीस सोम । झीगमिग जोती । झी. घणा जाली जरोका । घोप लटकता मोती । सुख लैणी सुद्रबतीसें परणाइ । नारी परणाइ बहु दत डायजो । अन धन लीछमी ल्याइ । ज्यारे सेज सकोमल । चंद्रवे चतुराइ । घणी. सुख विलसे धन्ना । दोगंध कसुर नाइ । कहुं जोगतणो बिसतार । दसा अब जागी । दसा. धत. २ । लीयो जोवन वयमें जोग । भोग तज दीनो । भो. महावीर समीपे । पंच म्हा वरत लीनो । मुनी जाव जीव छट भगत । अभिगरो लीनो । अभि. नित पाणीमे अन्न वाल । पारणो कीनो । ज्यां कंकर करदी देह । नेए तज दीनो । नेह. कर तप जप काडयो सार । मरणसे बीनी । एक म

वच काया । सुरत मुगतसे लागी । मुग. धन. ३ । मुनी भण्यां इग्यारे अंग संग थेवरने । संग थेवरने । संग. ए सह परीसासुर । मार निज मनने । सब क्रिोध मान मद लोभ । कपट डिढ समगत समजमें सील । सुधारस पीनो । श्री वीर संघाये । उगर वीहार करंता । वीहार घणा घणा गिराम नगरपुर । पाटणमें विचरंता । रया राजगरीने वाग । अनुग्या मागी । अनुग्या । धन. ४ । जब गइ वधाइ । सेणक मन आणंदा । मन. बहु हरक धरीने । भेटयां वीर जिणंदा । राय सुणो देसना पूछे । सीस नमाइ । सीस. सगला संतनमें । कुंड इधक मुनी थाइ । जीन भाखे सेणक साध सिरोमण सारा । सिरो. पिण रजमांएतज । धन धन्नो अणगारा । कहो कारण सामी । सुण वानी रुच जागी । इछा. धन. ५ । नाखे अन हाणी । एवो जाणी काग कुता नही वंछे । लेवे हित आणी । जीत्यां इंद्री पंचे । सुण समरण राजा । मुनी गुण-ताजा । धना मुनीपे जावे । मुनी. देइ प्रदिखणा । लुल सीस नमावे । तुम धन हो स्वामी । अंतर जामी । गुणरो पार न पावे हो । पार. प्रणाम करीने । आया जिण दीस जावे । द्रसण अभि-लाखे । फिर फिर जाके । जैन धर्मरो रागी । धर्मनो. । धन. ६ । नव मइना सारे । मास संथारे । स्वारथ सिध अवतारो हो । लीयो. चव जासी मुगते । खेत्र विदेहमें जारो । १९ सें ६२ तिथ तेरने । म्हा महीना मांही । महीना. । आ करी लावणी । जेपुर शहर सवाइ । जडाव कहे जिनराज लाज हे तुमने । लाज. अब वेगी कीज्यो । सांर तारज्यो हमने । अछती वंछे छती रिध तुम त्यागी हो । रिध. ध. । ७ ।

जंबूजीको सत ढाल्यो लीख्यते

नमस्कार नव पद भणी । होग्रो उगंते भाण । कथा पड्ना साखसुं । करस्युं सील वखाण । १ । पाटोधर श्रीवीरना । श्री सुधरम गणधार । तेहना सिष्य हुवा दीपता । श्री जंबू अण-गार । २ । चरम केवली भर्तमें । इण चोइसी अंत । इणमें संका छे नहीं । भाख गया भगवंत । ३ । बाल विरभचारी परणने । त्याग दीवी प्रभात । कुटम सहु प्रतवोधने । लीयो आपनी साथ । ४ । सांभलज्यो सहु को सभा । विकाथा आलस छोड । विरला होसी जगतमें । जंबूरी जोड । ५ ।

ढाल पहेली

देसी सीलवंतीराचे । जंबुदीपरा भरतमें । देस मगध सुखकार । भवीयण राजगरह अति दीपतो । देवलोक अनुहार । भवी. सुणज्योजी चीरतसुभावेणो । आंकणी । १ । नाग वगीचा वावडी । गढमिंद्र बाजार । भ. सेठ बसें सन्यापती । लीछमीरो अवतार । भ. सु. । २ रीखवदत एक सेठ छे । सोनैया छिनसें कोड । भ. भवनादिक रिध सोभती । और नहीं उण जोड । भ. सु. ३ । सेठाणी छे धारणी । सुती सेज मोझार । भ. सुपनो पूछे भरतारने । होसी पुत्र उदार । कुल मंडण कुल दीवडो । सुणने हरक अपार । सुंद्र । सुं. ५ । दोषण टाले गरभना । देती दान विचार । भ. पूरे मासे जन्मीयो । जाणे देव कुंवार । भ. सु. ६ । जन्म म्होछव मांडीयो । खरच्यो धन अपार । भ. कुटम सहुनी साखसूं । जंबू नाम कुंवार । भ. स. ७ । बाल

निभेरे लग रइ घर ले तांणोरे। वेरागी थयो मारो जायो जंबू कवारोरे। ते किम राखीए। प्यारो प्राण आधारोरे। वे. १। आंकणी। कुण घरको कुण पारकोरे। सुतलसकी मनवार। पुत्र मित्तण मिंत्री मरण। थांरएकला मानोरे। वे. २। इम सुणता संका पडीरे। डन डन भर गया नेण। हे जाया किम बोलतोरे। आज ओपरा वेणारे। वे. ३। भवसागर में भटकतांरे। मिल गया सुद्रमसेण। वचन अपूरव सांभल्यां रे। खुल गया अंतर नेणोरे। वे. ४। सुणवो ते तो सत छे रे। करवो अवसर देख। सुंजाणो तूं नानडयांरे। बोलो आण विवेकोरे। वे. ५। जाणुंछुं सही मातजीरे। मरणो पग पग लार। नहीं जाणुं किण थानकेरे। किण वेला किण वारोरे। वे.। ६। सगपण सहु संसारनारे। मील्या अनंती जीवार। धर्म सामग्री दोयलीरे। दुलव ए आचारोरे। वे. ७। हित वंछो ज्यो पुत्रनोरे। द्यो संजमरोजी साज। काल तके सिर उपरेरे। ज्युं ज्युं तीतर उपर बाजोरे। वे. ८। चित चमक्यो ठमक्यो हीयोरे। आजनिहेजोरपूत। जाणुं किण भरमावीयोरे। किम रहसी घर सुतोरे। वे. ९। खबर नही छे आजरीरे। कुंण करे कालरी बात। करणी जासी आपरीरे। कुण बेटो कुण मातरे। वे. १०। इम सुणतां धसको पडयोरे। धरणी ढली ततकाल। जांणीज्यो जाससीरे। दोरी पेटनी भालोरे। वे. ११। घाल्यो सीतल वायरोरे। चेतनता थइ साए। कां सिरजी नही वाभडीरे। विलख वदन विल लायोरे। वे. १२। धीरज राखो मातजीरे ग्यानी वचन वीचार। मरता जाता नै रहेरे।

हुन्नर होय हजारोरे । बे. १३ । गोली टटकी खायनेरे । अमरख आणीरे रीस । हिरगज जावा दु नहीरे परणो बीसवा बीसोरे । बे. १४ । पुत्र एक जन्मा पछेरे । करजो थांरी जीदाय । पोतो गो बीलायनेरे । बहुए लगावो पायोरे । बे. १५ ।

दोहा । हे माता प्रणायने कसी पूरस्यो हुंस । चोथो व्रत में आदरो । जाव जीव करसुंस । १ । तो पिण मनरी काढवा । सबने दीयो जताय । ब्याव रचाउ पुत्रनो । ज्यो आवे थारी दाय । २ । निज २ तात भणी कहे । पुत्रा चत्रसुंजाण । जंबूजी बिन ओर । प्रणबारा पछखाण । ३ । मात पीता बेहु हरखसुं । ब्याय कीयो तिण बार । कोइ नन्याणु डायजो । भरीया द्रव भंडार । ४ । प्रण पदारथां पदमणयां । माता करती कोड । अखीरइज्यो लालजी । कान गोप्यांरी जोड । ५ । पीलंग पथरणा सांवटू । चउदिस लटके लुम । बेठा ध्यान लगायने । जोगी जीम धर मून । ७ ।

ढाल चौथी

देसी मोत्यांरो गजरो भूली । मिलकर आठूइ नारी । ए तो सज सोले सिणगारी । रिकम भीमकती आइ । जंबूजी नहीं बतलाइ । सुणो रडीयाला । मुख बोलोनी वचन रसाला । आंकणी । १ । सामोइ नही भाखे । सब उपी नीसासा नाके । आइ जैसी नहीं आइ । इम उभी मनमें पिसताइ । सु० । २ । कोइ रीत भात नही राखी । आइ प्रथम कवलमें माखी । तो भोजनरीकांइ आस सबकीनी आप निरास । सु० ३ । हुस बणी ले हमने । सो

गइ मनकी मनमें । चुक नही पिया थारी । करणीमें कसर हमारी सुं ४ । कोइ सार न पूछी वाती । पिया कठण वोहोत तुम छाती । चुक होवे तो वतावो । विन कारण किम कलपावो । सुं० ५ । गांठ हीयारी खोलो । म्हा सूं हसकर मुखडे वोलो । मैंउवी आप हजुरो । अव आस हीयारी पूरो । सं० ६ । वोल्या विन नहीं सरशे । वतलाया जीवडो त्रसे । हुकम करो तो वेठां । अव कांइ मरजी थारी सेठां । सुं ७ । आद्र नही सतकारो । उतमरो नहीं आचारो । में जवरीसुं नहीं आया । थे पकड हाथने लाया । सुं. ८ । त्यागे सो किम परणे । मैंतो वेठस्यां थारे धरणे । में लागी थारी लारे । परणोसो पार उतारे । सु० ९ । म्हाने आडाने किम प्रणी । वारे हिवडे कपट कतरणी जोसीडे दियो वीसवासो । घर हाण लोकमें हासो । सु० १० । मत करो खाचा ताणी । पतली छाछ खमे नहीं पाणी । दातासुं सुम भलेरो । वेतो उतर देवे सवेरो । सुं० ११ ।

दोहा । उत्तर पेलो जाणज्यो । मुखड न वोले वेण । सामोइ जांके नही । दूजो उतर पीछाण । १ । इम सुणतां सासे पडी । धारी न रही धीर । शेप २ अंग सालीवो । वचन रुपीयो तीर । २ । हे सुख लेणी सुंदरी । भोग रोग सप जान । ग्यानी देवा भाखीयो । विष मीलियो पकवान । ३ । देवतणा सुख भोगव्या जीव अनंती वार । जिणसं दुलव जाणीए । मानवरो अवतार । ४ । त्यांग्या विन तिरपत नही । निसचे ग्यानी वचन । त्रियोवेतो त्यागदो । डिढ राखो निज मन । ५ ।

ढाल पांचमी

देसी धन धन साधुजी सहे परीसा। मीलकर सारी न्यारी न्यारी। अद्‌भुत कथा बणायजी। पितमने विलमावा काजे। कहेतुं जुगत लगायजी। १। धन धन जंबू कवर वेरागी। धन ज्यांरो अवतारजी। कनकाचल सम मन वचकाया। कोइ वाजे वाए हजारजी। धन० आं० २। के थाकी कोइ नही रह वाकी। कहवा जोगी हामजी। कायर वे सो तुरत डिग जावे। पिण सुरा जंबु स्यामजी। ३। कहणी वे सो ओर कहीजे। बोलो सुत्रन्यायजी। कु हेतु कोड कहो तो। मारी न आवे दायजी। ध० ४। मैंपिण कहुं कोइ कथा अनेरी। ज्यो सुणो चित लगायजी। सगली सनमुख होय कर जोडी। कहतहत वचन फुरमायजी। ध० ५। हेत दिसटंत केइ जुगत करीने कारण न्याय मीलायजी। रसक कथा ललीतंग कुवरनी सुण मन कंपायजी। सु. । ६। कहतां कहणी गइ बहु रेणी कर बिधानो भोरजी। सुबट पांचसें लारे ल्यायो। आयो प्रभो चोरजी। ध० ७। धनरी पेटी बांधी सेठी। मेली माथा मालजी। जंबू देखी गइ सब सेखी। पग चिपीया ततकालजी। ध० ८। चउदिस पेखे ओर जं देखे। लठा जंबू संतजी। ज्यो मुज पग उठे धरतीसुं। जाय पूछुं विरतंतजी। ध० ९। इम कहतां खटके पग छुटा। चडियो म्हल मेंभारजी। आठुनार थइ निंद्रा वस। जागे जंबू कुवारजी। ध० १०।

दोहा। हाथ जोड प्रभो कहे। सांभल किरपानाथ। विद्या जवरी आपरी। में देखी साचात। १। विन कुची तालां खूले

गइ् मनकी मनमें । चुक नही पिया थारी । करणीमें कसर हमारी सु ं ४ । कोइ् सार न पूछी वाती । पिया कठण वोहोत तुम छाती । चुक होवे तो वतावो । विन कारण किम कलपावो । सु ं० ५ । गांठ हीयारी खोलो । म्हा सूं हसकर मुखडे वोलो । मैंउवी आप हजुरो । अव आस हीयारी पूरो । सं० ६ । वोल्या विन नहीं सरशे । वतलाया जीवडो त्रसे । हुकम करो तो वेठां । अव कांइ मरजी थारी सेठां । सु ं ७ । आद्र नही सतकारो । उतमरो नहीं आचारो । में जवरीसु ं नहीं आया । थे पकड हाथने लाया । सु ं. ८ । त्यागे सो किम परणे । मैंतो वेठस्यां थारे धरणे । में लागी थारी लारे । परणोसे पार उतारे । सु० ९ । म्हाने आडाने किम प्रणी । वारे हियडे कपट कतरणी जोसीडे दियो वीसवासो । घर हाण लोकमें हासो । सु० १० । मत करो खाचा ताणी । पतली छाछ खमे नहीं पाणी । दातासु ं सुम भलेरो । वेतो उतर देवे सवेरो । सु ं० ११ ।

दोहा । उत्तर पेलो जाणज्यो । मुखड न ओले वेण । सामोइ जांके नही । दूजो उतर पीछाण । १ । इम सुणतां सासे पडी । धारी न रही धीर । शेष २ अ ंग सालीयो । वचन रुपीयो तीर । २ । हे सुख लेणी सु ंदरी । भोग रोग सम जान । ग्यानी देवा भाखीयो । विष मीलीयो पकवान । ३ । देवतणा सुख भोगव्या जीव अनंती वार । जिणस ं दुलभ जाणीए । मानवरो अवतार । ४ । त्यांग्या विन तिरण नही । निसचे ग्यानी वचन । त्रियोवेतो त्यागदो । डिढ राखो निज मन । ५ ।

ढाल पांचमी

देसी धन धन साधुजी सहे परीसा। मीलकर सारी न्यारी न्यारी। अद्‌भुत कथ बणायजी। पितमने भिलमावा काजे। कहेतु जुगत लगायजी। १। धन धन जंबू कवर वेरागी। धन ज्यांरो अवतारजी। कनकाचल सम मन वचकाया। कोइ वाजे वाए हजारजी। धन० आं० २। के थाकी कोइ नही रइ वाकी। कहवा जोगी हामजी। कायर वे सो तुरत डिग जावे। पिण सुरा जंबु स्यामजी। ३। कहणी बे सो और कहीजे। बोलो सुत्रन्यायजी। कु हेतु कोड कहो तो। मारी न आवे दायजी। ध० ४। मैंपिण कहुं कोइ कथा अनेरी। ज्यो सुणो चित लगायजी। सगली सनमुख होय कर जोडी। कहतहत वचन फुरमायजी। ध० ५। हेत दिसटंत केइ जुगत करीने कारण न्याय मीलायजी। रसक कथा ललीतंग कुवरनी सुण मन कंपायजी। सुं. । ६। कहतां कहणी गइ बहु रेणी कर विद्यानो भोरजी। सुभट पांचसें लारे ल्यायो। आयो प्रभो चोरजी। ध० ७। धनरी पेटी बांधी सेठी। मेली माथा मालजी। जंबू देखी गइ सब सेखी। पग चिपीया ततकालजी। ध० ८। चउदिस पेखे और जं देखे। नठा जंबू संतजी। ज्यो मुज पग उठे धरतीसुं। जाय पूछुं विरतंतजी। ध० ९। इम कहतां खटके पग छुटा। चडियो म्हल मेंभारजी। आठुनार थइ निंद्रा वस। जागे जंबू कुवारजी। ध० १०।

दोहा। हाथ जोड प्रभो कहे। सांभल किरपानाथ। विद्या जवरी आपरी। में देखी साचात। १। विन कुची ताला खूले

। भगत निंद्रा थाय। दोय लेइ एक थोभणी। दीजे करी पसाय। २। रे भोला समजे नहीं। विद्या चलावे कुण। ज्यारे धनरी चायना। ते करसी टासण टुंण। ३। विद्या सब संसारनी। भावे जाणम जाण। साचा विद्या धरमरी। पावे पद निरवाण। ४। नारी नागर सारखी। भगरो अनरथ मूल। दिन उगे गृह त्यागसुं। देदो त्यां परधुल। ५। हे सामी किम छोडस्यो। इचरज वाली वात। ए घर कंचन कामणी। देव भवन साचात। ६। मात पिता प्रवारनी। कुण करसी संभाल। झुर झुरने मरजावसी। दोरी मोहनी झाल। ७।

ढाल छठी

देसी डफकी छे। मातपीता सुत वेन भारज्यां। मुतलब सब लागे पूठोरे। जग झूटो हारे जग०। जाय जनम खूटो। ज०। आंकणी। १। विन मुतलब कोइ ढीग नहीं वेठे। दिसोदीस जावे उठोरे। ज० २। छिन २ उमर जावेरे छीजती। भजन करी भरलो उंठोरे। ज० ३। नारी सारी जब लग प्यारी धन कमाय भरे मूठोरे। ज० ४। सुखमें सीर पडरे सजनको। दुखमे दूर रहे रुठोरे। ज० ५। भर्यारे चरसने हरक करजेले। रीतो कर पटके पूंठोरे। ज० ६। तन धन जोबन पलकमें पलटे। तप जप कर लावो लुंटोरे। ज० ७। जमका दूत पकड ले जासी। किणरे भरोसे गाफल वेठोरे। ज० ८। धन धन करतो फिरे रे भटकतो। घाड धरे धरतीमें सेठो रे। ज. ९। सुख चावो तो संजम लेलो। चोरासीरो तांतो टूटोरे। ज० १०। इत्यादिक

उपदेस सुणीने । अभो सुभट सहत उठोरे । ज० ११ । आप गरु हम सब तुम चेला । राखो चरण सरण पूंठोरे । ज. १२ ।

दोहा । इम कहतां आठु जणी । बोली टटकी खाय । परधन लुटे पापीया । बोलंतां न लजाय । १ । चोर अन्यायारे सिरे । न्याय भरे नहीं भीख । आप न जावे सासरे । दे ओरांको सीख । २ । सात पांच विसवासने । मूसा मार मंभार । मक्काजीरो नाम ले । म्याउ २ पूकार । ३ । बाइजी साची कही । मैं पापी निरधार । देखा किण विध राखस्यो । मन मोहन भरतार । ४ । प्रतबोधी बाला सबी । और पांचसें चोर । सांसु-सुसरा आद दे । मात पिताजी और । ५ ।

ढाल सातमी

देसी सुर २ कायर को हिवडो थरे हरेजी । आंकणी । मोटी बणाइ एक सिबिकाजी । बेठा छे जंबू कवारजी । वल विसेखे ज्यांरी कामण्यांजी । मात पिता परवारजी । सु. १ । बाजा तो बाजे सबद सुवावणाजी । कायर हीयारा वे दिलगीरजी । कठण परीसा सहण दोयलाजी । केलजूं कोमल सरीरजी । सु. २ । आवे जमाली जीम नीसरयांजी । आया छे मज बजारजी । जाचक देवे बिरदावल्याजी । चरंजीवो जंबू कवारजी । सु. ३ । चड चड चोखां जोवे कामण्यांजी । झांके जाल्यामें मूडा गालजी । काले परणीने लारे नीसरयांजी । आठु सुंदर सुखमालजी । सु. ४ । कोइ एक एक नरनारी मुखसुं कहेजी । धन २ जंबूकवारजी । बाल विरमचारी नारी परिहरेजी । सफल करे वा अवतारजी । सु. ५ ।

कोइ एक मूरख माधो धुणनेजी। इणपर बोले अयाणजी। अन धन लीछमी घरमें छे घणीजी। नही दे प्रमेसवर यांने खाणजी। जु. ६। मोटे मंडाणे आया बागमेंजी। मेटा श्री गणधरजीरा पायजी। दिख्यां दीरावो डील करो मतीजी। खिण एक लाखीणी सी जायजी जु. ७। धन धन जंवु कुवारनेजी। चारीत्र लीयो घणी चुंपसुंजी। पांचसें सताइस जणा लारजी धन धन कहे सब चोरनेजी। तार दीयो प्रवारजी। ध० ८। सुमती अराधे गुपती घोपवेजी। संजम सतरे प्रकारजी। सुत्र सीख्यां बिने अरादनेजी। पूछीने कीया निरधारजी। ध० ९। बांचणी जंबूस्यामनीजी। आजे तांइ चली जायजी। उपगार कीयो भव जीवनेजी। हलुकर-मीरी आवे दायजी। ध. १०। सोला बरसारा संजम आदरयोजी। करणी करीने काडयो सारजी चरम सरीरी। चरम केवलीजी। पुध्यां छे मुगत मजारजी। जु. ११। पाट दीपायो श्री वीरनोजी। तारयां घणा नरनारजी। चोथा आरामांए जनमीयाजी। पांचमे कीयो खेवो पारजी। जु. १२। ढाल कथा ने चोपइ देखनेजी। अलप कियो छे विसतारजी। संखा हुवे तो देखीएजी। जंवू पइने इदकारजी। १३। जु.। न्यून अधिक जे में कयोजी। हस्व दीर्घ अयांणजी। मिछामी दुकडं तेहनोजी। ग्यानी बचन प्रमाणजी। ध० १४। समत १९ सें बर्स बासठेजी। होली चोमासी प्रभातजी। जेपुरमांए जडावजीरे। नित नित जोडे दोन्यूं हाथजी। ध० १५।

कलस। जंवु सामी। मुगत पामी। वंदु नामी। सीस ए। इदक ओछो। कवि सोचो। गुनो करो बगसीस ए। गु० १।

आपकारज सिध कीनो । लीनो नहीं मुज लारए । सेवक विन कुण सेव करसी । खोलो मगत दवार ए । खो. । २ । मेछुं अधम अनाथ प्रभुजी । जनम जनमको चोर ए । भम्यो वाद भव चक्रमांए । जव आयो तुम ओर ए । अ० । ३ । पाप चूरो आस पूरो । सेवक सरणे लीजीए । बार बार मेरी अरज एइ । अखे अमर पद दीजीए अ. ४ । आवण जावण फेर जगमें । कदय न पाउं दुखए । चरण लाग तुम सेव करसुं । आपो अविचल सुखए । प्र. ५ ।

दीवालीकी ढाल लीख्यते २८५फ

देसी पीचकारीनी । जीण दीन मुगत गया जिनवरजी । सो दिन जाक जेमालीरे । ऐसी दयारी दीवाली । हे जिन क्रीमथे वालीरे । ए. । आंकणी । १ । दान दीपक समगतरी वाटी । ग्यान जोत उजवालीरे । एसी० । २ । सत सिनान सिणगार सीलरो । दीप रुपे रसालीरे । ३ । तप पकवान मरमका मेवा । जीमो भर भर थालीरे । ए. ४ । खिम्याकी खीडकी । जसका भरोका । जैणारी राखो जालीरे । ए. ५ । समरस जेहे जकर पोढो । समता रुरो घर नारीरे । ए० ६ । संजम म्हल सीवपुरकी । अष्ट करमने टालीरे । ए. ७ । नींद निवार मार निज मनने । फेरज्यो नवकरवालीरे । ए० ८ । कहत जडाव जेपुरके मांइ । वरने मंगल मालीरे । ए. ९ ।

पारसनाथजी की लावणी ली०

देसी । लोटण रूवारी छे । काल अनंता दुख सया माराज मणो प्रभुजी हो । सुणो. मारा अंतरजामी । अनमासुं सयाए

न जाय। केतो सरणे राखल्यो । म्हाराज सु. म्हा. के मारा मरण मीटाय। जी.। मारा पारस प्रभु कर्म भमावे मोय तार। आंकणी। १। नामी चाकर आपरो मा.। सु. मा.। छोडो किम अंके लगाय। खाना जात गुलाम म्हाराज। सु. मारा. मेटो मारी भव दुखदाय। जी. २। चाकर चूके चाकरी माराज। सु भा. ठाकर करे निरभाव। अवगुण गुण कर लेखवो। म्हा. सु. मारा. आप छो सरल सभाव। जी. ३। कुंण सुणे किणने कहुं माराज। सुं. मारा. कुण आगे करूं ए पुकार। और नहीं तुम सारखो माराज। सुं. मा. ढूंढ लीयोरे संसार। जी. ४। आस करी लीयो आसरो माराज। सु. मा. सरणे आयारी राखो लाज। चर्ण समीपे राख ल्यो माराज। सु. मा. सीजे मारा वंछित काज। जी. ५। मैं अपराधी अनादको माराज। सु. मारा. देख रयाछो जगदीस। तारक विरद वीचारने माराज। सु. मारा अंतरजामी गुनो हे करो वगसीस। जी. ६। १९ सें वरस बासठे माराज। सु. मारा. म्हा वद नोमी गुरु वार। जेपुरमांए जडावनी माराज। सु. मा. वीनतडी अवधार। जी. मुक्त्यांरा मेंवासी।

देसी। मतकर मान गुमान ए दिन सदा न रहेगे तियार म. प्रभुजीवो पास। जीनेसर तुम गुण अनंत अपार। उल लालो। सुर गुरु निज मुख स्वरसती गावे। तोइय न आवत पार। प्रभु.। आंकणी। १। कमट विडारण नागउवारण। समलायो नवकार। धरण इंद्र पदमावती दोन्यूं। मानत... उपगार। ... मैं

मतहीन दीन दुख पाउं । भमत २ गयो हार । दीन दयाल दया कर मोपे । पापी पार उतार । प्र. ३ । पासे पाषाणनांम तुम प्रगटयो सोवी सुखदातार । प्रतक्ष तुं रसेपस्वर पारस । भवोदधी पार उतार । म. ४ । और न चाउं दरसण पाउं । आउं तुम दरबार । टुक भर म्हर करो अलवेसर । दीज्यो निज दीदार । प्र. ५ । मन मंगल चित चंचल घोडा । दोडत फिरत उजाड । घेर घेर ल्याउं निज गुणमें । ठहरत नहीं हे लीगार । प्र० ६ । १६ सें तेसठ तेरसने । जेपुरमें वरसाल । तुम गुण माल जडाव जपत है । वद पख दीपक माल । प्र. ७ ।

पार्सनाथजी

देसी । देखो बाइजी इण मोरीयारो रूपजी. । भामानंदण पास जिणंदजी । भां. कोइ म्हर कीरीने सामो जांकज्यो । को. हुं छुं प्रभुजी अधम अनाथजी । हु. कोइ सरणे आयांरी लज्या राखज्यो । १ । कोइ एक ध्यावे ब्रिरमा बीसन महेसजी । को. कांइ मेंतो जीकध्याउं प्रभु पासने । कां. कोइ एक मागे अन धन लीछमी चीरजी । कोइ. कांइ अविचलरेक पदवी दीज्यो दासने । २ । कोइ एक नावे गंगा जमना तीरजी । को. मेंतो जीकनाउं निजगुण नीरमें । धोइ मारा भव २ संचित पापजी । धो. कोइ खातोजी खतास्यां प्रभुजीरा सीरमें । ३ । कोइ एकहेरे भवत फाडजी । को. कोइ प्रभु बिराज्या मसतकलोकरे । थारे मारे आगम पिछाणजी । था. कांइ भोलारे भरमाणा घोषे मोखरे । ४ । कोइ एक थापे धात पाषाणजी । को. कांइ जोत अरुपी आप बिराजता

। थेछो प्रभुजी निरंजन निराकारजी । थे. कांइ अखेजी अचल सुख सासता । ५ । कोइ एक पूजे दीपक चवर दुलायजी । को० मेंतो जीक पूजू तीकरण जोगसु । कोइ भावे जीक पूजू तीकरण । कोइ एक चोढे पान सुपारी फुलजी । कोइ. कांइ प्रभुजी निरागी विषे भोगसु । ६ । कोइ एक नाचे घुघरीया गमकायजी । को० कांइ प्रभुजील लीन रहे निज ध्यानमें । कोइ एक गावे ताल मजीरा तानजी । को. कांइ प्रभुजी प्रवीण पदारथ ग्यान में । ७ । दूढत २ मीलीयो साचो देवजी । दू. भव २ जीक सेवा होज्यो आपरी कांइ भ. थेछो प्रभूजी जीवन प्राण आधारजी । थे. कांइ लपटीजी चरणामें करस्युं चाकरी । ८ । १९ स बरस ६३ साल रसालजी । कांइ जेपुरमें कर जोड कहे जडावजी । थे छो प्रभूजी दीन दयालजी । थे. कांइ भव जलरेक डूबत तारो नावजी । ९ ।

गोतमजीरो स्तवन लीं०

चाल । नित नाम जपो श्रीनो केडो । वसुभुत पिता पृथवी माता । ए तीनुंइ सगा भिराता । पो उठी नित पाए पडो । श्री गोतमजीरो ध्यान धरो । १ । धर्मध्यान सुकल ध्यावो बली समरणको लीजे लावो । आरत रुद्र दूर करो । श्री. २ चिंतामण चींता चूरे । अरु कलप ब्रिज वंछीत पूरे । कामधेन पय पान करो । श्री. ३ । सोन पोरसो घर आवे । बिन सीखी विद्यां सिद्ध थावे । देस विदेसां कांइ फीरो । श्री. ४ । सींघ सर्प सब भे जावे । अरुं चोर धाड अंधा थावे । चीन्ता आरत विघन हरो । श्री. ५ । दान मान राजा देवे । अरु न्यात जातमें जस लेवे । वैरी

दुसमन पाए पडो । श्री. ६ । विस प्याला इमरत थावे । वल रोग सोग घर नहीं आवे । भुत पिसाच नही लागे चेडो । श्री. ७ । गुण इतना इण भव थावे । पछे सुखे सुखे मुगती जावे । संसार समुद्र वेगतिरो । श्री. ८ । १६ सें तेसट वरसे । स्हर जेपुरमांए जडाव कहे । भजन करी भंडार भरो । ६ ।

सोला सतीयांरो स्तवन लीख्यते

राग गोतम नाम जपोजी प्रभाते । सोला सती समरो सुखदाइ । ज्यां घर आणंद रंग वधाइ । नांव लीयां नव रीद सीध आवे । भव भव संचीत पाप पुलावे । सो. । आंकणी । १ । ब्राह्मी सुंद्र दोन्यूं वाइ । वालपणे सुध समकित पाइ । लीपी अठारा रीखवजी सीखाई । पवीतणीरी पदवी पाइ । सो० २ । सीता कुंथा राजुल नारी । प्रतवोध्या रह नेम कुवारी । सातसें सखीयां संग लेइ सारी । संजम ले चढ गइ गीरनारी । पीव प्हलाइ सीवगत संभारी । सो० ३ । चनणवाला चेलणा राणी । सुत्रमें जिनराज वखांणी । वीर जिणंदनी आद सिषणी । मुगत गइ कर उत्तम करणी । सो० ४ । कोसल्या सेवा प्रभावती । पदमावती चोलादवदंती । चीर फाड वनमें तज पती । सील प्रभावे सिव गइ मतवंती । सो० ५ । सुलसां सुभद्रा सती जाणी । काचे सुत कुवाथी ताणी । चंपा पोल उवाड भली परे । सील प्रभावे थइ सुर वाणी । सो० ६ । मरगावती सती सोलमी जाणी । भाव सहत वंदो भव प्राणी । ओगणीसें तेसठ म्हा महीने । जेपुरमांए जडाव वखाणी । सो० ७ । पोह उठीने कोइ सीस नमावे ।

मन वंछीत सुख संपत पावे । जन्म जरा ने मरण मीटावे । पांचवी गत तणा सुख पावे । सो० ८ । हुइ होवे नै वल होसी । ज्यारा नाव सूत्रमें जोसी । ग्यानी वदे सो मुनीए वखाणे । छदमस्त तो विवहारथी जाणे । सो० ६ ।

देसी । जीला मारी झोटरो उदीयापुर मालेरे । नव घाटी उलंगनरे । प्राणी । पायो नर भव सार । जोग लयो दस बोल-नोरे । प्रा० सो एलो मत हार । चतुर नर चेत जा आछो अवसर जावेरे । लाखां कोडां खरचतां । फिर पाछो न आवेरे । आंकणी । १ । घर धंधारे कारणेरे । उठे आदी रात । सोच करे संसारनो । कोइ नही है तीरणरी बात । च० २ । तन धन जोवन जाएछेरे प्रा० जेम नदीरो पूर । पोट सीर पापनीरे । भूं भारी घर दूर । च० ३ । काचो कुंभ सीसी काचनीरे । प्राणी तिणरो कीस्यो बीसवास । जतन करंतां जावसीरे । जंगल होसी वास । च० ४ । तेल जल्यो वाती बूजीरे । प्रा० काया में घोर अंधार । एरण ठबको मीट गयो रे । प्रा० कहां गया बोलण हार । च० ५ । कुटम कवीलो पावणो रे । प्रा० मेलो मडीयो सराय । थित पाकां सब बीखरे । प्रा० जिम आयो जिम जाय । च० ६ । बूडा बडेरा सब गयारे । प्रा० केइ गया छोटा बाल । देखंताइ ले चल्ये रे वेरी । ऐसो कसाइ काल । च. ७ । धन माल धरीया रहारे । प्रा. रह गया लेण न देण । इम जाणी धर्म कीजीए । आगे कोइ नही थारो सेण । च. ८ । ओगणीसें वरस तेसठरे । प्रा० जेपुर स्हर मझार । सीख दीनी जडावजी । बसंत पंचमी सुकरवार । च. ६ ।

देसी बीजारी । समद्र वे तो डांकल्यूं । जीवाजी । हारे जीवा भव जल डाक्यो न जाए । कर्म गत बांकडी । जीवाजी । क० । आंकणी । १ । बालक वे तो राखलूं जी. हा. जीवा मन वस राख्यो न जाय । २ । सांकल वे तोड ल्यूं । जी० हा० जीवा त्रिसना तोडी न जाय । क. ३ । घोडो वे तो मोडलुं । जी. हा. जीवा । ममता मोडी न जाय । क० ४ । डोरी वे तो खेंच ल्यूं । जीवा. हा. जीवा० जीवा भवतिथ खेंची न जाय । क० ५ । अन धन लीछमी वेंछ दूं । जी. हा. जीवा आपदा वेछी न जाय । क० ६ । खोटो वे तो टालदयु । जी० हा० जीवा होत बटाल्यो न जाय । क० ७ । धातुं वे तो गालदूं । जी. हा. जीवा गरब न गाल्यो जाए । क० ८ । बांदयो वे तो खोलदयूं । जी० हा० जीवा नेह टूठां खोल्यो न जाए । क. ९ । सोनो वे तो तोल ल्यूं । जी. हा. जीवा न्हे लागो तोल्यो न जाए । क० १० । हीरो वे तो प्रखल्यूं । जी. हा. जीवा न्हे लागो तोल्यो न जाए क० १० । हीरो वे तो प्रखल्यूं । जी. हा. जीवा धर्म न प्रखो जाय क० ११ । पाणी वे तो थाग ल्यूं । जी. हा. जीवा ग्यानरो थाग न पाए । क० १२ । रुस्यो वेतो मनाय ल्यूं । जीवा० हा० जीवा मरता राख्या न जाय । क० १३ । लडीयो वेतो खमाय ल्यूं । जी. हा. जीवा हंस उठो नरहाय । क. १४ । घाव लगे तो भूलीए । जी० हा० जीवा कू बचन भुल्या न जाय । क. १५ । पकडयो वेतो छोडदूं । जी० हा० जी० हा० जीवा कुलछण छोडयो न जाए । क० १५ वैरी वेतो जीतल्यूं । जी.

हा. जीवा म्हो क्रम जीत्यो न जाए । १७ । सींघ सपने वसे करु । जी. हा. जीवा आतमा वस नही थाए । क. १८ । कागद वेतो वांचलु । जी० हा० जीवा कर्म न वाच्या जाए । क० १६ । सुगत मीले तो जांचतु । जी. हा. जीवां और न आवे मारी दाए के. २० । पोस महीना तेरठे । जी. हारे जडाव कहे जेपुरमांए । क. २१ । पद्मप्रभुजीसु वीनती । जी. हारे तु तो वेगी कीजे साय । क. २२ ।

मुनीराजना गुण

दोहा । आद नमू अरिहंतने । म्हा वीर जिनचंद । गुण करवा मुनीराजना । म्हो मन इदक आणंद । १ ।

देसी । हरीजीरो राख भरोसो भारी । व्होत दीनाकी थी अवीलाखा । वाट जोता नरनारी । म्हर करी करुणानिध सागर । पूरी आस हमारी श्री जीरी सुरत लागे प्यारी । सुंद्रा मोवनगारी । म्हाराजारा द्रसणरी वलीयारी । में वांरे व्हार जाउ वारी । श्री जी. आंकणी । १ । वीचरत गिराम नगरपुर पाटण । व्होत करो उपगारी । मालव देसपे कीरपा विसेसन । जेपुर केम विसारी । श्री. २ । पाटे वीराजे छाजे घाजे । सींघ ज्यूं शब्द उचारी । चरचा त्रिमकीत वीजरी चीउदीस । ग्यान घटा चढी भारी । म्हा. ३ । वाणी सुधारस इमरत धारा वरसे निरमल वारी । मीथ्या खार धुपे आत्मको । समअंकुर उगारी । ४ । ससि जीम सीतल वदन तिहारो । भविक चकोर निहारी । झरत अमीरस हीवडो सीचत । फूली पुरखदा सारी । श्री० ५ । सीतल ल्हर

समताकी । त्रिसना तिरखा बुझारी । दिल दादुरने प्रेम पपइयो । पिउं पिउं करते पुकारी । श्री० ६ । महिमा मोरनि होर करत हे । निरत रच्यो है भारी । म्हे आवो २ श्रावक सनमुख । खुल रइ केसर क्यारी । श्री० ७ । विन रितु बादल बीज चमके । गाजे घटा चढीकारी । अतसे धारी । बुध तुम भारी । कहां लग करुं वीसतारी । श्री. ८ । चोसठ साल जडाव जेपुर में । चेत एकम उजीयारी । सुण वाणी हरकाणी हीयामें । जडाव देख छवी थारी । म्हा. ९ ।

साध बनणा लीख्यते

दोहा । सासण नायक समरीए । त्रिधमान जीनचंद । धर्म आचारज आद दे । बंदू सरव मुणंद । १ ।

देसी रासकी

आद नमुं अरिहंतने । सिध सकल गुण हुवा प्रसीध तो । गूण छती सबी राजता । आचारजनमता नवे निधतो । १ । ज्यां पुरसाने मारी वंनणा । होवो २ दीनमांए चार हजार तो । भव २ सरणोजी आपरो । और नही मुजे कोइरे आधारतो । धन २ मोटा मुनीसरुं । २ । चोथ हो पद उवझायजी । भाव धरी निज नमुंजी सीसतो । अंगइग्यारा आदे करी । भण ए भणावे । गुण सोभे पचवीसतो । ज्यां० ३ । साध सकल पद पंचमें । दीप अढाइने पनरेजी खेत्रतो । गुण सताइस वीचरता । द्रसण देखी ठरे मुज नेत्र तो । ज्यां. ४ । फेर नमु सरवे लोएने । ग्यान

द्रसण गुण साधे अपार तो । धर्म आचारज मांएरा । गुरणीजी संजम ग्यान दातार तो । ज्यां. ५ । श्री श्रीमिंद्र आद दे । चव-दसे बावन नमुं गुण धार तो । अनंत चोइसी आगे थइ । जेहना केवली सरव अणगारतो । ज्यां० ६ । सासण श्री व्रिधमानरो । वरत्यो छे वरते न वरतण हारतो । केइए मुनी मुगते गया । के एक भव कर जावण हारतो । ज्यां० ७। चवदे पूरव धर केवली । अवद नाणी मन प्रजव धारतो । थेवर थिर करी आतमा । तप करी तिर गया भव दधी पारतो । ज्यां० ८ । आद जिणंद आदे करी एकसो पुत्र न पूत्रीजी दोयतो आट पाट श्री भरतना हस्तीरे होदे माताजी सीध होय तो । ज्यां. ९ । कपील मुनी हुवा मोटका । पांचसे भीलाने दीयो प्रमोदतो । नमीए नमाइ निज आत्मा । एक समे हुवा च्यारु प्रति बोधता । ज्यां० १० । गोतम तिर गया तीरपे सोलइ ओपमा सोभे सीरीकारतो । वउ सुरती च्यारु सींघमें । सारण वारण धारण्ण हारतो । ज्यां० ११ । पेसमे प्रणाम कीजीए । हरक धरी हरकेसीन पाए तो । चीत मुनीसर चीत धरुं । एकुं करे आद छउं मुनीराय तो । ज्यां० १२ । आहेढे पर चढ आवीयो । संजेतीराय भेटया गुरु पाए तो । संजम लेइ सुत्र भण्यां । एकले व्यार कीयो मुनी राय तो । ज्यां० १३ । खत्री हो राय चरचा करी । डिड करे समकीत देइ दिस्टंततो । जीन मारगमांए दीपता । कुण २ संत हुं वा महंत तो । ज्यां. १४ । दसाणभदर वीर वंदता । मान गाल्यों सक इंद्र देवतो । संजम लेइ सामा मडयां । हाथ जोडी करे चरणारी सेवतो । ज्यां.

१५ । राय करकंडूजी आद दे । कारण देखी मने धरयोरे वेरागतो । चकरी से दस मुगते गया । भरीयां भंडार रमण रीध त्यागतो । ज्यां. १६ । आठुंइ करम खपाएने । आठुंइ राम लीयो सुख मोखतो । सोलइ देसारो सायवो । राय उदाइ मन धरयो संतोष-तो । ज्यां. १७ । सुगरीव नगर सुवावणो । राज करे वलभद्र-रायतो । मिरगावती पटराणी । पुत्र जायो बहु आणद थाएतो । ज्यां. १८ । जोबननी भय जाणने । व्यावकीयो देखी सरखीजी जोडतो । महलामें सुख भोगवे । दास दासी राण्यां पूरे मन कोड तो । ज्यां. १९ । एक दिन म्हांख छे जालीयां । आवता दीठा छ-कायारा नाथ तो । रुप देखी विसमे थया । जाती वो समरण जाणी पाछली जाततो । ज्या. २० । धिक पडोरे संसारने । राग छोडी मने धरयोरे वेराग तो । मात पीताजीसु वीनवे । अनुमत दीजीए । मुज वडा भाग तो । ध. २१ । जाव जमाली जीम नीसरयां । जनम मरण दुख काटना पास तो । संजम लेइ सुत्र भण्यां । तप कर पामीयो सीवपुर वास तो । ज्यां. २२ । मुनीए अनाथीजी भेटीया । सेणकराय तिहा समकीत धार तो । जंबुजी हुवा चरम केवली । पाछे सु जड गया मोख दवारतो । ज्यां. २३ । और अनेक केइ हुवा । तेरइ ढालामें गणो वीसतारतो । मात पीता जिनराजरा । मुगत गया केइ समकीत धारतो । ज्यां. २४ । नून इदक जे मैं कयो अलप वुद्धि नहीं अकसर ग्यान तो । माफी करी गुनो वगसीए । ग्यानीरा वचन करुं प्रमाण तो । ज्यां २५ । तेसट साल सुहावणी । गूथी छे मुनीयतणी गुण माल तो ।

जेपुरमांए जडावने । चरणारो सरण होवो त्रिकाल तो । ज्यां०

दसाणभद्र राजानी ढाल लीख्यंते

दोहा । निमसकार नव पद भणी । होज्यो वारंवार । उत राधेन अढारमें । दसाण भद्र इदकार । १ । कैसु ढाल वणायने । सुणजो चित लगाय । हारयां नही सुरपत थकी । दीनो जग छीटकाय । २ ।

ढाल । कर असवारी राय संचरयांरे । आयो वन मभार हो । सुंजाण नर । निरामण इत उत डोलतोरे । भरमायो निज नार हो॥ सु० कोइ चतुर वीच्यारी ने चेतजोरे । १ । नरप पूछे तूं किम भमेरे । कहनी थारो भेद हो । सु. हाथ जोडी कहे रायनेरे । रुसगया हम देव हो । सु. को. २ । भेद सुणी नृप चिंतवेरे । देखो इणरो राग हो । सु. तिरण तारण वीतरागनेरे । हुं भुल गयो निरभाग हो । सु. ३ । देव रागी गुरु लालचीरे । खरचे लाखां कोड हा । सु. गाढी इणरे आसतारे वनमें भटके घर छोड हो । सु। ४ । नीरागी निर लालचीरे । मारा श्री गुरु देव हो । सु. तो हीव ढील करुं नहीरे । जाय करुं ज्यांरी सेव हो । सु. ५ । चतुरंगणी संन्या सजीरे । अंतेवर लेइ लार हो । सु० आडंबर कर आवीयोरे । करवा जीन दीदार हो । सु. को. ६ ; हरक हीएमावे नही रे । धरतो धरमनो राग हो सु. चरण भेटयां जिनरा-

जना हो। सारा मोटा भाग हो। सुजाण नर। को. ७। सनमुख बेठा वीरनेरे। बोले वे कर जोड हो। सु. माजी मैं किणइन वंदीयारे। कुण २ करे मुज होड हो। सु. को. ८। सक इंद्र मन चिंतवेरे। फोगट धरे अभीमान हो। सु. गरब गालु हिव एहनोरे। किण बीध रहसी गुमान हो। सु. को. ९। देवे सीन्यां वीसतारनेरे। आप चाल्या सुर राय हो। सु. आया मानव लोकमेंरे। दल बादल लीयो छाय हो। सु. को. १०। इंद्रतणी रीध देखनेरे। तुरत पाम्यो चीमतकार हो। सु. मान रवे किम मायरेरे। लेश्युं संजम भार हो। ११। आवो देवा सेवा करोरे। लागो हमारी जोड हो। सु. हुं रीध त्यागू आपणीरे। यावी करो मुज होड हो। सु. को. १२। या तो सगत न मायरीरे। थे मानी मछराल हो। सु० सूरपणे संजम लीयोरे। गरव हमारो दीयो गाल हो। सु. को. १३। और कहो तिमही करुंरे। थे मुज मस्तक मोड हो। सु. मैं हारयो तुम जीतयोरे। पाए पडयो कर जोड हो। सु० को. १४। धन श्री गुरु म्हावीरजीरे। धन २ थारी माय हो.। सु. निज अपराध खमायनेरे। आया जिण दीस जाय हो। स. को. १५। तेसट साल जडावजीरे। जेपुर सेखे काल हो। सु. प्रथम चेत शुदी सप्तमी करी संमपूरण ढाल हो। सु. को. १६। ओछो इधको जे कयोरे। सुत्र सेती विरुध हो। सु. मीछामी दुकडं तेहनोरे। कवीजन कीज्यो सुध हो। सजाण. को. १७।

मेगरथराजाकी लावणी लीखंते

देसी गोपीचंदरा ख्यालरी छे। संतनाथ भव पाछले सरे। मेगरथ नाम भूपाल। समगत धारीपर उपगारी प्रजानो प्रतीपाल। सरणे आयो न मूकीए सरे। लीवी अग्यां भाल हो। मेगरथ माराजा। पर उपगारी तारी आतमा। धन धन म्हाराजा। जिनपद पायो प्रमातमा। आंकणी। १। सक इंद्र मोत्रा करीसरे। धन मेगरथ राजान। जीव दया ज्यारे दिल वसीसरे देवे सुपात्र दान। दोय देव नहीं सरधीया सरे। आया धर अभिमान हो। में २। एक वण्यो पारेवडो सरे। कुजो हंसकथाए। लारे लागो आवीयो सरे। आगे पखी जाय। मे भिरांत मरणा थकी सरे। धसीयो खोला मांय हो। मे. ३। धुंजतो ढक राखीयो सरे। देथिर मारी ओट। ततखिण आयो पारधीसरे। करवा लागो चोट। हलकारा सामा हुवे सरे। ले हातामें सोट हो। मे० ४। धीर पसु समजाय द्यो सरे। नही जवरीरो काम। ज्यो चावेसो मागल सरे। मत लइणाको नाम। कोल देस्यामू मागीयो सरे। लेले हमपे दाम हो। मे० ५। भख माहरो पंखीयो सरे। छोडो चक्र सुजाण। गणा कसटसु लावीयो। मारे नहीं दाम सुं काम। भूखा मरता बापजीस। मारी नीकल जायली जानजी। मे० ६ लावो मेवा सुकडी सरे। ओर घणा पकवान। तिरपत होयने जीमले सरे। इम बोले म्हीराण। सरणागत किम दीजीए सरे। ए मुज जीवन प्राण हो। मे० ७। नही ल्यू मेवा सुखडी सरे। नही भावे पकवान। मंस आहारी कुल आचारी। किम छोडू म्हीराण।

ज्यो नही छोडो एहने सरे । तज देस्यु मुज प्राणजी । मे० ८ । फांसमंस मगाय दांसरे । छोड हमारी केड । करमा पच थूथायरे सरे । मत कर इणरी छेड । म्हा जीवंता नही मीलस । ज्यू प्रवत आइ तेड हो । मे० ९ । दयावंत तू नाम धरावे । करमेंल्या प्रपंच । मंस परायो थामता सरे । खरच न लागे अंस । करुणा कर साचो तुज जाणुं । देनी थारो मंसजी । मे० १० । भली बीचारी मोलीयोसरे । मुज हीतकारी बोल । ल्याओ कटारी पाळणो सरे देउं मंस मुज छोल । हस कर हंसक बोल्नीयो सरे । लेउं बराबर तोलजी । मे. ११ । ल्यावो त्राजूताकडी सरे । पंखीधर दो मांय । काट २ ने मांस आपरो तकडयो दीयो भराय । नमी न डांडी दोलतां सरे । पंखी नीचो जाएजी । मे० १२ । देय हमारी धर दूसारी और नही मुज जोर । स्हर लोक सब भेला हुइने । करबा लाग्या सोर । देध कान काड बो सरे । ए ठग बाजी चोर हो । मे. १३ । अंतेवर त्रिल त्रिल करे सरे । रोवे दासी दास । आयो कठासु पापीयोसरे । करे हमारो नास । सबा लोक सासे पडयास । अब किसी जीवणरो आसजी । मे. १४ । त्रिध त्रिध कीनी पारखा सरे । चलीया नही लीगार । देव रुप प्रगट थया सरे । सुरजनो जलकार । हाथ जोड पाए पडयां सरे । धन तुम छो अवतारजी । मे० १५ । सुरपत प्रसंसा करीस । मे मानी नही लीगार । प्रकस्या करबा आपरीस । मैं दीनो दुख अगाद । सुणीया जेसा देखीयासरे । खमो खमो मुज अपराधजी । मे० १६ । देव गया दिवलोकमें सरे । करता जै जे कार । संगतथी सुधर्यां

गणासरे । हुवा ज्यो समगतधार । सक इंद्र आगे कह सरे । तुम साचा सीरदार हो । मे० १७ । काल करीने उपना सरे । सुवारथ सीध मझार । तेती सागर पूर्ण सुख पाया । तिरथंकर पद सार । हथणापुरमें संजम लेने । पूंथा मोक्ष मोजारजी । श्रीसंत प्रभूजी संत करी जे सरबे देसमें । मे० १८ । १६ स तेसठ भलो सरे । जेपुरमांए जडाव । फागण सुद पुनम प्रभाथे । सिध जोग गुरुवार । वे कर मुगत पद मागे दीजे तुम दीदार हो । मे० १६ ।

उपदेसी लीख्यते

देसी चेतन चेतोरे । चे० दसवेल जगतमें मुसकल मीलीयारे । दिल दीली सु चले सोदागर तन मंडलमें आयारे । मोल अमोल तोल नही । एसी चीजा ल्यायारे करो दलालीरे धर्म दलाली सुत्रमें चाली । जीनमत वालीरे । करो० आंकणी । १ । हितका हीरा प्रेमका पना । नेमनगीना झालीरे । मन निरमल । चित माणक मोती समग प्रवालीरे । क. २ । दान सील तप भाव खजाने । धर रोकडरी थेलीरे । मन मंजूसमें माल भरो । द्यो सूनकी तालीरे । क. ३ । ग्यान दुकान सडक पर कर जतनारी जालीरे । गुणकी गादी ततखका तकीया । सत सरापहवालीरे । क. ४ । मूनी महाराजा तपे तक्तपर दीपे रुप रसालीरे । ग्यान ध्यान- रुजगार चल्या । श्रावक लेवालीरे । क. ५ । जसकी जाजम । ग्यान गलीचो । प्रेमका पडदा रालीरे । साच सीपाइ । प्रभू नामकी हुंडयां चाली रे । ६ । क. । चले दुकान जैनकी जगमें । गयो अनंतो कालीरे । तीन लोकको आरत आवे । दुकान भरी नहीं

खालीरे । क. ७ । चोसठ साल जडाव जेपुरमें । दूजा चेत मझारीरे । विना दाम कोइ माल ले जावो । सतगुरु वोपारीरे । करो दलालीरे । क. ८ ।

अरजीकी ढाल लीख्यते

राम मेदारी छे। जी और सीखावे वोल थोकडा । महाराजा सुत्रकी वाणी । सामीजी सुत्र वांचोजी । सुणवानवछेदेरी आंकणी ।-१ । जी और वतावे अलीयां गलीयां । महाराजा मुगतकी सेरी । गुणवंता । २ । जीओ घटघाट विषम पंथ पटके । निजपर आतम वैरी । बुधवंता सुं० ३ । जी और वतावे वाग वगींचा । महाराजा मु० जसवंता. ४ । जी और वतावे स्हल सपाटा । महाराजा मुगतकी सेरी । तपसी जी० । और वतावे तीज तमासा । महाराजा मु. सामी० ६ । जी और वतावे भोग भवानी । महाराजा मु० जस. ७ । जी और भतावे स्हल म्हलकी म्हाराजा मु. । बुध० ८ । जी पूरव सकृत पुन्य करीने सेव मीली गुरु केरी । गुण० ६ । जी जागाथांरे सांकडी वायांरो लसकर भारी । म्हा० १० । जी चोसठ साल जेट जेपुरमें एहइ अरज हे मेरी । सामीजी सामाझाकोजी वायांमें तपस्यां गहरी । गुण. ११ । जी वे कर जोड जडाव कहत है । ग्यान देवो हेरी हेरी । तपसीजी हाथ मसोजी । वायांमें तपस्यां गहरी । बुध० १२ ।

देवीलालजीरा गुण लीख्यते

देसी । गहरो फूल्यो हो हजारो गैंदो वागमें हो । वलीयारी हो मुनीवरजी थारा ग्यानकीजी मनडो मोयो मारो देख छटा

वखाणकीजी । वाणी इमरत रस वरसावे । मुखडुकरमें जीम द्रसावे । सुण २ मन २ हुलसावे । व. । आंकणी । १ । संप्रदाय श्री हुकमचरीजी । श्री श्रीलाल पूज प्रतापी । आतम संजममें थिर थापी । कुमत कलेमतणी जड कापी । व. २ । देवी लालजी दीवाकर लोकमेंजी । ज्यारी सुरत सदासिव मोखमेंजी माणक । माणक ग्यान नगीना । वंधव दोनू मात सगीना । चुनीलाल जडयां जिम मीना । व. ३ । सामी सुमती अराधे । गुपती गोपवेजी । निरमल पंच महाव्रत पाले । दोषण अहार तणा सव टाले । जिन मारगने जोर उजाले । व० ४ । कोई स्वमत परमत धारणाजी । वहुविध आगम अरथ पिछाण । विधसे भिन २ करे वखाण । गाले पाखड्यांरा मान । व. ५ । ज्यारी जोग मुद्रा हद सोवणीजी थांरी सावली पूरत मनमोवणीजी । देख भवकजिन आणंद पावे । निरखत नैण तिरपत नहो थावे । सुरगुरु आप हरक गुण गावे । व. ६ । दीपे ससि जिम सीतल आत्माजी । नित ध्यान धरे प्रभातमाजी । गुण गंभीर दया निध धीरा । निज कुल मांय अमोलक हीरा । संत सरव प्यारा प्रभूजीरा । व. ७ । देखो वडीए पुन्याइ जेपुर स्हर कीजी । मीलीया मुनीवरजीरा व्रिंद । द्रसण मीठा मीश्री कंद । दिन २ वरते इदक आणंद । व० ८ । समत १६ सें चोसठ भलोजी । लाग्यां धर्मध्यानरा ठाठ । तपस्यां वायामें गेघाट जडाव जनम मरण धो काट । व. ६ ।

मुनीवरजीरा गुण लीख्यते

देसी । प्यारा लागो सुद्रमा स्वामी । मुनी गुण सतावीस धारी । नित ले नीरदोषण अहारी । छती रिध संपदा त्यागी

११ । प्यारा लागे संत सोभागी । आंकडी । सतरा भेदी सजम पाले । नीचो देख देहखपग ढाले । परमाण वचावण रागी । प्या० २ । तप तेज करीने दीपे । सामा आयां मीसा जीपे । सुरवीर वडा वेरागी । प्या० ३ । ज्यामें ग्यानादिक गुण भारी । तीरण तारण पर उपगारी । सुभ ध्यान धरे म्हाभागी । प्या० ४ । जडाव जेपुरमें गावे । सुण भविकजीवारे मन भावे । मैं तो मुगत रीजमें मागी । वाला० ५ ।

देवीलालजीरा गुण ली०

देसी । पनभी मूडे वोल । वडी पुन्याइ सिव सरवनी । वंछित कारज सरसेरे । म्हर करी मुनीवरजी पधारया दीली सद्र-सेरे । आज रंग वरसेरे आज रंग० । म्हारो वाणी सुण २ हीवडो हुलसेरे । आ० आंकणी । १ । पाट वीराजे घन जीम गाज । वाणी इमरत वरसेरे । स्वात बूंद जिम सारी पुरखदा । श्रवण फरसेरे । आ० २ । वाणी प्यारी न्यारी २ जिम दरपणमें दरसेरे । सुण २ श्रावक प्रश्न पूछे । वडी कदरसेरे । आ० ३ । तपस्यां भारी । वहु नर नारी । कर कर काया करसेरे । भव भव संचित करम खपावे । सिव रमणी वरसेरे । आ० ४ । जिन वाणी सुण सुर सुख पावे । भव जल पार उतरसेरे । जेपुरमांए जडाव कहे । जो मन वस करसेरे । आ० ५ ।

कक्का वतीसी ली०

दूहा । सोरठो । वे कर जोड जडाव ले सरणो जगनाथरो । करु वतीसी फेर । विगम व्याध दूरा हरो । १ । कक्का कांइ कर

चल्यो । लेसी कांइ लार । धंधामें धायो फीरे । जासी नरभव हार । १ । खखा खाली जात हे । बिगतामें दिन रात । बिन मुतलब बोलो मती । याद करो जगनाथ । २ । गगा चुप रहीजीए । दोष पराया देख । जोवो अपणी आत्मा । ओगण भऱ्या अनेक । ३ । घघा घर तेरो नही । तूं घरको नहीं होय । घर घर करता चल गया । राजा राणा जोए । ४ । ङङा रडके कांकरो । आंख डाढके बीच । कूबचन रडके कालजे । कूकर्म रडके नीच । ५ । चचा चतुराइ करे । साबत निभन कोय । छेडो लेतां सींदडी । मूइ कुत्ती जोय । ६ । छछा छाने राखसी । कितब अपणा कोए । माडे उगड जावसी । तसकर तुंबा जोए । ७ । जजा जुलम करो मती । दुरबल दुखीया देख । थिर नहीं समपत सायबी । बैरी होए अनेक । ८ । झझा झक मारो मती । गली गलीकमांए । लंपट बाजे लोकमें । इजत रहवे नांय । ९ । नना निजपर आत्मा । एक सरीकी जाण दुख किणने देणो नही । दया भाव दिल आण । १० । टटा टालो किजीए । नीच कुपात्र देख । मत छेडो पत जावसी । ओगण होय अनेक । ११ । ठठा ठग ठग खात हे । माल पराया आण । भारी पडसी आतमा । जम लेसी बिच ताण । १२ । डडा डायो होएने । कीनी काय सयाण । पूंजी खोइ पाछली । नवी न करी अयाण । १३ । ढढा ढिग बैठा नहीं । सत संगतमें जाय । धुकतो तोले बाणीयो । ए ओखाणो थाय । १४ । णणा नेण भुलायने । सब जग लीनो मोए । समपत वेस्यां सारखी । सुध बुध देवे खोय । १५ । तता तिरणो अपणे हाथ है । ज्यो सब राखे मन । सतगुरु साखीदार हे पावे सि-

सुख धन । १६ । थथा थावो उतावलो । खिण २ आउं जाय । करणो वे सो अबही करले । पाणी अद्बीच नाव । १७ । ददा दोरीनांकरे । देइ तप जप मांए । खाणे पीणे पहरणे । सारा पहली जाय । १८ । धधा धनके कारणे । भटके वेर कुवेर । मारे ठग न चोरटा । पटकं उंडी फेर २० । नना नोपत मरणकी वज रइ च्चारुं खुंट । घेरो लाग्यो कर्मको । किण विधि जासी छुंट । २१ । पपा पीडा पारकी । सुखी न जाणे कोय । वीते सोइ वेदहे । अरुवरु ल्यो जोय । २२ । फफा फाटा फुटरा । वादल वीणी अनार । तीनू फाटा अतबुरा । नेत्र कटक कुनार । २३ । बबा बणजा बावरो । ज्यांइ बधे कलेस । सैंणो बोले समज जने । देवे हित उपदेस । २४ । भभा भारी होत है । निस दिन आठुं कर्म । हलकी करले आतमा । ज्यो गखी चावे सर्म । २५ । ममा मुरजी राखीए । मातपिता बड भिरात । तीन विसेषे जाणीये । देवगुरु अपणो नाथ । २६ । यया जगमें देखलो । अपणो सगो न कोय । सुखमें सब कोसी रहे । दुखमें दूरा होय । २७ । ररा रेखा कर्मकी । उदे हुवा दुखदाय । राजा रंक फकीर औलीया । सबकुंदे भुगताय । २८ । लला लेखो मागसी । कर्म करेनी जाण । रोयाइ नही छुटसी । लेसी पल्लां ताण । २८ । वबा बडा न बाजीए । स्हरगी पथर चोट । तलसी अदविच तेलमें । फेर काडसी खोट । ३० । समा संका राखने । कीजे काम विचार । विन संका विगडयां गणा । कुसिष कुपात्र नार । ३१ । हाहा

छुटसी । जासी प्रभव छूव । ३२ । १६ सें अठावने । जेपुर कटले वास । कका वतिसी करी । दुतिय सावण मास । ३३ ।

देवी लालजीका गुण लीख्यते

देसी । मानव भव लादो राज लादो । भूल मत जाज्योजी गुरु माने । विसर म० मैं अरज कराछा थाने । भू. । आंकडी । १ । जी आठ पहर हिरदामें राखु । चित वसीयो चरणामें । जी० म्हर करी मुनीवरजी वेगा । दरसण दीज्यो माने । भु० २ । जी जिनमारगने जोर दीपायो । संपरयो संता में धर्म ध्यानका ठाठ कराया रंग रंग छे थाने । भु० ३ । जी हरक हीयामें जवइ होसी । आयां सुणस्यां थाने । तेइ सरज भलो उगसी । वाणी सुणस्यां काने । भु० ४ । जी दील दरीयो भरीयो तुम विरहे । खारो लागे माने । अंतराइ पूरवली आइ । दोस नहीं कोइ थाने । भु० ५ । जी संत सोभागी में निरभागी । याद करे कुण माने । जैपुरमांए जडाव अछता । दीया ओलंवा थाने । भु. ६ । जी खमो २ अपराध हमारा । माफी दीजे माने । खिम्या धर्म तुमारो स्वामी । धन धन सब संताने । भु. ७ ।

समाइकका बतीस दोषरी ढाल लीख्यते

राग । सुण चंदाजी श्री मंधीर परमातम पासे जावजो । ए देसी । सुणो श्रावकजी दोष बतीसुंइ टाल समाइक कीजीए । चित लायकजी समता रसरा प्याला रुच रुच पीजीए । आंकणी । १ । विना फैम घरसुं चाले । जीवादिकने नही नाले । अ इरज्यां में

टोटो घालेजी । १ । सु. विन पूंज्यां आसण बेठे । जीव जंत दब जाए हेठे । ए राजतणी काडे वैठे । सु. २ । मोडा आवे साज समे । इरयावइ नही पडिकमणे । यो पडिकमणो प्रमाद गमे । सु ३ । नाम समाएक पछकलइ । करण जोगरी खबर नहीं । या सामायक किण रीत भइ । सु. ४ विन कारण इत उत डोले । विन भाजन संका खोले । ए विन पुंजी धरती ढोले । सु. ५ । आरत रुद्र ध्यान धरे । धर्म सकल कुण याद करे । संसार समुद्र केम तिरे । सु. ६ । भणवो गुणवो नही सुवावे । वाता विगता लग जांवे । याने सीखंता शंका आवे । सु० ७ । विन समज भाषा बोले । सावज निरवद्य नही तोले । ए अंत्रमें कीचड ढोले । ए केसरमें गोबर गोले । सु. ८ । द्रव समाइक सुध नही । भाव समाइक मान लइ । या विन माता वेटी जाइ । या पिता विना पुत्री जाइ । सु. ९ । एक मोरथ नित सुध कीजे नरभवरो लावो लीजे । भला मुगतीरी साइ लीजे । भला दुर्गतरा ताला दीजे । सु० १० । जडावजी जेपुरमांइ । हित सिख्यांरी ढाल कही । थे समज लीज्यो वाइ भाइ । कोइ राग धेगरो काम नहीं । सु. ११

पालणो लीखंते

देसी । मारी रंगरली । नेणारी नींद किसनजी हरी । जनक सिधारथ । तिसलाजी मांए पालणो वंधाव गणो हरख उछाव । हीरालाल जडयांजी । चुनीलाल जडयो । प्रभुजीरो पालणो । अजब घडयो । आंकडी । १ । रतनारो पालणो न रेसम वाण ।

मांए पोढावे प्रभु जीन आग। हरा. २। सोनारा स'वटा ने मोत्यांरी लूम। किलक २ जाणे तोड लेउ भुम। ही० ३। पन्नारी पनडी न पाटूरी डोर। रीमजिम २ नाच ग्या मोर। ही. ४। देदे हीडोल्या भुलावछलाल। गाव हालरीयान होय रया ख्याल। ही० ५। धन २ तु' तिसलादेजी मात। गोद् खीलाया त्रीभूवन नाथ। ही० ६। जेपुरमांए जडाव कहे। दिन उगे प्रभुजीरा चर्ण ग्रिह। ही ० ७।

मुनीराजना गुण लीखंते

दोहा। पंच पद् प्रणमी करी। गोतमजी गुणवंत। गुण करवा मुनीराजना। सो मन इदकी खंत। १। देसी। हांरे मारी धर्म जीणंद स'लागी पूरण प्रीत जोए। जाउ'रे हु' जेने घर आसा करीरे लोए। हांरे इण म. मंडलमें पूज श्री रतनेसर ज' कुवारे प्रतापी। सुत्र केवलोरेलो। हाज' ज्यांरो नाम सराो नहीं देख्यां नेण। निहालजो म्हम.रे सुण। हरके रुप्रावल.रेलो। १। हांरे ज्यारे पाट बीराजे पूज श्र ीनिवंदजी। सातल: साताग' चन्ण ाननरे लो। हाजो ज्यारी म्हर नीजरसु' मीलोय मुन त्रिंद्जी। द्रसे-रे यो स्हर सदा रलीयावणोरे लो। २। हारे कांइ् धन दीहाडो। वडा हमारा भागजो। तीन्ूरे संप्रदा समागम एखटोरेलो। हारे एकलेण बीराजे पाट। पुरखदा ठाठजो। समतरे सुत्र वेला लाग्यो चोसटोरे लो। ३। हारे कांइ् सास्त्रधारा वरसे इमरत नीरजो। पीतांरे त्रिपत नहीं होवे आतमारे लो। हांरे निज श्रवण सुणतां प्रगटे प्रेम वैरागजो। समकितरे नीरमल। प्रखे प्रमातमा रे लो।

४ । हारे कइ दीपरइ जीम केसी गोतम जोडजो । रवि ससिरे भानु एकण मंडलरेलो । हारे कांइ च्यारु तीरथ बैठ सनमुख आए जो । देखीरे पाखंडी दूरांथी टलेरे लो । ५ । हारे सुणी समोसरणकी चरचा बोत बयानजो । तोपिणरे दीसे थोडीसी वानगी रे लो । हारे कांइ तन मन हुलसे । देख गुनी दीदारजो । बीगसरे अंग कथा सुणी गरु ग्यान की रेलो । ६ । हारे कांइ जीमी पुरखुदा । उठ सके नहीं कोएजो । आसारे लगरइ जिम चात्रीक म्हेनी रे लो । हांरे कांइ नंदी सूत्रमें सुरता चन्दा भेदजो । चुंगा जीम चूपे रस बाणी जेइनीर लो । ७ । हांरे कांइ सरल सभावा । दीसे व्होत मुलामजो । गज गतिरे बाघामें बाए । फरु कीयोरे लो । हांरे मुनी ग्यान गुफामें करता बोहत उधाजजो । जाणेरे सादूलो सिंघ धडूकीयोरे लो । ८ । हारे ज्यारी कंठकलासु पीयार ग्यान भंडारजो । वाणीरे सुहाणी कीरज्युंरे लो । हांरे कांइ परमधीर गंभीर गुणारी खानजो । निरमल नीरागी गंगा नीरज्युंरे लो । हाजी थांरो तप जप संजम अखे रहो आचार जो । दीपावो जिन धर्म कर्मसुं जीतनेरे लो । हांरे मैं तो अभिमानी अग्यानी निज कुपात्र जो । जिम तिम जी तारीजे मो अवनीतने रे लो । १० । हाजी मैंतो कम लग गाउं । गुण अनंत अपारजो । सुगरुरे पोते जो पार न पामीए रेलो । हाजी मैंतो अलप बुधी । अजाण मान मद छोडजो । लूल २ रे कर जोड चरण शिर नामीए रे लो । ११ । हांरे कइ जैन धर्मरी सदा अखंडत जोत जो । रहजोरे सुख साता च्यांरु सींघमेंरे लो । हांजी कांइ जैपुरमांए

मांए पोढावे प्रभु जीन आण । हरा. २ । सोनारा स'वटा ने मोत्यांरी लूम । किलक २ जावे तोड लेउ झुम । ही० ३ । पन्नारी पनडी न पाटूरी डोर । रीमजिम २ नाच रया मोर । ही. ४ । देदे हीडोल्या झुलावछलाल । गाव हालरीयान होय रया ख्याल । ही० ५ । धन २ तु' तिसलादेजी मात । गोद खीलाया त्रीभूवन नाथ । ही० ६ । जेपुरमांए जडाव कहे । दिन उगे प्रभुजीरा चर्ण ग्रिह । ही ० ७ ।

मुनीराजना गुण लीखंते

दोहा । पंच पद प्रणमी करी । गोतमजी गुणवंत । गुण करवा मुनीराजना । मो मन इदकी खंत । १ । देसी । हांरे मारी धर्म जीणंद स'लागी पूरण प्रीत जोए । जाउ'रे हु' जेने वर आसा करीरे लोए । हांरे इण म. मंडलमें पूज श्री रतनेसजः हुवारे प्रतापी । सुत्र केवलोरेलो । हाज' ज्यांरो नाम सणयो नहीं देख्यां नेण । निहालजो म्हम.रे सण । । हरके रुआवल.रेलो । १ । हांरे ज्यारे पाट वीराजे पूज श्र .नेचंदजो । सातल : साभाग चन्ण ावनरे लो । हाजो ज्यारी म्हर नोजरसु' मालाय मुन ' वृंदजो । दरसे-रे यो म्हर सदा रलीयावणोरे लो । २ । हारे कांइ धन दीहाडो । वडा हमारा भागजो । तीनूइरे संपदा समागम एखटोरेलो । हारे एकलेण वीराजे पाट । पुरखदा ठाठजो । समतरे सुव वेला लाग्यो चोसटोरे लो । ३ । हारे कांइ सास्त्रधारा वरसे इमरत नोरजो ।

४ । हारे कइ दीपरइ जीम केसी गोतम जोडजो । रवि ससिरे भानु एकण मंडलरेलो । हारे कांइ च्यारु तीरथ बैठ सनमुख आए जो । देखीरे पाखंडी दूरांथी टलेरे लो । ५ । हांरे सुणी समोसरणकी चरचा बोत बयानजो । तोपिणरे दीसे थोडीसी बानगी रे लो । हारे कांइ तन मन हुलसे । देख मुनी दीदारजो । बीगसरे अंग कथा सुणी गरु ग्यानकी रेलो । ६ । हारे कांइ जीमी पुरखुदा । उठ सके नहीं कोएजो । आसारे लगरइ जिम चात्रीक म्हेनी रे लो । हांरे कांइ नंदी सूत्रमें सुरता चनदा भेदजो । चुंगा जीम चूपे रस बाणी जेइनीर लो । ७ । हांरे कांइ सरल सभावा । दीसे ब्होत मुलामजो । गज गतिरे बाग्रामें बाए । फरु कीयोरे लो । हांरे मुनी ग्यान गुफामें करता बोहत उधाजजो । जाणेरे सादूलो सिंघ धडूकीयोरे लो । ८ । हारे ज्यारी कंठकलासु पीयार ग्यान भंडारजो । बाणीरे सुहाणी कीरज्युंरे लो । हांरे कांइ परमधीर गंभीर गुणारी खानजो । निरमल नीरागी गंगा नीरज्युंरे लो । हाजी थांरो तप जप संजम अखे रहो आचार जो । दीपावो जिन धर्म कर्मसुं जीतनेरे लो । हांरे मैं तो अभिमानी अग्यानी निज कुपात्र जो । जिम तिम जी तारीजे मो अवनीतने रे लो । १० । हाजी मेंतो कब लग गाउं । गुण अनंत अपारजो । सुगरुरे पोते जो पार न पामीए रेलो । हाजी मैंतो अलप बुधी । अजाण मान मद छोडजो । लूल २ रे कर जोड चरण शिर नामीए रे लो । ११ । हांरे कइ जैन धर्मरी सदा अखंडत जोत जो । रहजोरे सुख साता च्यांरु सींघमेंरे लो । हांजी कांइ जैपुरमांए

जडाव गुंथी गुण मालजो। पहरोजी बुधवंता सोभ अंगमैरलो।
। १२। कलसः प्रसाध श्री गुरुदेवजीको। गुणवंतारी दासए।
म्हर कर मुज मुरख उपर। दीजै मुगत निवासए। १।

मुनीराजना गुण लीख्यते

राग पीचकारीनो छे। सुमत सीख हिरदामैं मेली। कुमत कुपात्र दुरी ठेली हो। माराजा थांरी कीरतडी गरणाइहो देसा छाइ वो० आकडीः। १। कीरतडी थांरी च्यांरु दीस फैली। कोड जुगां जुग रहलीहो। मा. २। ज्ञान गुपत थांरो ग्यान अपुरव। सीप सुडारुनीभेलीहो। मा. ३। आतम साधै। प्रवचन अराधः छोड दीयो प्रमादे हो। मा. ४। संजम पालो सव दोषण टारो। जिन मारग उजवारो हो। मा. ५। ६४ सालनै भरथोरै भाद्रवो। हरक २ गुल गावै होः। मा. ६। वे कर जोड जडाव जेपुरमें। चरणा सीस नमावै हो। मा. ७।

सज्झाय लीख्यते

देसी। जीव रे तुं सील तणो कर संगः जीव रे तुं मत कर आरत ध्यान। विन भुगत्यां नहीं छूट सीरे ए निश्चे कर जाण। आं. जी. १। वांधै सोइ भोगवैरे। कर्म सुभासुभ दोए। सुख दुख रेखा आपणीरे। टाली टल्ह न कोए। जी. २। हस २ कर्मज संचियारे। पर भव जाए वलाए। अव तुं आयो सांकडैरे। नास कठी न जाएजी। ३। पोपी अपणी आतमारे। प्राण पराया लूंट वदलो लेसी चोगणोरे। किण विद जासी छूट। ४। कर्म करै तु

एकलोरे। सवही नर सुवाए। सुखमें सवको सीरछैं। दुखमें दुरा जाय: जी. ५। निग्ल जाण निकारणरै। लूटया छ कायारा प्राण। सव लपणे संतावसीरे। करसी खाचाताण। जी. ६। रोयाइ छोड़े नहीरे। कर्म कलेसी जाण। काण न राख केहनीरे। लेसी पलला ताण। जी.। ७। वेरकदे आछो नहीरे। उदह हुवा दुख-दाय। कएक जाणे केवलीरे। कोइए न आडो थाए। जी. ८। जेपुरमांए जडावजीरे। छासठ वद वैसाख। इम समजाव जीवनेरे। निज आतमरी साख। जीव० ९।

बीनती लीख्यते

देसी। वेग पधारो म्हलथी। वेग पधारो हो म्हा मुनी। दीजे द्रस दयाल। तारक विरद वीच्चारने। वेगी करजो संभाल। वे० आंकणी। १। गाज अवाज हुवा थका। हरक दादर मोर। इंद्रके भाव नहीं। युंइ मचायो सोर। वे० २। कीनो अवीनय असातना। हे छ कायारा नाथ। पखीए चोमासी ने छमछरी। खमाउं जोडी हाथ। वे. ३। मुरख जाण माफी करो। अवस पधारो आप। वालक दुखदाइ हुवे। पटक नही मा वाप। वे. ३। वडा वीचार वडो करे। देखे नहीं परदोप। अवगुण सव अलगा करे। उपजावे संतोप। वं० ४। आवणरी आसा घणी। पेर

करे। उपजावे संतोप। वं० ४। आवणरी आसा घणी। पेर

चले नही लेर। पर उपगारी आप छो। फरसो जेपुर स्हर। वे० ५। थोडा में गणी वीनती। मानो चत्रु सुजाण। जेपुरमांए जडावने दीजो दरसण आण। वे. ७।

चनणमलजी म्हाराजाना गुण लीख्यते

देसी प्यारा लागो सुद्रमा सामी । मुनी श्रीचरत जेपुर आया । सारा संतनकुं संग लाया । कर जोडी पड नित पाया । अब आणंदरंग वरसाया । आंरत । भव जीवांरे मन भाया । आं० १ । म्हाने त्रस २ त्रसाया । इतना मोडा द्रस दीराया । देखी रोम रोम हरखाया । आ० २ सेवग न कइए बिसारो । ऐसो बिरध नही छे तुमारो । प्रतिपालक नाम धराया । आ० ३ । कीरपा कर वाणी सुणावो भव २ की तपत मीटावो । नरनारी व्होत उमाया । आ० ४ । जडाव जेपुरके मांइ । दरसणकी दोलत पाइ । छासठ साल हरख गुण गाया । आ० ५ ।

पार्सनाथजको स्तवन लीं०

देसी पनजी मुडे बोल । भामा सुत पत राख हमारी । हुं छुं सेवक थारोरे । भव दुख भंजन । नाथ निरंजन । ब्रीद बीचारोरे । १ । पार्स प्यारोरे पा० एक पलक न विसरु नाम तिहारोरे । पा० । आंकणी । तुं मुज मात तात बड भिराता तुं मायव सिरदारोरे । तूं प्रमेस सुण अलवेसर । द्रद्र हमारोरे । पा. २ । काटो कर्म भर्मकी बेडी । जीम हुवे छुटकवारोरे । लीनो सरणा चरणको प्रभुजी पार उतारोरे । पा० ३ । आठ पहर हिरदामें राखुं ध्यान एक प्रभु तोरोरे । तोइ न रीजे भीजे प्रभु । तुं निपट कठोरोरे पा. ४ कामण गारो । जगतसुं न्यारो । मनहर लीनो

पतली छाछ खमे नही पाणी । रह न सके मन मारोरे । जीणथी उंच नीच केइ बोल । आ संगायत थारोरे । पा० ६ । चाकर बिन कुंण करे चाकरी । बिन चाकर पत केरोरें । इम जाणी मोए हाज राखो । कर काम भलेरोरे । पा० ७ । गरु मुख नाम सुण्यो प्रभु तेरो । अब कीजे दीदारोरे । म्हर करी मुज सामी सायब । निजर गुदारोरे । पा. ८ । सुध पख सावण पहलो प्रभुजी । जेपुरस्हर मजारोरे । छासठ साल जडाव करे नित । भजन तुमारोरे पा० ९ ।

जीवाजीरी ढाल ली०

देसी । मैं काजल रोषण लीयो । हांरे जीवा दीन गमायो खायन । तूं तो रात गमाइ सोएरे । जनम प्रमादे हारीओ । तुंतो बेठो कलंदर होएरे । चेत सके तो चेत जा । थारो चीडीया चुगइ खेत रे । चेत तोने सतगुरु हेला देतरे । चे० । आंकणी । थारो कुटम बण्यो सब स्वारथी । थारो पुन खजानो खातरे । रीतो कर छिटकावसी । थारी कोए न पूछे बातरे । चे० २ । हांरे थाने जोग मील्योरे दस बोलरो तुंतो पुद्‌गल भर्म मीटाएरे । दुलभ नर भव पामीयो । थारे पडीयो पासे डाबरे । चे० ३ । आतो पाच पची दोइ मीली । तीजा मीलीया छे पाप अठाररे । दगो करी धन लुंटसी । थारी कूण चढला बाहररे । चे. ४ । तुंतो बीस कषाए करपातली । तुंतो भावना मन सुध भाएरे । समगत सुध अराध ले । थारो जनम मरण मीट जाएरे । चे० ५ हांरे जीवा मोए निद्रामांए पडो । थारे सतगुरु चोकीदाररे । हेला देए जगा-

वीयो । तूं तो अबइ चेत गीवाररे । चे. ६ । हारे तोने धर्म चिंतामण पामीयो फलीयो कलप विरछ चिता बेलरे । ग्यान दीयो घटमें कीयो । याती तेल जीतैइ खेलरे । चे. ७ । थारे सरधा सुध परुपणा । यातो किरीयामांए कसुर । तोनूइ सुध अराध ले । थारे सिव सुख नही छे दूररे । चे० ८ । ओगणीस बरस छासटे । बद पख सावणमांएरे । जेपुरमांए जडावजी । इस आतमने समजाएरे । चे० ६ ।

सुमति कुमतिको चोढाल्यो लीख्यते

दोहा । देव नमु अरिहंतने । सिध सकल भगवंत । आचारज उवभायने । प्रणमूं संत म्हंत । १ । सुमत कुमत दो अस्त्री । प्रीतम चेतनराय । मांहो माइ जगडती । समकित साख भराय । २ । राग । कोयल बीलीजी हजारी ढोला बागमें । घर आवोजी बाइजीरा म्हलमें । ए देसी । सुमती घटमें आवे । या भात २ प्रचाव । पिण मूलदाए नही आवे जीवन । समाजवोजी मारा चेतनराजा जीवने घर लावोजी मनमोवन स्वामी जी. । आंकणी । १ । कुमत सीख नही लागे । यो उठ २ ने भागो । या कुगती प्यारी लागेजी । सम. २ । आठ पहर रंग भीनो । ना जाणुं कांइ कीनो । या भव २ में दुख दीनोजी. । स. ३ । छाने २ आवे । या चेतनने भरमावे । आ नरगनीगोद रुलावेजी. । स. ४ । पुन खजानो खाती । या पुदगल कर सराती । आ उलटी चाल चलाती जी० ॥ सम० ५ ॥ या ले कामणगारी ॥ केइ ठगीया नर संसारी ॥ सीखावण दे दे हारी जी० ॥ सम० ६ ॥ धोको दे बिल

मावे ॥ मो मदका प्याला पावे ॥ आ वंदर जेम नचावेजी० ॥ स० ७ ॥ कुमत लपेटा लेती ।मुगतीसु' घाले छेती ॥में देउ सीखावण केतीजी० ॥ सम० ८ ॥ कुमत कपटनी कुंडी ॥ या पटके दुरगत उंडी॥आ अकल सीखावे भूंडीजी० ॥सस०६॥ जडाव जेपुरमें गावे ॥निज चेतनने समभावे ॥जीत आतमराम रमावे जी० ॥स० १०॥

दोहा ॥ तकड भडक कुमती कहे ॥ करने आख्यां लाल ॥या कुंण आइ पापणी ॥ तूं वेठो घर में घाल ॥ १ ॥ चाछ मागती आयने ॥ बण वेठी पटनार॥ नीकल मारा घर थकी ॥ नहीतर करुं खुवार ॥ २ ॥ परणी पिउडो ल्यावीयो ॥ पांच पंचारी साख ॥ जाणुं किरतवथाएरा ॥ किम वोले उचे नाक ॥ ३ ॥ मुख मीठी हिरद कठण ॥ नही थारी प्रतीत॥ वाप भाइ छोड नहि ॥फिर २ हुइ फजीत ॥ ४ ॥ चेतन कह सुमती सुणो ॥ कांइ सीखाउ तोए ॥ मत छेडो पत जावसी ॥ खमे सोभा होए ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

घोडी तो आइ थारा देसमें म्हाराजा ॥ए देसी॥ आइछुं अरज करवा जाणी ॥चेतनजी॥ आप छो चतुर सुजाण हो ॥ गुणवंता ॥ एमो काम न कीजीए मारज ॥ लोक हांसी वर हाण हो ॥बुध० ॥ कुमत संग छोड द्यो चेतनजी ॥ आंकणी ॥ १ ॥ परणी घरणी छोडने ॥ चे० कुमतसु कर रया केलहो ॥ गु० ॥ चित चोरी मन खेंचीयो ॥ म्हा० इणसु रया मन मेलहो ॥ वु० ॥ कु० ॥ २ ॥ या सुंघी घुल पुरसीयो॥म्हा मैं सुं पुरस्यो तेल हो वु० दोस न दीजे ओरने ॥ पीत० पराएल वदरो खेल हो ॥ मत०॥कुं० ३॥

कुमतीरा भरमावीया ॥ चे० क्यूं छिटकाइ मोएहो ॥ चो० विन अवगण पीया परहरी ॥ चे० भलाहनकेसीलोए हो ॥ गु० ॥ कु० ४ ॥ जोड जनमी आपरे ॥ चे० तेतो व्हन कहाए हो ॥ गु० परीए परणावो एहने ॥ चे० आगी सासरे जाए हो ॥ म० ॥ कुं० ५ । फिर परणाउं दूसरी । म्हा० समकित छोटी वेन हो । गु० । हिलमील रहस्यां दोए जणी । चे० आप उडावो चेन हो । गु० । कु० । ६ । कुमतीरी संगत छोड द्यो । पी० आवो हमारे म्हल हो । गु० सरगमें संका नही । चे० करो मुगतकी स्हल । । गु० कु० ७ । ज्यो थारा घरमें पदमणी । पी० तो किम परण्यां मोएहो । गु० वीना वीच्यारा जे करे । चे० लोग हसाइ होएहो । बु० । कु० ८ । जडाव कहे जग जे वडा । पी० माने सुगुरुनी सीख हो । गु० त्रीयामें तीरसी घणा । चे० करसी मुगत नजीक हो । बु० । कु० ६ ।

दोहा । म्हो राजानी दीकरी । कुमती एनो नाम । आद थकी लारे पडी । छोडां होऐ कु नाम ।१। वाप भाइने भाणजा । काका वांवा पूंठ । ज्योवा जाए पुकारसी । तो लेसी खजानो लूंठ ।२। मती सटावो नाथजी । तुम घर रहो निसंक । धरमराएसो कोपसी तो काडे इणरी बंक । ३ ।

ढाल तीजी.

देसी । सीख सुध मानोरे सतगुरुकी । वीलख वदन कुमती कहे हो । चेतनजी । मारा भव भवरा भरतार । सार अव कीजे हो । पीतमजी ।१। पहली लाड लडावीया हो । पी० अवकुं तोडो

तार । समझ सख दीजे हो । चे० । २ । कये हमारे चालता हो । चे० थे कदीय न लोपीकार । लार ले चालो हो । पी० । ३ । प्यारी लगती आपने हो । चे० कइए सुमतीरा काम । नाम नही लेवो हो । पी० ४ । मीठी भोजन जीमता हे । चे० थे करता सतग सांग । माग मत खावो हो । पी० । ५ । लुंग सुपारी एलची हो । चे० थारा दरपण रखती हाथ । साथ नहीं छोड़ हो । पी० । ६ । रंग म्हलामें पोडता हो । चे० थे करता मनरी जोख । सोक क्यु लाया हो पी० । ७ । चोपड पासा खेलता हो । चे० में जाती तुमसु जीत । प्रीत नही छोड़ हो । पी० । ८ । वेठ जरोखे जाखता हो । चे० मैं रहती सदा हजूर । दुर नही जाउ हो । पी० ९ । गायक था सो उठ गया हो । कुमतीजी । खाली पडी दुकान । बिरथा मतकूको हो । कुं० । १० । इतना दीन जाणी नही हो । कु० थू बेनड में शीर । सीर थांरो चूको हो । कुं० । ११ । गुरु सुख जाण जडावजी हो । चे० आ करसी रंग वीरंग । संग मत कीजे हो । चे० १२ । सुमत सुपात्र असरी हो० । चे० राखो जिणसु रंग । ग्यान रस पीझे हो । पी० १३ ।

॥ ढाल चोथी. ॥

देसी । गोपीचंद लडका ले ले फकीरी तज दे राजन । कर कुसीयारी चेतन भारी । कीयो सील सीणगारी । कर केसरीया उरदोया जब । कुमती जाए पुकारीजी । सुण बाप हमारा । सुमती भरमायो प्रीतम माएरो । डर नही राख्यो कोइ थाएरो ।

सुण पीता हमारा सु० । आं० १ । मो मछराल दुष्ट इम बोले । करने आख्या राती । देख हवाल करुं चेतनमें । धुजावे किम छातीजी । सुण सुता हमारी मान मोड़ ए चेतन रायरो । सुण पुत्री हमारी गरब गालु ए चे० ।२। सात कर्मसु सला वीच्यारी । राखीज्यो हुसीयारी । देखो अब तुम हाथ हमारा । केसे करां खुवारीजी । सुण भिरात हमारा मान मो० ३ । क्रोध मानका दीया मोरचा । त्रिसना तो पथराइ । पाप अठारा दारु गोला तोपा दीवी भराइजी । सुण० ४ । राग धेग सिन्यांका नायक । लोब मुसाय पत्तारी । कपट उकील तुरत भीजवायो । करो वात सब जारीजी । सुण० ५ । पुत्री हमारी केम वीसारी । दुजी परण्यां नारी । सनमुख आवो । चूक बतावो । देवो सबूती सारजी । सुण चेतनराजा पुत्री प्यारीरे मारा जीवसे । ६ । कुसी हमारी परण्यां नारी । करस्युं मनको जाण्यो । हुस हुवे तो चडकर आवो । चुकूला नहीं टाणोजी । सुण दुत भुतडा जाजे सुदोरे कहीजे स्वामने । ७ । ज्ञानका घोडा वोडा चीतकी चाबक । वीनय लगाम लगाइ । तप तरवार भावका भाला । खिम्या ढाल बंधाइजी । सुण नाथ हमारा हुइरे चडाइ चेतन रायरी । ८ । सत संजमका दीया मोरचा । कीरीया तोप चडाइ । सभ्झाय पंचका दारु सीसा । तोपा दी वीचलाइजी । सुण० ९ । राम नामका रथ सीणगारयां । दान दीयाकी फोजा । हरख भावसे हाथी होदे । वेठा पावो मोजाजी सुण० १० । साच सीपाइ पायक पाला । संवरकी रखवाला धर्मराय का हुकम हुवा जब । फोजा आगी चालीजी । सु० ना०

धर्मराए तो आग वाणी । पाछे चेतन राजा । म्होराएकी फोज हटाइ । वाजे जसका बाजाजी । सु० ना० १२ । कायर था सो कंपण लागा । सेठा सुरा धीरा । कुमती कुमलाणी इम बोले । मरयां वाप ने वीराजी । सुण नाथ हमारा । आस टूटी नीसासा नाखती । १३ । तीरथ चारु तीर चलाया । सणण २ सणणाता । मर्यो मादलीयो । गोठ वीखरी बरताइ सुखसाताजी । सुण नाथ हमारा जीत हुइरे चेतन राएनी । १४ । पहला हणीयो म्हो म्हीपतने। पछे सातु भाइ । धीरप दीनी धरमरायजी । फेरी सरव दुवाइनजी । सुणना. । १५ । करम हणीने केवल पाया । मुगत गया ततकाल । जडाव कहे सुमती चेत नर । बरत्यां मंगल मालजी । थें सुणो भव जीवां । सुमती आराधो गुपती गोपवो । १६ ।

। कलस सुमत कुमत नही वाद कीनो । नही खीजाव्यो पीवए । असत कलपना सवंध जोडी । समजायो नीज जीवए । । स० । १ । छासटसाल । चोढाल जोडी । जेपुर स्हर मजारए ।दुतीए सावण सुध पखनी । तेरसने रवीवारए । ते. २ । अकसर पदकाइ ढाल गाथा । वीना वीचारो कोएये । आयो वे तो तियरण जोगे । मीछयां दुकडं मोएये । मी. ३ ।

॥ राखीको स्तवन लीख्यते. ॥

देसी । गोपीचदरा ख्यालरी छे । समगत साची वेन भाणजी । केवल लोड्यो वीर । तीज राखडी आंवसी । मारे ल्यासी लज्यां चीर । सतका सातु वाटसु । जीमाउं खाजा खीररे । मारा केवल वीरा हस २ वांदू थारे राखडी । णांकणी । १ । रख्यांकी

राखी करु सरे। तपस्यांका नारेल। समताकी सुपारी मेलु'। लूग एलची फेर। चु'प करीने चोपडो सधर ल्याउ न करु' देररे। मारा के० २॥ एसी संजोउ आरतीसरे। करु' सील सिणगार। पहर ओडने पीयर जाउ'। केवल वीरो लार नेम धरमकी नावतीराउ' बेठ उतर जाउ' पार रे। मारी समगत वाइ चाल मीलाउ' मुत्ती माएसे। ३। धीरजकी धरती करुसरे। चारीत चित्रसाल। दया दलीचो गुणकी गादी जेणा जाजम ढाल। मंगल घाउ' वीर बदाउ'। भर २ मोत्यां थालरे। मारा के० नीत नीत आवो मारे धारणे। ४। समज सार सेवा बटूसरे। वीया वीवेक वीच्यार। समरसीरो लापसी सरे। ग्यान घीरत गुणकार। आट करमको करु चूरमो। मइमा मग दस बाररे। मा० ५। खीम्यांरी करु खीचडी सरे। संजम चावल दाल। गुपतिका गूंजा भरु'स रे। करणी करु कसार। जीमें मारा भाइ भतीजा। सुमती को परवाररे। मारा. ६। एसा वांदो राखी फुदा। तीलक चडावो सीस। पांच ग्यानकी मोर असरफी। वेनड दे आसीस। दान सील तप भावानास। कोइ पूरो मन जागीसरे। मारा. ७। बेन भायांरी अविचल जोडी। कदीय न होए वीजोग। मीली २ ने वीछडे सरे। ए करमारो रोग। अविचल थान मुगतपद पावो। कदीय न करणो सोगरे। मारा. ८। ओगणीसें वरस छासठ सरे। जेपुरमें वरसाल। दूजे सावण सुद पख पुनम। करी संपूरण ढाल। जडाव कहे ए भाव राखडी। करता मंगल मालरे। मारा. ९।

॥ च्यार सरणा लीख्यते ॥

ढाल इंद्रभुतीजीरो लीजे नाम । पहला मंगल अरिहंत देव । चोसठ इंद्र सारे सेव । भलो दीखायो मुगती पथ । सरण तुमारो अरिहंत । १ । चोतरीस अतसें पांत्रीस वाण । सदा सासतो केवल नाण । घाती कर मारो कीधो अंत । सरण. २ । राज तजी म्हा वरत लीया । दोष अठारा दूरा कीया । वारे दीपे भगवंत । सरण ० ३ । समोसरणकी रचना भली । देखणकी आवे मन रली । दस लख केवली सो कोडी संत । सर. ३ । जगन तीरथंकर वीस कया । उतकस्टा सब राखो मया । सेवगने तारो धर खंत । सर । ५ । मंगल दूजो । चाल मगद देसजरे । राजगीरी नगरी भली । दूजे मंगल रे । सिध अस्ट गुण गाजीया । अटल श्रो गुणारे । जोतमें जोत वीराजीया । केवल ग्यान जरे । लोका लोक प्रकासीया । लोकां लोक प्रकास कीनो । नही कोइ आवण जाणए । आठ करम खपाए सीधा । लेवो सरण सुजाण ए । ले. १ । तीजो मंगल । चाल आदए आद । आद जिणे सरु । ए चाल छे । तीजए तीजए साध म्हंततो । गूण सताइस दीपताए । साधए साध्र मुगतनो पंत । कठण परसा जीतताए । वीचर ए २ आरज देसके आप तीर परतारवाए । उलालो. वीचरे आरज देस मांइ । दीपावे जिज धर्मने । खिम्या जाप संतोष संजम । तोडे आट्ठं करमने । तोडे । विने अराधी ज्ञान लीजे । दीजे सुपात्र दान ए । एसा मुनीको सरण लेतां । पावे अविचल थान ए । पा. १ । चोथो मंगल । चाल दूजो मंगलरी छे । चोथो मंगलरे धरम

दयामें भाखीयो । भव जीवारे सेठो हीयामें राखीयो । अणु कंपारे समकित लकसण जाणीए । करुणा करते धर्मी पुरस पीछाणीए । लीजे पोखधरे कीजे खतम खामणा । च्यारु सरणारे पलक पलकमें लीजीए । अभए सुपात्ररे । सब प्राणीने दीजिए । उ. अभए सुपात्र दान मोटा । केवली भाख्यां दोएए । जेपुरमांए जडावकु । सरणा नित नित होए ए । स. १ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी गुजराती तागारी. । धन धन खेत्र वीदेह प्रभुजी जडइ बीराजे सायब श्री मींद्र हो राज म्हाराजा । जठ. थारे पुरखदारा ठाठ । प्र. नाटक नाच देव पुलंदरु हो राज । म्हा. १ । सीरपर वीरख आसोक प्र. फीटक सिंघासण पगतल छाजतो हो राज । म्हा. २ । बाणीरा धुकार । प्र. जाण भाद्रवो गहरो गाजतो राज म्हा. २ । सुण समज भव जीव । प्र. देखी पाखंडी दूरासु लाजता हो राज । म्हा. छोडी मूल मीथ्यात प्र. हाथ जोडीने सेवा साजता हो राज । म्हा. । ३ । दरसणरी अभीलाख । प्र. बाणी सुणवाने त्रसे जीवडो हो राज । म्हा. । हुं छुं अधम अनाथ । प्र. भाग बडाने मीलसी पीपडो हो राज । म्हा. ४ । नही जाणु तुम माग । प्र. सनन मुख आइने सेवा किम करुं हो राज । म्हा. मारग ओगट घाट प्र. नदीए पूराणी । पाणी किम तीरु हो राज । म्हा. ५ । वालम रया परदेस । प्र. सार सेवगनी वोलो कूण करे हो राज । म्हा. हाजरने दीया तार प्र. दूर रहेसो कोनी किम तीरे हो राज । म्हा ६ । इच्छा हमारी एम । प्र.

वांय पकडने ल्याउं माकने हो राज । म्हाराजा चर्ण झालीने रहु थां क्ने हो राज । म्हा. अवछंदो अवनीत । प्र. दुरबल दो-भागीरी लज्या आपने हो राज । महा० ७ । खमज्यो मुज अपराध । प्र० माफी करीने मानो वीनती हो राज । महा० नही मागू रुजगार प्र० सिव सुख दीजे ढील करो मती हो राज ! महा. । ८ । सडसट साल रसाल । प्र. समत १६ से जेपुर स्हरमें हो राज । महा. बे कर जोड जडाव । प्र. गाइ सावण सुद ठंडी लहरमें हो राज महा. । ६ ।

श्री मंधीरजीरो स्तवन ली०

। देसी खेत्र विदेह वीराजीयाजी कांइ श्री मिंद्र जिनराए । श्री भरत खेत्रमें में वस्याजी मासू आयो किण विद जाए । जी गुणवंता प्रभूजी । मा पर महर करीज्योजी राज । किरपा कर दर-सण दीजोजी राज । आंकणी । १ । च्यारु तीरथ आपरजी कइ । केइ नेडा केइ दूर ।जी कइ मानइ गीणतीमें गीणो तो राखो क्यूंनी हजूर । जी. २ । नेडा ज्यासूं नेह गणोजी । थांरे दूरा न आव दाय । दोस नही प्रभु आपरोजी । मारे पोतारी अंन्तरायजी ।३। गुणवंताने तारस्योजी । नही इदकाइरो काम । पापी पार उतारसो । थांरो रहसी जुगा जूग नाम । जी० ४ । आठ पहर हीरदामें राखु । भूलु नही खीण मात । दरसण किम देवो नही । या इचरज-वाली वात । जी० ५ । रोगादी खुदयां तिरखाजी कांइ । जनम मरणकी जोड । आरत रुद्र आवे नहीजी कोइ ऐसी वताओ

ठोर । जी. ६ । सडसट साल सूवा वणीजी । कहे जैपुरमांए जडाव । और कछू मागूं नहीजी । थारा दरसणरो गणो चावजी ।७।

उपदेशी लीख्यते

। देसी तूइ २ याय आवजी द्रद्मे० जोवोजो ज जगतका तनक तमासा । हे तन. जूठ सच आसा हे तन. सूपन के सारासा जोवो आं. १ । देहथ लेवो परण पदारो । दे. अद्वीच होऐ गया जंगल वासा । जो. २ । पूरे मासे पुत्र जाजायो पू. भूम पडंता नीकल गइ सासा हे भू. जो. २ । पाग्रडीए चडता गिर पडीयो । उड गया हंस पडी रही आसा । हे उड गया हंस धरी रही आसा । जो. ३ । जुगत करी जीमणने वेठो । भू. रह गया हाथका दाथमें गाग्रा हे० ४ । कायां माया बादल छावा । का. गले मीले जिम पाणी पतासा हेग. ५ । अंतकाल एक सरण धरमको अं. प्रभूजी समर ले सास उसासा हे प्र. ६ । जो. कह सडसट साल जडाव जेपुरमें । कहे. देख देह मोए आवत हासा दे दे. जोजो. ७ ।

पुज्यजी महाराजका गुण लीख्यते

देसी कूण जाणे पराया मनकी । मनकी तनकी लगनकीजी कुंण जाणे पूज थारा मनकी । आंकणी ! मैं अरज कराछा थाने अब दरसण दीजो मानेजी । कूण. ।१। थे ग्यान गेले होए आजो। थाका सीरव संग लाजोजी. कुण. २ । थाने चार वरस होय आया । माने त्रस २ त्रसायाजी कुण. ३ । कांइ आप बड़ा उपकारी

करणीमें कसर हमारीजी कुं. ४ कांइ तारक वीरद वीचारो. । मारा अवगुण मतीय चीतारोजी । कुं. ५ । मैं गुनेगार छा थारा थे भवजल तारणहाराजी कुण. ६ । मेंवाड मालवो प्यारो । जेपुर किम लागे खारोजी । कुण. ६ । थे सवी सरीखा राखो. म्हाने एक नीजर कर जाको जी. कुंण. ८ । थारा दरसणकी वलीहारी. थाने याद कर नरनारीजी । कुंण जाणे पुज था. ९ । जव जाणुं कीरपा थारी । पूरीजे आस हमारीजी । कुण. १० । जडाव जेंपुर के माइ । नित तरसें दरसण ताइजी । कुंण. ११ । इतिसंपूर्णः ।

। चोवीसी लीख्यते ।

दे प्रभात उठ श्री संत जीणंद का हरक २ गुण गाउं । रीखव अजित संभव अभिनंदण । सुमत पदम उर ध्याउं । सुपारसचंद सुवध सीतल जी । चरणा सीस नमाउं । प्र. १ । हंस वासजी । वीमल अणत जी । धर्म संत दील ध्याउं । कुंथ अरीमली मुनि-सोवर तजीकें । दरसण नित उठ चाउं । २ । नमी नेम पारस म्हावीरजीरी । सिरपर आंण धराउं । व्हरमान गुणधर गुणमाला । जपता पाप पुलाउं । प्र. ३ । भव समुद्र में भमती पाइ । धर्म जाज ठराउं । हाक दइ सतगरु उपगारी । आजा पार पोछाउं । प्र ४ । खूंचीं कर्म कीच में प्रभुजी । उजल कीध चीध थाउं । नी. जेपुर-माए जडाव कहत हे । तुम गुण सागर नाउं । प्र. ५ । इति.

—**—